सैंटर फॉर डिस्टैंस एंड आनलाईन ऐजुकेशन विभाग

पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला

कक्षा : बी.एड. भाग-1 **सैमेस्टर-2**

पत्र : XI और XII (हिन्दी शिक्षण) **एकांश संख्या : 1**

(Pedagogy of School Subject (Part-II)

माध्यम : हिन्दी

पाठ नं.

1.1 भाषायी कौशल बोलचाल कौशल – अर्थ, महत्व, उद्देश्य, क्रियाएँ

1.2 श्रवण (सुनने का) कौशल – अर्थ, महत्व, उद्देश्य, प्रविधियाँ

1.3 वाचन (पठन) कौशल – अर्थ, वाचन मन्दता के कारण व निवारण के उपाय

1.4 लेखन कौशल – अर्थ, लेखन प्रक्रिया, महत्व, सृजनात्मक लेखन की विधियाँ

1.5 गद्य शिक्षण : अभिप्राय, सोपान एवं विधियाँ पद्य या कविता शिक्षण : अभिप्राय, उद्देश्य, सोपान एवं विधियाँ

1.6 कहानी शिक्षण और रचना शिक्षण : अर्थ, उद्देश्य एवं विधियाँ

PAPER–IV&V: PEDAGOGY OF SCHOOL SUBJECT (PART-II)
(III) TEACHINGOF HINDI

SUBJECTCODE:EDUBED1204T **M.M. 50**
SUBJECT CODE : EDUBED1205T **External: 35**
Internal:15

(A) COURSE OUTCOMES

* विद्यार्थी–अध्यापक को हिन्दी भाषा के विकास प्रक्रिया के प्रति जागरूक करना।
* विद्यार्थी–अध्यापक को हिन्दी भाषा के उद्देश्यों और सिद्धांतों के बारे मे जागरूक करना।
* विद्यार्थी–अध्यापक को हिन्दी भाषा के अध्यापक की विधियों के बारे में जागरूक करना।

(B) Syllabus

Section-A

1. भाषा कौशल का विकास
   – पठन कौशल – अर्थ, महत्व, उद्देश्य व विकास की प्रविधियाँ
   – बोलने व सुनने का कौशल – अर्थ, महत्व, उद्देश्य व विकास की प्रविधियाँ
   – लेखन कौशल – अर्थ, लेखन प्रक्रिया का महत्व, सृजनात्मक लेखन की विधियाँ
2. शिक्षण के विभिन्न प्रकार – गद्य शिक्षण, पद्य शिक्षण, नाटक शिक्षण, कहानी शिक्षण, रचना शिक्षण, अर्थ, उद्देश्य एव विधियाँ

Section-B

1. व्याकरण शिक्षा – अर्थ, उद्देश्य, महत्व एवं विधियाँ
2. द्रश्य – श्राव्य साधन –अर्थ, महत्व, प्रकार व प्रयोग में सावधानियाँ
3. पाठ योजना – महत्व, रूपरेखा एवं प्रकार
4. पाठ्यक्रम एवं पाठ्य सामग्री का निर्माण एवं विशेषण
5. मूल्यांकन – भाषा विकास की प्रगति के मूल्यांकन के प्रकार, प्रश्नों का स्वरूप, अच्छे मूल्यांकन की विशेषताएँ।

(C) BOOKSRECOMMENDED

1. Kumar, Krishna. (2007).*The child's language and the Teacher*. New Delhi: National Book.
2. Mangal, U.(2010). *Teaching of Hindi*, New Delhi : Arya Book Depot.
3. National Curriculum Framework (2005), New Delhi : NCERT.
4. Safaya, Raghunath. *Methods of Teaching of Hindi.* Jalandhar : Punjab Book Depot.
5. Sinha, S.(2009). *Roseublatt's Theory of Reading.* Explaining Literature contemporary education dialogue. 6(2), PP223-237.
6. Sullivan, M. (2008). *Lessons for Guided writing* scholastic. National curriculum framework. (2005).
7. Billows, F. L. : *The Techniques of Language Teaching.*
8. Unesco : *Teaching of Modern Languages.*

(D) EVALUATION

External Examination	35Marks
Internal Assessment	15Marks
Attendance	3
Written Assignment/Project work/ Response Sheet	6
Two Mid-term Examinations/House Test	6

(E) INSTRUCTIONS FOR THE PAPER-SETTER

The question paper will consist of three Sections: A, B, and C. Section A and B will have two questions from the respective sections of the syllabus and will carry 12 marks each. Section C will consist of 5 questions of 2 marks each and one objective type question of one mark which will cover the entire syllabus uniformly.

(F) INSTRUCTIONS FOR THE CANDIDATES

Candidates are required to attempt one question each from the sections A and B and the entire section C.

पाठ नं. 1.1 **Converted into SLM : Dr. Sharmila**

भाषायी कौशल (क) बोलचाल कौशल – अर्थ, महत्व, उद्देश्य, क्रियाएँ

1.1.1 उद्देश्य
1.1.2 भूमिका
1.1.3 बोलचाल कौशल अथवा मौखिक कौशल
1.1.4 बोलचाल कौशल के उद्देश्य
1.1.5 बोलचाल कौशल का महत्व
1.1.6 मौखिक भाषा, बोलचाल की भाषा शिक्षण की क्रियाएँ
1.1.7 सारांश
1.1.8 स्वयं जांच अभ्यास
1.1.9 अभ्यासात्मक प्रश्न
1.1.10 सहायक पुस्तकें

1.1.1 उद्देश्य

इस अध्याय को पढ़ने के बाद विद्यार्थी –

1. बोलचाल कौशल को परिभाषित कर सकेंगे।
2. बोलचाल कौशल का महत्व बता पाएंगे।
3. बोलचाल भाषा की शिक्षण क्रियाओं के बारे में बता पाएंगे।

1.1.2 भूमिका

भाषायी कौशल व्यक्ति को भाषा द्वारा विचार, भावों तथा सूचनाओं को ग्रहण करने तथा अभिव्यक्त करने की क्षमता प्रदान करते हैं। भाषा सीखते समय बच्चा इन कौशलों का स्वाभाविक रूप तथा क्रम से अभ्यास करता है। भाषा कौशल अर्जित करना सहज नहीं है। इसके लिए प्रयास की आवश्यकता पड़ती है। भाषा कौशल भाषा का व्यावहारिक पक्ष है जिसे विकसित करने के लिए कुछ क्रियाओं के विशिष्ट समूह पर ध्यान दिया जाता है। इन क्रियाओं में प्रवीणता से भाषा कौशल का विकास होता है। जहाँ तक भाषा में शिक्षण का संबंध है भाषा में कुशलता प्राप्त करने के लिए अनुकरण एवं अभ्यास का

मार्ग अपनाया जाता है। भाषा शिक्षण में बालक पहले सुनता है, फिर उसे अनुकरण द्वारा बोलता है। फिर औपचारिक रूप से शिक्षा प्राप्त करते हुए वह पढ़ना लिखना सीखता है। बालक के लिए अभिव्यक्ति की सफलता उसकी भाषायी योग्यताओं के विकास पर निर्भर होती है। इन्हें भाषायी कौशल कहते हैं। इस प्रकार भाषा के चार कौशलों का क्रम इस तरह होगा–

1. श्रवण कौशल
2. मौखिक कौशल
3. वाचन कौशल
4. लेखन कौशल

1.1.3 बोलचाल कौशल अथवा मौखिक कौशल

अर्थ

आदिकाल से मनुष्य सृष्टि जगत में विचरण करता हुआ समस्त जीवन व्यापार बोल–चाल पर निर्भर है। घर में और घर से बाहर–व्यापार में या व्यवसाय में बोल चाल द्वारा ही कार्य होता है। जीवन के प्रत्येक व्यापार में बोल चाल सफलता की कूंजी है। बोल चाल असम्भव बात को सम्भव बनाने में सहायक है। वास्तविकता तो यह है कि बोल चाल स्वयं में एक कला है। बाजार में, कार्यालय में, सम्भाषण में, यात्रा में, कहीं भी जायें हमारे प्रतिदिन का अधिकांश समय बोल–चाल में ही बीतता है। दूसरे शब्दों में परिवार मित्र–मण्डली, सामाजिक सम्पर्क के स्थान ऐसे स्थल हैं, जहाँ वाणी का प्रयोग किया ही जाएगा। शंकराचार्य समयानुसार युक्तियुक्त बोलने में असमर्थ व्यक्ति को मूक तथा बधिर मानते हैं। पाश्चात्य दार्शनिक **एल. रॉन हब्बर्ड ने अनुसार, "कोई व्यक्ति जितना अभिव्यक्ति में सक्षम है, उतना ही वह जीवन है तथा जीवन में सफल है।"**

परिभाषा की दृष्टि से कहा जा सकता है कि व्यक्ति अपने मनोभाव, अनुभव एवं विचार व्यक्त करने के लिए जिन जिन समाजसम्मत ध्वनि संकेतों का प्रयोग करता है, उसे मौखिक भाषा कहते है। भाषा को बोलने के लिए स्वरों तथा व्यंजनो के स्वीकृत उच्चारण–प्रयत्नों, शब्दों और वाक्य–निर्माण–कला का ज्ञान होना अनिवार्य है।

1.1.4 बोलचाल कौशल के उद्देश्य

(i) प्राथमिक स्तर पर

1. सरलता और स्पष्टता ला सके।
2. प्रश्नों का ठीक तथा शुद्ध उत्तर दे सके।
3. पूर्ण वाक्य बोलने में सक्षम हो।
4. अपने अनुभवों को सुनाने इत्यादि की योग्यता पैदा करे।
5. प्रार्थना गीत, कविताएँ सुना सके या गा सके।
6. ध्वनियों और अर्थों को समझ सके।

7. टैलीफोन पर बातचीत कर सके।
8. अपनी झिझक दूर कर आत्मविश्वास पैदा कर सके।

(ii) माध्यमिक स्तर पर

1. अपने भावों और विचारों को सरल, स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त कर सके। आने वाले समय के लिए जीवन की तैयारी होगी।
2. विद्यार्थी जितना आवश्यक हो उत्तर संगत, शुद्ध और पूर्ण बना सके।
3. अपने विचारों का तर्कपूर्ण प्रतिपादन कर सके।
4. विद्यार्थी प्रभावपूर्ण शैली में दूसरे के साथ वार्तालाप कर सके।
5. कविता–पाठ, मौखिक क्रियाओं इत्यादि में निपुण हो सके। उचित गति, हाव–भाव आदि के द्वारा अपने को प्रभावशाली बना सके।
6. कक्षा में प्रश्नोत्तर, भाषण, वाद–विवाद इत्यादि साहित्यिक गतिविधियों में भाग ले सके।
7. छात्रों की साहित्य में अभिरुचि विकसित हो सके।

(iii) उच्च स्तर पर

1. विचारों को प्रस्तुत करते हुए भाषा पटु एवं सफल वक्ता बन सके, भविष्य उज्ज्वल बना सके।
2. विद्यार्थी प्रभावपूर्ण शैली में दूसरों के साथ वार्तालाप कर सके जो विद्यार्थी पढ़–लिख जाते हैं, परंतु समाज, सभा में, हम उमर वर्ग में प्रभावशाली नहीं बना पाते, कई बार वे अयोग्य समझे जाते हैं।
3. उचित शब्दों के प्रयोग से अपने भावों और विचारों को प्रकट करने में सक्षम हो सके।
4. जीवन में व्यवहारकुशलता प्राप्त करके आत्मविश्वास में वृद्धि करने के योग्य हो।
5. सामाजिक दक्षता से सफलता की ऊँचाइयों को छू सके।
6. शुद्ध उच्चारण, मौलिक चिंतन, अभिव्यक्ति के माध्यम से भाषा प्रसार में, भाषा के विकास में योगदान देने योग्य हों।
7. विद्यार्थियों में लोकोक्तियाँ एवं मुहावरेदार, अथाह शब्द–भंडार, भाषा के प्रयोग की योग्यता विकसित करना।
8. विद्यार्थियों को सामाजिक उत्तरदायित्व को समझते हुए सामाजिक कुप्रवृत्तियों व समस्याओं को प्रति स्वतंत्र रूप में अपने विचार प्रस्तुत करने के योग्य बनाना जैसे आतंकवाद, सांप्रदायिकता, भ्रूण हत्या आदि ज्वलतं लोकतंत्रात्मक प्रणाली, विषयों पर चर्चा इत्यादि।

9. विद्यार्थी अपने विचारों का तर्कपूर्ण प्रतिपादन करने के योग्य बने, समर्थन करने में और विरोध दोनों ही स्थितियों को सम्भालने में सक्षम हो।
10. समयानुसार, भावानुसार आत्म प्रकाशन कर संतुलित व्यक्तित्व का विकास करने में योग्य बन सके।

1.1.5 बोलचाल कौशल का महत्व

बोलचाल की शिक्षा का महत्व सर्वपक्षीय है जैसे–

1. व्यवहार कुशलता– नित्य प्रति व्यवहार की दृष्टि से बोलचाल की भाषा अधिक महत्वपूर्ण है। पारिवारिक, सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आदि कार्य अधिकतर मौखिक भाषा से ही किए जाते हैं। बालक को बोलचाल की शिक्षा देना अनिवार्य है तांकि उसमें व्यवहार कुशलता आए।

2. सामाजिक दक्षता– बोलचाल की शिक्षा से विद्यार्थियों में सामाजिक दक्षता पैदा होती है। नित्य प्रति व्यवहार कुशलता से बालक में वैयक्तिक योग्यता विकसित होगी जबकि बोलचाल की शिक्षा की सामाजिक उपयोगिता भी है। बोलचाल की शिक्षा बालक को कुशल वक्ता बनाती है जो समाज में अपने भावों व विचारों को स्वतन्त्र रूप से प्रकट कर सकता है। रेडियो, दूरदर्शन, चलचित्र, दूरभाष आदि में भाषा के मौखिक रूप की प्रधानता है।

3. शिक्षण व्यवस्था– भाषा हो अथवा कोई अन्य विषय, उसके शिक्षण की व्यवस्था मौखिक भाषा से ही की जाती है। कोई भी भाषा सीखने से पहले उसका मौखिक रूप सीखना पडता है। मौखिक भाषा से बोलना और सुनना दो भाषायी कौशल विकसित होते हैं जिससे भाषा के मूल रूप का ज्ञान होता है। कक्षा में अध्यापक किसी भी विषय का ज्ञान पहले मौखिक रूप से देता है। यहाँ तक कि श्यामपट पर भी शब्दों को मुखरित करते हुए लिखने का सिद्धान्त है।

4. भाषिक क्रियाओं में दक्षता– भाषण, वाद–विवाद, कविता, उच्चारण, कहानी कथन, तर्क–वितर्क आदि भाषिक क्रियाओं में दक्षता इनके शिक्षण द्वारा आती है। इनकी विषय सामग्री से विद्यार्थियों में जागरूकता पैदा होती है तथा सामाजिक समस्याओं के समाधान के बारे में सोचने की क्षमता विकसित होती है।

5. मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं की पूर्ति– आत्माभिव्यक्ति मनुष्य की प्रमुख आवश्यकता है। वह अपने भावों व विचारों को जितनी सरलता व सहजता से बोल–चाल के माध्यम से अभिव्यक्त कर सकता है। उतनी भाषा के लिखित रूप से नहीं। वह मौखिक रूप से तुरन्त अपने प्रश्नों का उत्तर पा सकता है। आत्म प्रकाशन से विद्यार्थी में आत्म विश्वास उत्पन्न होता है।

6. लिखित भाषा का आधार– बोलचाल की भाषा लिखित भाषा का आधार है। विद्यार्थी को बोलचाल के जितने अधिक अवसर प्रदान किए जाएँगे उसकी लिखित भाषा

उतनी पुष्ट होगी। विद्यार्थी को इससे भाषा के सही रूप का ज्ञान होगा जिससे उसकी लेखन सम्बन्धी अशुद्धियाँ भी कम होगी। अतः बोलचाल की भाषा से लिखित भाषा सीखने में यथेष्ट सहायता मिलती है। अत

7. व्यवहार में परिर्वतन– बोलचाल की शिक्षा द्वारा विद्यार्थी के व्यवहार में सही परिवर्तन होता है। वाणी के संयम से घृणा, क्रोध, द्वेष, प्रतिशोध आदि कुभाव नष्ट होते हैं। अतः इसकी शिक्षा के अवसारनुसार बोलचाल में परिवर्तन की योग्यता उत्पन्न होती है।

8. भाषा का प्रसार– भाषा के बोलचाल के रूप को अधिकतर लोग समझ सकते हैं क्योंकि बोलने वाले के मुख के हावभाव काफी हद तक अर्थ स्पष्ट कर देते हैं। लिखित भाषा में विचारों को जानने के लिए लिपि को जानना आवश्यक है। अतः अशिक्षित व्यक्ति भी बोलचाल की भाषा द्वारा भावों व विचारों का आदान–प्रदान कर सकते हैं। मौखिक भाषा से बालक के शब्द भण्डार में उत्तरोत्तर वृद्धि होती है।

9. मौलिकता– बोलचाल अथवा मौखिक अभिव्यक्ति के अभ्यास से बालक में विचारों की मौलिकता आती है। इससे विद्यार्थी में लिखित रचना की योग्यता भी विकसित होती है। अभिव्यक्ति में जितनी अधिक मौलिकता होगी वह उतनी ही प्रभावशाली होगी

10. उचित प्रवाह व गतिशीलता– बोलचाल की शिक्षा से विद्यार्थियों में अपने भावों व विचारों को उचित प्रवाह व गति से प्रकट करने की योग्यता आती है। वह नि संकोच व विराम चिह्नों को ध्यान में रखते हुए उचित गति से बोलना सीखता है।

11. कम समय में भावाभिव्यक्ति– मौखिक भाषा द्वारा भावाभिव्यक्ति बहुत कम समय में होती है। इसमें किसी प्रकार के माध्यम की आवश्यकता नहीं है। लिखित भाषा द्वारा भावभिव्यक्ति में समय भी अधिक लगता है तथा उसके लिए काग़ज, कलम, स्याही की भी आवश्यकता पद्दती है।

12. भावों की प्रतिक्रिया का यथाशीघ्र ज्ञान–जब व्यक्ति मौखिक रूप से भावाभिव्यक्ति करता है तो उसके भावों का दूसरे पर क्या असर हुआ, इसका उसे यथाशीघ्र ज्ञान हो जाता है। लिखित अभिव्यक्ति में प्रतिक्रिया जानने में समय लगता है।

13. उच्चारण शुद्धता– मौखिक अथवा बोलचाल की भाषा शिक्षण द्वारा बालक के उच्चारण में शुद्धता आती है। उसके उच्चारण की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है। इसका प्रभाव बालक के लेखन पर पद्दता है। यदि उच्चारण शुद्ध होगा तो वह भाषा के लिखित रूप में अशुद्धियाँ नहीं करेगा।

14. व्यावसायिक क्षेत्रों में सहायक– मौखिक भाषा पर ही व्यावसायिक कुशलता निर्भर करती है। व्यक्ति बोलचाल मे जितना कुशल होगा उसका व्यवसाय उतना ही सफल होगा। मौखिक भाषा शिक्षण बालक में व्यावसायिक योग्यता पैदा करता है।

15. आत्मविश्वास पैदा होना– मौखिक भाषा शिक्षण बालक को बोलचाल का अवसर प्रदान करता है। जिससे बालक में बोलने की झिझक दूर होती है। वह प्रभावशाली ढंग से वार्तालाप करने तथा प्रश्नों के सही उत्तर देने में सक्षम हो जाता है। उसमें भाषण, वाद–विवाद, वार्तालाप आदि पाठ्य क्रियाओं की योग्यता उत्पन्न होती है।

संक्षेप में, बोलचाल की भाषा अथवा मौखिक रचना की उपयोगिता अपनी व्यापकता की दृष्टि से स्वयं सिद्ध है। इसका शिक्षण विद्यार्थी के चहुँमुखी विकास के लिए अनिवार्य है।

1.1.6 मौखिक भाषा, बोल–चाल की भाषा शिक्षण की क्रियाएँ

मौखिक भाषा की इतनी उपयोगिता होते हुए भी आज तक इसकी ओर उचित ध्यान नहीं दिया गया। अध्यापक वर्ग इस ओर बहुत अधिक उदासीन नजर आता है।

मौखिक भाषा की शिक्षा घर से आरम्भ होती है। बच्चा जन्म के कुछ दिन पश्चात् ही मौखिक भाषा सीखने लगता है। इसलिए मौखिक भाषा के लिए शुद्ध भाषा–भाषी व्यक्तियों के सम्पर्क की बड़ी आवश्यकता है।

भाषा–ज्ञान को स्थायी रूप देने के लिए अभ्यास करना भी आवश्यक होता है। अत बच्चों को मौखिक अथवा बोल–चाल की भाषा का अधिक से अधिक अभ्यास कराना चाहिए। अध्यापक का कर्त्तव्य है कि भाषा शिक्षण के प्रारम्भ में बच्चों को मौखिक भाषा का यथोचित अभ्यास कराए। मातृ–भाषा हिन्दी का ज्ञान जितनी आसानी से इस स्तर पर कराया जा सकता है, उतनी सरलता से आगे चल कर नहीं कराया जा सकता है।

विद्यालयों में बच्चों की मौखिक भाषा के विकास करने की अनेक क्रियाएँ हो सकती हैं, जिन में कुछ प्रमुख क्रियाएँ इस प्रकार हैं–

1. **सामान्य विषयों पर वार्तालाप-** बच्चे समाज में रह कर कुछ अनुभव करते हैं और उनके मन में कुछ विचार उठते हैं। इसलिए अध्यापक को चाहिए कि वह पढ़ना–लिखना सिखाने से पहले साधारण विषयों, निकटतम पदार्थों तथा कहानियों के वर्णन द्वारा बच्चों को शुद्ध उच्चारण, निर्बाध अभिव्यक्ति और प्रवाह मुक्त वार्तालाप में अभ्यस्त कराए। बच्चों को इस प्रकार वार्तालाप की स्वतन्त्राता मिलनी चाहिए। वे अपनी बात तभी कहेंगे जब उन्हें विद्यालयों में भी घरेलू पर्यावरण मिलेगा। अध्यापकों को प्रेम, सहानुभूति और धैर्य से काम लेना चाहिए।
2. **कक्षा शिल्प:**. जो कुछ कक्षा में क्रियात्मक कार्य कराया जाए, बच्चों से उसकी चर्चा करना मौखिक भाषा के विकास में सहायक सिद्ध होता है। बच्चे अपनी बनाई वस्तुओं के विषय में चर्चा करने में आनन्द लेते हैं।
3. **अन्ताक्षरी प्रतियोगिताओं का आयोजन-** अन्तायाक्षरी प्रतियोगिताओं के माध्यम से बच्चों में अच्छे पद्यांश और छोटे–छोटे छन्दों में अभिव्यक्त पद्य खण्डों को याद

करने तथा उनके संस्कार वाचन करने की योग्यता का विकास होता है। इससे उन की बोल चाल की भाषा काव्यमय भी हो जाएगी।

4. **चित्र वर्णः.** छोटे बच्चों के सामने चित्र टांग कर उन से चित्रा का वर्णन करने के लिए कहा जा सकता है। इससे बालकों में सोचने तथा वर्णन करने की शक्ति का विकास होता है। यह एक मनोरंजक तथा सफल साधन माना गया है।

5. **कण्ठ किये पद्य एवं गद्य–खण्ड सुनानाः-** विद्यालयों में आयोजित विभिन्न समारोहों में बच्चों को कण्ठ की गई कविताओं को सुनाने का अवसर देना चाहिए। भाषा के घण्टों में भी बच्चों से उनकी कण्ठ की कई कविताएं अथवा गद्य पंक्तियां सुनी जानी चाहिए।

6. **कहानी और पहेलियां सुनाने का अवसरः-** भाषा (हिन्दी) के घण्टों में अध्यापक बच्चों से उनकी सुनी हुई या पढ़ी हुई कहानियां अथवा पहेलियां सुन सकते हैं। यह साधन मुख्यते छोटी कक्षाओं में उपयोगी होगा। इससे बच्चों की बोलने की शक्ति का विकास होगा और अध्ययन में भी उनकी रुचि जागृत होगी।

7. **नाटकीकरणः-** छात्रों से नाटकों का अभिनय कराया जाना चाहिए। अभिनय में उसकी स्वाभाविक रूचि होती है। अभिनय की संवेगात्मक स्थिति में बच्चे बड़े आत्मविश्वास के साथ वार्तालाप करते हैं। उन्हें उचित प्रशिक्षण भी दिया जा सकता है।

8. **बाल सभाः-** सप्ताह में एक दिन पूरे विद्यालय के बालकों की सभा का आयोजन किया जाए। इसमें बालकों को बढ़े हुए गद्य पद्य खण्डों, कहानियों, संवादों आदि को सुनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।

9. **समाचार सुनाना–** बालकों को ऐसे अवसर भी प्रदान किए जायें कि वे रेडियो से सुने अथवा समाचार पत्रा से पढ़े हुए समाचारों को सुना सकें। इसके अतिरिक्त किसी अन्य आंखों देखी घटना का विवरण भी दे सकें।

10. **प्रश्नोत्तर–** छात्रों से उनके संचित ज्ञान पर प्रश्न पूछना और उनका पूर्ण वाक्यों में उत्तर लेना भी लाभदायक होता है। बच्चों को पूर्ण वाक्यों में प्रभावशाली ढंग से उत्तर देने की शैली में अभ्यस्त कराया जाना चाहिए, इससे उन में समस्या–समाधान की शक्ति भी विकसित होती है।

11. **विचार परिषेद्–** विद्यालयों में बच्चों को एकत्रिात करके उन्हें किसी समस्या पर विचार करने का अवसर भी दिया जाना चाहिए। विचार विनिमय करने से मौखिक भाषा में स्वाभाविकता आती है।

12. **वाद–विवाद एवं भाषण प्रतियोगिता–** बच्चों को भाषण तथा वाद–विवाद के लिए पर्याप्त अवसर देना चाहिए। कक्षा में साहित्यिक एवं सांस्कृतिक क्रियाओं के लिए

निर्धारित घण्टों में बच्चों को किसी विषय विशेष पर बोलने के लिए कहा जाना चाहिए।

13. **सामूहिक काव्य पाठ–** बच्चे कविता पाठ में अत्यंत रस लेते हैं। उनके लिए गीत, खेल और मनोविनोद के साधन बनते हैं। वे इक्ट्ठे गाते हैं और गीत कण्ठस्थ कर लेते हैं। समस्त गीत को रट कर ताल और राग के साथ गाते हैं। इससे अनेक लाभ होते हैं जैसे मनोविनोद, उच्चारण का शुद्ध होना, बोलने की झिझक का दूर होना आदि। संगीत और कविता के प्रति रुचि भी बढ़ती है।

14. **टेलीफोन का प्रयोग–** टेलीफोन आज के व्यावहारिक जीवन का एक आवश्यक अंग हो गया है। बच्चों को टैलीफोन का प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इससे उनमें संक्षिप्त रूप से अपने विचारों को प्रकट करने की योग्यता का विकास होगा।

1. चित्र वर्णन क्रिया पर टिप्पणी लिखिए।
   .....
   .....
2. प्राथमिक स्तर पर बोलचाल कौशल के उद्देश्य लिखिए।
   .....
   .....

1.1.7 सारांश

इन साधनों के अतिरिक्त अनुच्छेद सार सुनाना तथा पुस्तकीय पाठ का वर्णन करना भी बोल–चाल की शिक्षा के उपयुक्त साधन माने गये हैं। इन सभी साधनों के साथ–साथ यह भी आवश्यक है कि माता–पिता अपने बच्चों को बोलने के लिए प्रोत्साहित करें। अध्यापक का व्यवहार बहुत सहानुभूतिपूर्ण होना चाहिए। वह बच्चों को डरा–धमका कर दब्बू न बनाए। जब तक बोल–चाल की भाषा पर ध्यान नहीं दिया जाएगा, तब तक भाषा के सामान्य स्तर को ऊँचा उठाना सम्भव नहीं हो सकेगा।

1.1.8 स्वयं जांच अभ्यास

खाली स्थान भरो

1. बालक को बोलचाल की शिक्षा देना अनिवार्य है ताकि उसके.....में कुशलता आए।
2. मौखिक भाषा की शिक्षा.....से आरम्भ होती है।

उत्तर : 1. व्यवहार 2. घर

1.1.9 अभ्यासात्मक प्रश्न

प्रश्न1. बोलचाल शिक्षण से क्या तात्पर्य है?

प्रश्न2. बोलचाल की शिक्षा विद्यार्थी के लिए अति आवश्यक है।' इस तथ्य की पुष्टि करते हुए इसके उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न3. मौखिक भाषा का महत्व स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न4. निम्न पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

1. नाटक शिक्षण
2. वाद–विवाद
3. कविता उच्चारण

1.1.10 सहायक पुस्तकें

1. हिन्दी शिक्षण– ज्योति खन्ना–धनपत राय एण्ड कं., दिल्ली
2. हिन्दी शिक्षण– भाटिया–शर्मा– टण्डन पब्लिकेशन, लुधियाना
3. मातृभाषा शिक्षण– के क्षत्रिाया, विनोद पुस्तक मन्दिर–आगरा
4. हिन्दी शिक्षण विधि–रघुनाथ सफाया–प्रकाशक अमीचंद सूरी पंजाब किताब घर, जालन्धर
5. हिन्दी भाषा शिक्षण–सुरेश नायक–टवेन्टी फस्ट सैंचुरी पब्लिकेशन, पटियाला

श्रवण (सुनने का कौशल) –अर्थ, महत्व, उद्देश्य, प्रविधियाँ

1.2.1 उद्देश्य
1.2.2 भूमिका
1.2.3 श्रवण कौशल के उद्देश्य
1.2.4 श्रवण कौशल शिक्षण का महत्व
1.2.5 श्रवण कौशल की विधियाँ
1.2.6 सारांश
1.2.7 स्वयं जांच अभ्यास
1.2.8 अभ्यासात्मक प्रश्न
1.2.9 सहायक पुस्तकें

1.2.1 उद्देश्य

1. श्रवण कौशल को परिभाषित कर सकेंगे।
2. श्रवण कौशल का महत्व बता पाएंगे।
3. श्रवण कौशल की प्रविधियों के बारे में बता पाएंगें।

1.2.2 भूमिका

भाषा शिक्षण के स्वाभाविक क्रम का प्रथम चरण है– श्रवण कौशल। भाषा अर्जित सम्पत्ति है, जो जन्मजात गुण नहीं है बल्कि उसे अनुकरण द्वारा सीखा जाता है। अनुकरण करने की प्रथम अवस्था है श्रवण की। पहले भाषा का रूप सुनेंगे तभी उसका अनुकरण कर सकेंगे। भाषा शिक्षण के अन्य चरण भी श्रवण कौशल पर आश्रित हैं जैसे पहले सुनेंगे फिर उसकी मौखिक अभिव्यक्ति कर सकेंगे तत्पश्चात् भाषा का लिखित रूप तथा पढ़ने की अवस्था आती है। श्रवण कौशल ही अन्य कौशलों को विकसित करने का मुख्य व प्रथम आधार है। जो बालक बाल्यावस्था से ही सुनने की शक्ति से वंचित हो, उसे बोलने में भी असफलता ही मिलती है। श्रवणेन्द्रिय में दोष होने के कारण बालक अपने मनोभावों को सरलता से नहीं समझा पाता है। श्रवण कौशल के बाद ही वह बोल, लिख और पढ़ सकता है। इसलिए प्रत्येक बालक श्रवणेन्द्रिय के माध्यम से भाषायी कौशल की दिशा में पहला कदम बढ़ाता है।

श्रवण कौशल की परिभाषा इन शब्दों में दी जा सकती है– **जब वक्ता द्वारा उच्चरित ध्वनियों के माध्यम से विचारों एवं भावों को कानों के द्वारा सुनकर अर्थग्रहण किया जाता है। उसे 'श्रवण' कहा जाता है।** कानों के द्वारा ध्वनियों को ग्रहण करना मात्रा ही श्रवण नहीं है। इसके लिए अभिव्यक्त भावों एवं विचारों को सुनकर समझना एवं बोध भी जरूरी है। श्रवण एक ऐसी क्रिया है जिसमें अभिव्यक्त विचार को ध्यानपूर्वक सुनने की आवश्यकता होती है। इसके बाद ही श्रोता इस विचार पर चिन्तन करके अपना मत–निर्धारित करता है एवं प्रतिक्रिया व्यक्त करता है।

1.2.3 श्रवण कौशल के उद्देश्य

1. **ध्यानपूर्वक सुनने की योग्यता का विकास –** श्रवण–कौशल के शिक्षण में विद्यार्थियों को इस योग्य बनाया जाता है कि वे ध्यानपूर्वक एवं मनोयोग के साथ दूसरों की बात सुनें। मन चंचल है। एक जगह स्थिर नहीं रहता। इस का प्रभाव मनुष्य के श्रवण पर पद्दता है। ध्यानपूर्वक न सुनने से व्यक्ति कई बातों को ठीक तरह से सुन नहीं पाता और अर्थ का अनर्थ कर बैठता है। बच्चे को स्कूल में इस बात का निरन्तर अभ्यास कराया जाता है कि वह दूसरों (अध्यापक) की बात ध्यानपूर्वक सुनें।

2. **शुद्ध उच्चारण के योग्य बनाना –** श्रवण–कौशल के शिक्षण से अध्यापक बच्चों को शुद्ध उच्चारण के योग्य बनाता है। उच्चारण के विभिन्न अवयवों का ज्ञान होने पर भी बच्चे तब तक शुद्ध उच्चारण नहीं सीखते जब तक शुद्ध उच्चारण उन के कानों में नहीं पहुंचता। वे कानों से अध्यापकों के शुद्ध उच्चारण को सुनते हैं और फिर उस का अनुकरण करते हुये शुद्ध उच्चारण करना सीखते हैं।

3. **स्वर के उतार चढ़ाव को समझने की योग्यता प्रदान करना –** मौखिक अभिव्यक्ति में वाणी के उतार चढ़ाव का बहुत महत्व होता है। उतार चढ़ाव से वाणी के प्रवाह में प्रभावोत्पादकता आती है। श्रवण–कौशल द्वारा बच्चे स्वराघात बलाघात तथा स्वर के उतार चढ़ाव को समझने लगते हैं। स्वर के उतार चढ़ाव का यह बोध उन्हें सही अनुकरण की ओर उन्मुख करता है।

4. **मौखिक अभिव्यक्ति की विविध शैलियों का ज्ञान देना –** अपनी बात को प्रभावशाली ढंग से समझाने के लिये मनुष्य विविध प्रकार की मौखिक–अभिव्यक्तियों का प्रयोग करता है। इन विभिन्न शैलियों का बोध एवं प्रशिक्षण विद्यार्थियों की श्रवणेन्द्रियों के कौशल प्रयोग द्वारा होता है। श्रवण कौशल के शिक्षण एवं अध्यापक द्वारा विद्यार्थियों की मौखिक अभिव्यक्ति की विविध शैलियों को समझने तथा उन का प्रयोग करने की योग्यता प्रदान की जाती है।

5. **सुनकर समझने की योग्यता विकसित करना –** सुनना केवल सुनने के लिये नहीं होता। सुनाने वाला व्यक्ति भी चाहता है कि उस की कही हुई बात को समझा

जाये। श्रवण–कौशल के शिक्षण एवं अभ्यास का एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है– विद्यार्थियों में सुन कर श्रुत–सामग्री को समझने की योग्यता विकसित करना।

6. **महत्त्वपूर्ण अंशों के चयन की योग्यता विकसित करना** – मौखिक अभिव्यक्ति की बातें महत्त्वपूर्ण नहीं होती। उस में बहुत कुछ असम्बन्धित तथा महत्त्वहीन होता है। श्रवण–कौशल के शिक्षण द्वारा अध्यापक विद्यार्थियों को उस योग्य बनाता है कि वे श्रुत–सामग्री में से महत्त्वपूर्ण बातों का चयन कर सके।

7. **मर्मस्पर्शी स्थलों की अनुभव करने की क्षमता विकसित करना** –मौखिक अभिव्यक्ति में कई बातें मर्म को स्पर्श कर लेती है। श्रवण–कौशल के शिक्षण एवं अभ्यास द्वारा अध्यापक विद्यार्थियों में मर्मस्पर्शी स्थलों को पहचानने तथा अनुभव करने की क्षमता विकसित करता है।

8. **श्रुत–सामग्री का सारांश ग्रहण करने की क्षमता विकसित करना** –श्रवण कौशल के शिक्षण द्वारा विद्यार्थियों को इस योग्य बनाया जाता है कि वे श्रुत–सामग्री का सारांश ग्रहण कर सकें।

9. **ग्रहण–शीलता की मनेस्थिति विकसित करना** –भाषा सीखने का प्रथम सोपान है भाषा के विभिन्न तत्त्वों के ज्ञान को ग्रहण करना। यह ग्रहणशीलता धीरे धीरे विकसित होकर मनुष्य को विभिन्न प्रकार के ज्ञान–विज्ञान को ग्रहण करने के योग्य बनाती है। श्रवण–कौशल द्वारा व्यक्ति ग्रहणशीलता की ओर उन्मुख होता है। अतः श्रवण–कौशल के शिक्षण एवं अभ्यास द्वारा विद्यार्थियों की ग्रहणशीलता की मनेस्थिति को विकसित किया जाता है।

10. **साहित्यिक रुचियों को विकसित करना** – साहित्यिक रुचियों को विकसित करना भाषा–शिक्षण का एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है। इस उद्देश्य की प्राप्ति में श्रवण–कौशल का बहुत बद्दा हाथ होता है। अध्यापक अपने मौखिक कौशल से साहित्य की विभिन्न विधाओं को इस सरसता के साथ प्रस्तुत करता है कि विद्यार्थियों में साहित्य के प्रति रुचि उत्पन्न होने लगती है। इस प्रकार विद्यार्थियों में श्रवण–कौशल को विकसित करके वह विद्यार्थियों में साहित्यिक रुचियों का विकास करता है।

11. **बौद्धिक एवं मानसिक विकास की ओर अग्रसर करना** –भाषा सीखना और समझना कोई यान्त्रिाक क्रिया नहीं बल्कि मानसिक क्रिया है और इस का एक मुख्य साधन है श्रवण–कौशल का योग्यतापूर्ण प्रयोग। भाषा बच्चे के ज्ञान चक्षु खोलती है परन्तु इन चक्षुओं तक पहुंचने का मुख्य द्वार है श्रवण की कुशलता। श्रवण–कौशल के शिक्षण एवं अभ्यास द्वारा अध्यापक विद्यार्थियों को बौद्धिक एवं मानसिक विकास की ओर अग्रसर करता है।

1.2.4 श्रवण कौशल शिक्षण का महत्त्व

सुनना मानव शरीर की स्वाभाविक क्रिया है, लेकिन इसमें निपुणता शिक्षण द्वारा ही संभव है।

1. **कर्णेन्द्रियों का विकास–** इस कौशल शिक्षण द्वारा विद्यार्थियों की कर्णेन्द्रियाँ विकसित होती हैं वह उचित रूप से सुनने की योग्यता प्राप्त कर सकता है।
2. **बोलचाल में निपुणता–** बालक अपने परिवार व आसपास के वातावरण से अनुकरण द्वारा भाषा अर्जित करता है तथा उसे व्यवहार में लाता है लेकिन उसमें निपुणता शिक्षण द्वारा ही प्राप्त की जा सकती है।
3. **लिखने में सहायक–** श्रवण कौशल शिक्षण का प्रभाव बालक के लिखने पर पद्दता है। बालक जैसा सुनते हैं, वैसा लिखने की कोशिश करते हैं। लिखने में परिपक्वता श्रवण शिक्षण द्वारा ही आती है।
4. **वाचन में सहायक–** पठन अथवा वाचन शिक्षण में श्रवण शिक्षण का विशेष महत्त्व है। शब्दों का जैसा उच्चारण सुना होता है, उसे उसी प्रकार पढ़ने की कोशिश की जाती है।
5. **अन्य भाषा सीखने में सहायक–** किसी भी अन्य भाषा की नवीन ध्वनियों को सीखने के लिए तथा मातृभाषा की ध्वनियों से भिन्नता स्थापित करने के लिए भी सुनना सहायक सिद्ध होता है।
6. **सम्भाषण योग्यता–** श्रवण कौशल के शिक्षण द्वारा विद्यार्थियों में सम्भाषण की योग्यता विकसित होती है। विद्यार्थी सही रूप से विचारों को सुनकर अर्थ ग्रहण करते हैं जिसका प्रभाव उनके सम्भाषण पर पद्दता है।
7. **साहित्यिक क्रियाओं द्वारा मनोरंजन–** श्रवणेन्द्रियों के समुचित विकास से छात्रों में साहित्यिक क्रियाओं के प्रति रुचि उत्पन्न होती है। कविता, कहानी आदि का आनन्द सुनकर ही प्राप्त किया जा सकता है।
8. **रचनात्मक प्रवृत्ति–** कविता, कहानी, नाटक आदि को सुनकर विद्यार्थियों में रचनात्मक प्रवृत्ति जागृत होती है तथा साहित्य के प्रति रुचि उत्पन्न होती है।
9. **कल्पनाशक्ति का विकास–** श्रवण शिक्षण का प्रभाव विद्यार्थी की मौलिक कल्पनाशक्ति पर भी पड़ता है। साहित्यिक क्रियाओं के श्रवण से उसकी कल्पना शक्ति विकसित होती है।
10. **आत्मबल की वृद्धि–** ज्ञान प्राप्ति का सबल साधन श्रवणेन्द्रियाँ हैं जिनके सफल शिक्षण से छात्रों में आत्मविश्वास पैदा होता है। इनसे प्राप्त ज्ञान द्वारा अभिव्यक्ति में परिपक्वता आती है जिससे बालक के आत्मबल का विकास होता है।
11. **चहुँमुखी विकास–** वर्तमान शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य है बालक का चहुँमुखी विकास। श्रवण शिक्षण उसके शारीरिक, बौद्धिक, मानसिक, नैतिक, सामाजिक आदि पक्षों

के समुचित विकास में सहायक है। व्यावहारिक जीवन में सामाजिक कार्यों को सम्पन्न करने के लिए सुनने का कार्य करना ही पड़ता है।

12. भाषा शिक्षण के उद्देश्यों की पूर्ति– भाषा शिक्षण के मुख्य उद्देश्य हैं, कौशलमूलक, ज्ञानमूलक, सौन्दर्यमूलक, रचनामूलक, समीक्षामूलक व सौजन्यमूलक। कौशलमूलक में सर्वप्रथम है श्रवण। श्रवण के आधार पर ही अन्य उद्देश्यों की पूर्ति हो सकती है। श्रवण द्वारा ही पढ़ना, बोलना व लिखना कौशल विकसित होते हैं। विद्यार्थी अध्यापक द्वारा बताए गए ज्ञान का श्रवण करते हैं तथा उसे समझते हैं। साहित्य की विभिन्न विधाएँ जैसे कविता, कहानी, संवाद वार्तालाप आदि की सौन्दर्यानुभूति श्रवण द्वारा ही होती है। इसी तरह रचना, समीक्षा व सौजन्यमूलक भाषा शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति श्रवण पर ही निर्भर है।

13. पाठ्यक्रम में उपयोगिता– हिन्दी भाषा के पाठ्यक्रम का निर्देश अध्यापक मौखिक रूप से देता है तथा विद्यार्थी श्रवण द्वारा यह जानते हैं कि उनके पाठ्यक्रम की कौन–कौन सी इकाइयाँ हैं। भाषा के अतिरिक्त अन्य विषयों का ज्ञान भी बालक श्रवण द्वारा अर्जित करते हैं। यदि उनमें श्रवण कौशल विकसित नहीं है तो वह सुनकर ज्ञानार्जन नहीं कर पाएँगे। इसलिए विद्यार्थियों के लिए श्रवण शिक्षण आवश्यक है।

14. शिक्षण विधियों में उपयोगिता– अध्यापक अपनी शिक्षण प्रक्रिया में भाषण विधि, खेल विधि, प्रश्नोत्तर विधि, प्रोजैक्ट विधि आदि अनेक विधियाँ अपनाता है। इन सब विधियों का आधार है श्रवण। विद्यार्थी में यदि श्रवण कुशलता है तो वह इन सब से लाभान्वित हो सकता है।

15. दैनिक जीवन में उपयोगिता– श्रवण के माध्यम से व्यक्ति अपने दैनिक क्रियाकलाप करता है। यदि उसका श्रवण कौशल विकसित न हो तो वह अपने कार्यों में कई त्रुटियाँ करेगा। दैनिक जीवन में वार्तालाप पर अधिकतर कार्य निर्भर करते हैं। ध्यानपूर्वक सुनी बात से कई कार्य सफलतापूर्वक सम्पन्न होते हैं।

16. प्रसारण साधनों द्वारा ज्ञानार्जन– बालक का यदि श्रवण कौशल विकसित है तो वह रेडियो, दूरदर्शन, फिल्म, टेप रिकार्डर आदि से सहज ही ज्ञानार्जन कर सकता है। श्रवण कौशल के शिक्षण द्वारा विद्यार्थी में यह योग्यता विकसित होती है।

17. धैर्यपूर्वक सुनने की आदत– श्रवण कौशल के शिक्षण से दूसरे व्यक्ति को धैर्यपूर्वक सुनने की आदत विकसित होती है। इससे विद्यार्थी एकाग्रचित्त होकर सुनता है। इसका बोलने वाले पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार श्रवण कौशल शिक्षण द्वारा विद्यार्थी में सद्भाव जागृत होते हैं।

उपरोक्त वर्णित कथन से वह स्पष्ट होता है कि श्रवण कौशल व्यक्ति के जीवन में विशेष महत्त्व रखता है।

1.2.5 श्रवण कौशल की विधियाँ

1. **खेल विधि–** प्रारम्भिक कक्षाओं से ही श्रवण कौशल का शिक्षण प्रारम्भ करना चाहिए। इस स्तर के बालक खेलों में अधिक रुचि रखते हैं। इसलिए खेल विधि को श्रवण कौशल के विकास के लिए अपनाया जाना चाहिए। अध्यापक ऐसे खेल अपनाए जिससे उनमें सुनने की शक्ति तीव्र हो। जैसे–

अध्यापक छात्रों को निर्देश दे कि शब्द एक ही बार बोले जाएँगे, उन्हें आपने ध्यान से सुनकर स्मरण करना है और तत्पश्चात् उन्हें उच्चरित करना है। जो बालक सुनकर अधिक शब्द स्मरण करेंगे उन्हें उतने अंक प्राप्त होंगे। ऐसा खेल बालकों से लिखवा कर भी कराया जा सकता है। इस प्रकार विद्यार्थी विशेष सतर्क रहेंगे।

2. **कहानी विधि–** कहानी बालकों की मनोवैज्ञानिक आवश्यकता है। कहानी सुनने में उनकी विशेष दिलचस्पी होती है। इसके माध्यम से श्रवणेन्द्रियों के विकास के साथ उनका भाषा सम्बन्धी ज्ञान विकसित होता है। शिक्षाप्रद कहानियों से उनमें नैतिक मूल्य पैदा होते हैं। अध्यापक को कहानी बहुत रोचक ढंग से सुनानी चाहिए। जिससे विद्यार्थियों की उत्सुकता आखिर तक बनी रहे। कहानी उचित हाव–भाव व मध्यम गति से सुनाई जाए जिसके श्रवण के साथ छात्रा भाव ग्रहण करते जाएँ। कहानी सुनाने से पूर्व विद्यार्थियों को यह बताना आवश्यक है कि अध्यापक के कहानी सुनाने के पश्चात् उन्हें भी अपने शब्दों में सुनानी होगी या फिर कहानी से सम्बन्धित शिक्षा पूछी जा सकती है। विद्यार्थी यदि ध्यान से उसका श्रवण करेंगे तभी उसके बारे में बता पाएँगे। कहानियों का चयन विद्यार्थियों के मानसिक स्तर के अनुकूल होना चाहिए।

3. **आख्यान विधि–** अध्यापक विषय सम्बन्धी आख्येय प्रसंगों, घटनाओं, कथाओं आदि की व्याख्या कर सकता है। विद्यार्थी ऐसे वर्णनों को सुनने में बहुत रुचि लेते हैं। बीच–बीच में छोटे–छोटे प्रश्न पूछ कर उनकी सतर्कता बनाए रख सकते हैं। इस प्रकार किन्हीं विषयों का ज्ञान सम्भाष्पण द्वारा भी दिया जा सकता है। विषय रुचिपूर्ण होगा तो विद्यार्थी उसका ध्यानपूर्वक श्रवण करेंगे।

4. **प्रश्नोत्तर विधि–** प्रश्नोत्तर विधि से विद्यार्थियों में सतर्कता बनी रहती है। उनसे विषय सम्बन्धी प्रश्न पूछे जा सकते हैं। प्रश्न अधिक लम्बे नहीं होने चाहिए बल्कि बालकों के स्तर के अनुकूल हों। प्रश्न करते हुए इस बात का विशेष ध्यान रखा जाए कि प्रश्न एक ही बार पूछा जाए। अध्यापक के बार–बार एक ही प्रश्न की आवृत्ति करने से छात्रों में सुनने में लापरवाही की प्रवृत्ति विकसित होगी। प्रश्नों की भाषा सरल और स्पष्ट होनी चाहिए। इस विधि से विद्यार्थियों की ध्यानपूर्वक सुनने की आदत विकसित होती है।

5. **वाचन विधि–** अध्यापक द्वारा किए सस्वर आदर्श वाचन का श्रवण कर छात्रों को विषय सम्बन्धी उचित हावभाव के साथ भाषा का सही ज्ञान होता है। उन्हें सही रूप से अनुकरण वाचन के लिए प्रेरणा मिलती है। अनुकरण वाचन तभी सुचारू रूप से हो

सकता है यदि विद्यार्थी ध्यानपूर्वक आदर्शवाचन सुनेंगे। अतः आदर्शवाचन यदि प्रभावशाली ढंग से किया जाए तो बालकों की श्रवणेन्द्रियों को अवश्य प्रभावित करेगा। अध्यापक विभिन्न साहित्यिक गतिविधियों व क्रियाओं द्वारा श्रवण कौशल का अभ्यास करा सकता है।

6. **वाद विवाद क्रिया–** कक्षा के विद्यार्थियों को दो भागों में बाँट कर किसी विषय पर उनसे वाद–विवाद कराया जा सकता है। इसके लिए कक्षा के अनुरूप विषय का चयन किया जाए। वाद–विवाद क्रिया में दोनों समूहों के छात्रा प्रतिउत्तर देने के लिए एक–दूसरे को ध्यानपूर्वक सुनेंगे। अंत में अध्यापक को निष्कर्ष रूप से विचार व्यक्त करने चाहिए। तत्पश्चात् समूची कक्षा से प्रश्न पूछ कर यह जांच की जा सकती है कि छात्रा अध्यापक को सुन रहे थे या नहीं।

7. **श्रुतलेख क्रिया–** श्रुतलेख यानि सुनकर लिखना। श्रुतलेख न सिर्फ लेखन कला को बल्कि श्रवण कौशल को भी विकसित करता है। इसमें भी अध्यापक को एक बार उचित गति से बोलना चाहिए। इसमें विद्यार्थी छूट जाने के भय से ध्यानपूर्वक श्रवण करेंगे। श्रुतलेख के नियमों का पालन करते हुए इस क्रिया को करना चाहिए।

8. **दृश्य–श्रव्य उपकरण–** रेडियो, टेपरिकार्डर, ग्रामोफोन, दूरदर्शन, चलचित्रा, वीडियो चित्रा आदि उपकरण श्रवण कौशल में उपयोगी सिद्ध होते हैं। इनमें विभिन्न उपयोगी शैक्षणिक व मनोरंजक कार्यक्रम प्रसारित होते रहते हैं। अध्यापक को इनका पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। विद्यार्थियों को इनकी जानकारी देते हुए इन्हें सुनने व देखने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। विद्यालय के समय सारिणी में इन उपकरणों से प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों को सुनाने व दिखाने की उचित व्यवस्था होनी चाहिए। बालकों के लिए वैसे भी ये आकर्षक उपकरण हैं। पाठ सम्बन्धी चित्रों को दिखाकर अध्यापक उनकी व्याख्या कर सकता है जिसके सुनने में छात्रा रुचि लेते हैं।

9. **धीमी आवाज़ का अभ्यास–** अध्यापक विद्यार्थियों की श्रवणेन्द्रियों के विकास के लिए ऐसा अभ्यास भी करा सकता है कि वह किसी अनुच्छेद का वाचन करते हुए धीरे–धीरे अपनी आवाज़ को कम करता जाए और विद्यार्थियों को उन्हें सुनकर समझने को प्रेरित करे। इस अभ्यास द्वारा विद्यार्थी एकाग्रचित होकर सुनने का प्रयास करेंगे।

1. वाचन विधि के बारे लिखिए।

.....

.....

2. खेल विधि से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

1.2.6 सारांश

इस अध्याय में हमने श्रवण कौशल के अर्थ, महत्व और प्रविधियों के बारे पढ़ा। इन सब श्रवण सम्बन्धी प्रविधियों, गतिविधियों के संचालन के लिए अध्यापक की अपनी रुचि का होना अति आवश्यक है, तभी विद्यार्थियों में श्रवण कौशल विकसित किया जा सकता है।

1.2.7 स्वयं जांच अभ्यास

खाली स्थान भरो।

1. .....एक ऐसी क्रिया है जिसमें अभिव्यक्त विचार को ध्यानपूर्वक सुनने की आवश्यकता होती है।
2. .....क्रिया में दोनों समूहों के छात्र प्रतिउत्तर देने के लिए एक दूसरे को ध्यानपूर्वक सुनते हैं।

उत्तर : 1. श्रवण 2. वाद विवाद

1.2.8 अभ्यासात्मक प्रश्न

प्रश्न1. श्रवण कौशल से आपका क्या अभिप्राय है?
प्रश्न2. श्रवण कौशल के उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।
प्रश्न3. अध्यापक को किन–किन उपायों द्वारा विद्यार्थियों की श्रवणेन्द्रियाँ विकसित करनी चाहिए?
प्रश्न4. मनुष्य जीवन के लिए श्रवण कौशल का क्या महत्व है?
प्रश्न5. श्रवण कौशल के शिक्षण की विधियों पर चर्चा कीजिए।
प्रश्न6. संक्षेप में उत्तर दीजिए

1. वाद विवाद
2. दृश्य–श्रव्य उपकरण
3. आख्यान विधि

1.2.9 सहायक पुस्तकें

1. हिन्दी शिक्षण– ज्योति खन्ना – धनपत राय एण्ड कं., दिल्ली
2. हिन्दी शिक्षण– भाटिया–शर्मा– टण्डन पब्लिकेशन, लुधियाना
3. मातृभाषा शिक्षण– के. क्षत्रिाया, विनोद पुस्तक मन्दिर–आगरा
4. हिन्दी शिक्षण विधि–रघुनाथ सफाया–प्रकाशक अमीचंद सूरी पंजाब किताब घर, जालन्धर
5. हिन्दी भाषा शिक्षण–सुरेश नायक–टवेन्टी फस्ट सैंचुरी पब्लिकेशन, पटियाला
6. हिन्दी शिक्षण–डॉ. रामशकल पाण्डेय–विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
7. आधुनिक हिन्दी शिक्षण–डॉ. योगेश कुमार–ए. पी. एच. पब्लिशिंग कॉरपोरेशन, नई दिल्ली।

वाचन कौशल–अर्थ, वाचन मन्दता के कारण व निवारण के उपाय

1.3.1 उद्देश्य
1.3.2 भूमिका
1.3.3 वाचन के प्रकार
1.3.4 वाचन मन्दता से अभिप्राय
1.3.5 वाचन मन्दता के कारण
1.3.6 वाचन मन्दता अथवा त्रुटियों को दूर करने के उपाय
1.3.7 सारांश
1.3.8 स्वयं जांच अभ्यास
1.3.9 अभ्यासात्मक प्रश्न
1.3.10 सहायक पुस्तकें

1.3.1 उद्देश्य

1. वाचन कौशल को परिभाषित कर सकेंगे।
2. वाचन मन्दता के कारणों को बता पाएंगे।
3. वाचन मन्दता का निवारण कर सकेंगे।

1.3.2 भूमिका

शिक्षा आजीवन अनवरत चलने वाली प्रक्रिया है और इसका आधार है पठन अथवा वाचन। साधारण भाषा में पुस्तक पढ़ने को वाचन कहते हैं परन्तु अक्षरों या वाक्यों को पढ़ लेना ही वाचन नहीं होता। प्रश्न उठता है कि क्या वाचन अक्षरों की मौखिक अभिव्यक्ति का दूसरा नाम है या लिपिबद्ध विचारों की मौखिक अभिव्यक्ति ही वाचन है? वास्तव में वाचन एक कला है। यह एक ऐसी क्रिया है जिसमें प्रत्येक शब्द के साथ ध्वनि और अर्थ दोनों निहित होते हैं। लिपिबद्ध अक्षरों का तब तक कोई मूल्य नहीं जब तक वे विचारों का प्रतिनिधित्व नहीं करते। यह बात ठीक वैसे ही है जैसे ध्वनियों का कोई मूल्य नहीं जब तक वे विचारों का संचार न करती हों। इसलिए यह कहना उचित भी होगा कि विचार ध्वनियाँ और लिपिबद्ध अक्षर के बिना व्यर्थ हैं। अत वह क्रिया जिस

में शब्दों के साथ अर्थ–ध्वनि भी निहित हो, वाचन कहलाती है। दूसरे शब्दों में वाचन के अन्तर्गत लिपि को पढ़ना उतना आवश्यक नहीं जितना पढ़ कर उसे समझना और शब्दों का अर्थ ग्रहण करना।

महर्षि पतंजलि ने बिना अर्थ भाव ग्रहण किए हुए पढ़ने वालों की उपमा बोझ ढोने वाले गर्दभ से दी है। जिसे पीठ पर लदे हुए बोझ का तो अनुभव होता है पर वस्तु का ज्ञान नहीं रहता। वास्तव में भाषा शिक्षण के चार कौशलों सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना के शिक्षण व समुचित अभ्यास से अर्थ ग्रहण होता हैं। किसी के विचारों को हम सुनते हैं, वह विचार ध्वनियों के माध्यम से हम तक पहुंचते है। यदि हम ध्वनियों से परिचित हैं तो हम उनके माध्यम से विचारों का अर्थ ग्रहण करेंगे। यदि हम परिचित नहीं तो वह हमारे कानों में तो पड़ेगी लेकिन उसे हम समझेंगे नहीं। अतः वाचन के लिए आवश्यक है पहले ध्वनियों के अर्थ से परिचित होना। इसी तरह वह ध्वनियां जब लिपिबद्ध की जाती हैं तो वह अक्षर अथवा शब्द का रूप ले लेती हैं जिसे पढ़ कर हम अर्थ ग्रहण करते हैं। लेकिन यदि हम उन अक्षरों से परिचित नहीं हैं। तो हम उनका अर्थ ग्रहण नहीं कर पाते। अर्थ ग्रहण करने के लिए अक्षरों अथवा शब्दों का ज्ञान आवश्यक है जिसके माध्यम से विचार हम तक पहुंचते हैं। अतः विचार चाहे ध्वनि रूप में प्रकट हो या शब्द रूप में उनका अर्थ पूर्व परिचित होगा तभी हम उस विचार को समझ पाएंगे। अर्थात् वाचन पूर्ववत ध्वनियों के प्रतीक लिपिबद्ध शब्दों को पढ़ कर अर्थग्रहण करने की प्रक्रिया है।

वाचन प्रक्रिया–वाचन प्रक्रिया की मुख्य चार अवस्थाएं हैं –

विचार प्रकाशन– हमारे मन में विचार के प्रकाशन या अभिव्यक्ति की इच्छा उत्पन्न होती है। ये विचार हमारे मस्तिष्क में हैं।

ध्वनियां– विचार प्रकाशन के लिए कुछ विशेष ध्वनियों का सहारा लिया जाता है। ध्वनियां विचारों का प्रतिनिधित्व करती हैं। इन ध्वनियों को मुख से उच्चारित किया जाता है।

श्रवण–जब एक व्यक्ति ध्वनियों का उच्चारण करता है तो दूसरे व्यक्ति सुनते हैं।

अर्थ ग्रहण– कानों से सुनकर हम मस्तिष्क में इन ध्वनियों का अर्थ ग्रहण करते हैं।

1.3.3 वाचन के प्रकार

वाचन के दो प्रकार हैं–

सस्वर वाचन अथवा आदर्श वाचन

मौन वाचन

(i) **सस्वर वाचन–**लिखित अथवा मुद्रित भाषा को ध्वनि उच्चारण सहित पढ़ना सस्वर वाचन कहलाता है। इस प्रकार के वाचन में सर्वप्रथम शिक्षक द्वारा किए गए आदर्श वाचन को लिया जा सकता है जिसके द्वारा वह वर्णमाला के लिखित वर्णों एवं शब्दों की पहचान कराता है। इसके बाद अध्यापक के आदर्श वाचन को समझते हुए बालक उसका अनुकरण करते हैं। सस्वर वाचन दो प्रकार का होता है–

(क) व्यक्तिगत वाचन

(ख) सामूहिक वाचन

(क) व्यक्तिगत वाचन– जब व्यक्ति मुखर व उच्चरित रूप से अर्थात् आवाज़ करते हुए पठन करता है तो उसे व्यक्तिगत सस्वर वाचन कहते हैं। व्यक्तिगत वाचन जब अध्यापक करता है तो इसे आदर्श वाचन की संज्ञा दी जाती है और छात्रा द्वारा किए गए जाने पर यह अनुकरण वाचन कहलाता है। आदर्श वाचन करते हुए अध्यापक को भाषा का आदर्श रूप प्रस्तुत करना चाहिए जिससे विद्यार्थी ठीक प्रकार से अनुकरण करते हुए अभ्यास कर सके। अध्यापक को छात्रों द्वारा किए अनुकरण वाचन में उच्चारण, उचित गति, हावभाव, विराम चिन्हों आदि का ध्यान रखना चाहिए।

(ख) सामूहिक वाचन–जब एक से अधिक छात्र मिलकर सस्वर वाचन करते हैं तो उसे सामूहिक वाचन अथवा समवेत वाचन कहते है। प्राथमिक कक्षाओं में सामूहिक वाचन की विशेष उपयोगिता है। व्यक्तिगत अनुकरण वाचन में विद्यार्थी झिझक महसूस करता है लेकिन सामूहिक वाचन से विद्यार्थियों में आत्म विश्वास उत्पन्न होता है। अध्यापक को इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि सामूहिक वाचन एक सार होना चाहिए और उससे शोर जैसा आभास नही होना चाहिए।

(ii) मौन वाचन

मौन वाचन भाषा– शिक्षण की एक ऐसी क्रिया है जो सस्वर वाचन के पश्चात् प्रयोग में लाई जाती है। यह एक ऐसी क्रिया हैं। जिसमें छात्र आत्म निर्भर रहकर शीघ्रतापूर्वक पाठ को पढ़ एवं समझ लेता है। इससे स्वाध्याय की प्रवृत्ति को प्रश्रय प्राप्त होता है। मौन वावन का शाब्दिक अर्थ है लिखित भाषा को बिना स्वर उत्पन्न किए मन–ही–मन में पढ़ कर उसका अर्थ समझना। प्रत्येक व्यक्ति की पढ़ने एवं अर्थ ग्रहण करने की गति भिन्न–भिन्न होती है। इस प्रक्रिया में बिना मुख से बोले अथवा गर्दन को बिना अधिक हिलाए डुलाए नेत्रों से पठित सामग्री को पढ़ कर उसका अर्थ समझ लिया जाता है।

1.3.4 वाचन मन्दता से अभिप्राय

जब पाठक मंद गति से पढ़ता हुआ अर्थ ग्रहण करता है तो वह वाचन मंदता है। अच्छे वाचन के लक्षणों से बिल्कुल विपरीत वाचन मंदता के लक्षण है। वाचन मंदता सस्वर व मौन दोनों ही रूपों में हो सकती है। इसके कुछ लक्षण निम्नलिखित हैं–

(i) **मंदगति**–विद्यार्थी सस्वर वाचन में अटक–अटक कर प्रति मिनट कुछ ही शब्द पढ़ता है, जबकि साधारणते पाठक प्रति मिनट 300 शब्द पढ़ सकता है।

(ii) **समझने में असमर्थता**–विद्यार्थी पढ़ते हुए अर्थ ग्रहण नहीं कर सकता। पाठ के मुख्य तथ्यों को समझने में असमर्थ होता है।

(iii) **एकाग्रचित्तता का अभाव**– एकाग्रचित्तता वाचन दक्षता का मुख्य आधार है। तन्मय होकर न पढ़ने से वाचन सम्बन्धी दोष उत्पन्न होता है, जिससे अर्थ ग्रहण में बाधा पद्दती है।

(iv) **श्रमसाध्य क्रिया**– वाचन मन्दता का एक लक्षण यह भी है कि विद्यार्थी शीघ्र थकान महसूस करता है। उसके लिए वाचन श्रमसाध्य क्रिया बन जाती है।

(v) **अधिक बार पढ़ना**– विद्यार्थी को अर्थ ग्रहण के लिए शब्दों एवं वाक्यों को बार–बार पढ़ने की आवश्यकता पद्दती है।

(vi) **दृष्टि विराम की कमी**– वाचन मन्दता में दृष्टि विराम कम होता है। चक्षु गति में अपेक्षित नियमन नहीं होता। विद्यार्थी शब्दों व वाक्यों में नियमन अन्तर रखकर नहीं पढ़ता।

1.3.5 वाचन मन्दता के कारण

वाचन मन्दता अथवा वाचन की त्रुटियों के विभिन्न कारण हैं–

1. **शारीरिक कारण**– वाणी अवयवों में कोई दोष होने पर वाचन में त्रुटियाँ आ जाती हैं। दृष्टि दोष होने से भी शब्दों को ठीक ढंग से नहीं पढ़ा जाता जिससे उसका सही अर्थबोध नहीं होता।

2. **मानसिक असंतुलन**– मानसिक रूप से असंतुलित बालक में वाचन मन्दता आ जाती है। वह पढ़े हुए अर्थ ग्रहण करने में असमर्थ होता है।

3. **निरुद्देश्य वाचन प्रक्रिया**– जब बालक केवल कक्षा कार्य के निर्वाह मात्रा के लिए या शब्दोच्चारण मात्रा के लिए पढ़ता है तो उसे शीघ्र ही पढ़ने से अरुचि हो जाएगी जिससे उसका पठन निरुद्देश्य रहेगा।

4. **कठिन ग्राह्य पाठ्य सामग्री**– जब पाठ्य सामग्री बालक के मानसिक स्तर के अनुकुल नहीं होती तो उसका अर्थबोध कठिन ग्राह्य हो जाता है, जिससे वाचन मन्दता आती है।

5. सीमित शब्द भण्डार– विद्यार्थी का शब्द भण्डार जितना विकसित होता है, उसे उतनी ही वाचन में दक्षता प्राप्त होती है लेकिन इसके सीमित होने से अर्थ ग्राह्य सहज नहीं होता।

6. वाचन अभ्यास की कमी– प्रत्येक कार्य अभ्यास द्वारा सम्पन्न होता है। वाचन मन्दता का एक कारण उसके अभ्यास की कमी है।

7. अध्यापक का कठोर व्यवहार– अध्यापक का कठोर व्यवहार वाचन मन्दता का कारण बनता है। विद्यार्थी डर व संकोचवश वाचन सम्बन्धी कठिनाइयाँ दूर नहीं कर पाते।

8. अमनोवैज्ञानिक शिक्षण विधियाँ– अध्यापक द्वारा अपनाई गई वाचन सम्बन्धी शिक्षण विधियाँ यदि मनोवैज्ञानिक न हों तो विद्यार्थी वाचन में रुचि नहीं लेते और उसमें पिछद्द जाते हैं।

9. पाठ्य पुस्तक में त्रुटियाँ– पाठ्य पुस्तक की पाठ्य सामग्री में छपाई सम्बन्धी त्रुटियाँ होती हैं तथा उसमें सम्मिलित पाठ अरुचिकर होते हैं जिससे वाचन मन्दता आती है।

10. शैक्षणिक उपकरणों का अभाव– दृश्य–श्रव्य साधन शिक्षण प्रक्रिया में विशेष महत्व रखते हैं। वाचन शिक्षण में अध्यापक इनका उपयोग नहीं करता जिससे अर्थ बोध सहज नहीं होता।

11. शीघ्रता व असावधानी– शीघ्रता व असावधानी से पढ़ने पर शब्दों के अर्थ बदल जाते हैं।

12. शैक्षणिक वातावरण का अभाव– कक्षा में अनुशासनहीनता व शैक्षणिक वातावरण के अभाव से वाचन में त्रुटियाँ होती हैं।

13. रुचि का अभाव– विद्यार्थी में पठन की रुचि के अभाव से भी वाचन मन्दता आती है। अरुचि पैदा होने के कई कारण हो सकते है, जैसे, विषय का कठिन होना, विद्यार्थी का मानसिक रूप से पिछद्दापन, अध्यापक का कठोर व्यवहार आदि, वर्णों की अनभिज्ञता–देवनागरी लिपि के सम्पूर्ण अक्षरों की पहचान न होने से विद्यार्थी उसको ठीक प्रकार से समझ नहीं सकते। ऐसी समस्या वर्णमाला के संयुक्ताक्षरों से आती है।

14. एकाग्रचित्तता का अभाव– चंचल प्रकृति के बालक में वाचन दोष पाया जाता है, क्योंकि उसमें गम्भीरता से पढ़ने का अभाव होता है।

15. आनुवंशिक दोष– कुछेक परिवारों में वाचन मन्दता आनुवंशिक दोष भी होता है जो आगे बालकों में भी आ जाता है। इसे सतर्क रहकर दूर किया जा सकता है।

16. आत्मविश्वास का अभाव– आत्म विश्वास की कमी से भी छात्रा में वाचन मन्दता आ जाती है। इसका कारण घर अथवा विद्यालय का अनुचित वातावरण हो सकता है।

17. दृष्टिगति का ठीक न होना– वाचन में दृष्टिगति का महत्वपूर्ण स्थान है। दृष्टिविराम जितना लम्बा होगा वाचन की गति उतनी तेज होगी दृष्टिगति में दोष होने के कारण विद्यार्थी का वाचन भी प्रभावित होगा।

18. अशुद्ध उच्चारण– शुद्ध उच्चारण अच्छे वाचन का अत्यन्त महत्वपूर्ण गुण है। इस के बिना अच्छे वाचन की कल्पना भी नहीं की जा सकती । बार–बार प्रयास करने पर भी कई विद्यार्थी शुद्ध उच्चारण नहीं कर पाते।

1.3.6 वाचन मन्दता अथवा त्रुटियों को दूर करने के उपाय

1. शारीरिक उपचार– वाणी अवयवों की दृष्टि दोष को दूर करने का उपचार किया जाना चाहिए।

2. मानसिक संतुलन– अध्यापक का सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार बालकों के मानसिक संतुलन में सहायक हो सकता है। उसके द्वारा की गई त्रुटियों का निवारण शिक्षक को धैर्यपूर्वक करना चाहिए।

3. स्तरानुकूल पाठ्य सामग्री– विद्यार्थियों की रचनात्मक प्रवृत्ति को जागृत करने वाले तथ्यों का पाठ्य सामग्री में समावेश होना चाहिए। अतः पाठ्य सामग्री जीवन के विविध क्षेत्रों से सम्बन्धित हो जिससे विद्यार्थियों की रुचि बनी रहे।

4. शब्दार्थ ज्ञान– शब्दार्थ ज्ञान बढ़ाने के लिए विषय सामग्री में आए शब्दों के पर्यायवाची शब्द, विलोम शब्द, उपसर्ग, प्रत्यय के आधार पर शब्द रचना आदि का ज्ञान वाचन प्रक्रिया का महत्त्वपूर्ण पहलू है।

5. वाचन अभ्यास– अभ्यास से वाचन में कुशलता आती है, अतः अधिकाधिक पठन अभ्यास आवश्यक है। विद्यार्थियों को वाचन का इस प्रकार से अभ्यास कराना चाहिए जिससे वह अपनी वाचन अशुद्धियों को दूर करने का प्रयत्न करें। उन्हें अर्थ के साथ तीव्र गति से वाचन के जिए विविध अभ्यास करना चाहिए। वाचन के लिए शब्दकोश देखने का अभ्यास भी आवश्यक है। किसी विशेष विषय की जानकारी के लिए पढ़ने का अभ्यास तथा पुस्तकालय से पुस्तकें ढूँढने का अभ्यास वाचन को परिपक्व करता है।

6. अध्यापक का सहयोग– अध्यापक पठित अंश पर आधारित विविध प्रश्न पूछ सकता है तथा उत्तर के सम्बन्धित अनुच्छेदों को पाठ के शीर्षक देने, रूपरेखा देने तथा अनुच्छदों के सारांश देने के लिए प्रेरित कर सकता है। इस प्रकार अध्यापक वाचन के विभिन्न अवसर प्रदान कर विद्यार्थियों को सहयोग दे सकता है।

7. मनौवैज्ञानिक शिक्षण विधियाँ– मनोवैज्ञानिक शिक्षण विधियाँ विद्यार्थियों की वाचन में रुचि पैदा करती हैं। वाक्य विधि, कहानी विधि, कविता विधि, खेल विधि आदि मनोवैज्ञानिक विधियाँ वाचन के लिए उपयोगी हैं। वाचन शिक्षण के दौरान, शिक्षण सिद्धान्तों व सूत्रों का भी परिपालन करना चाहिए।

8. पाठ्य पुस्तक– पाठ्य पुस्तक में छपाई सम्बन्धी त्रुटियाँ नहीं होनी चाहिए। उनमें सम्मिलित पाठ रोचक एवं विविध होने चाहिए जिसमें विद्यार्थियों में वाचन की रुचि पैदा हो सके।

9. शैक्षणिक उपकरणों का प्रयोग– अर्थ बोध के लिए दृश्य–श्रव्य उपकरण का विशेष महत्व है। वाचन शिक्षण के लिए इनका प्रयोग अर्थ स्पष्टता के लिए उपयोगी सिद्ध होगा। आदर्श वाचन के लिए अध्यापक टेपरिकार्डर की मदद ले सकता है। कहानी सम्बन्धी चित्रा माडल आदि दिखाए जा सकते हैं। शैक्षणिक वातावरण निर्माण के लिए भी यह उपयोगी साधन है।

10. एकाग्रचित्तता– विद्यार्थियों में एकाग्रचित्त होकर पढ़ने की आदत डालनी चाहिए। सावधानी व उचित गति से पढ़ने पर अर्थ सहज रूप से स्पष्ट हो जाता है।

11. स्वाध्याय की आदत– स्वाध्याय से वाचन मन्दता दूर होती है। अध्यापक को अच्छे लेखकों व कवियों की पुस्तकों का परिचय देना चाहिए। विद्यार्थियों में पठित पुस्तकों की सूची बनाने को प्रेरित करना चाहिए। उन्हें शब्दकोश के अधिकाधिक प्रयोग के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

12. समीक्षात्मक पठन– उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों को समीक्षात्मक दृष्टि से पठन के लिए अभिप्रेरित करना चाहिए जिससे वह साहित्यिक सौन्दर्य का बोध एवं उनकी सराहना कर सकें।

13. कठिन शब्दों का निवारण– वाचन से पूर्व पाठ्य–सामग्री में आए कठिन शब्दों का स्पष्टीकरण करना चाहिए जिससे वाचन के समय रुकावट न आए।

14. अध्यापक द्वारा आदर्श वाचन– अध्यापक को विद्यार्थियों के सम्मुख आदर्श वाचन प्रस्तुत करना चाहिए। जिससे वह ठीक ढंग से अनुकरण वाचन कर सकें।

15. कक्षा का वातावरण– कक्षा का उचित वातावरण होना चाहिए जिससे वह ठीक प्रकार से अध्यापक का आदर्श वाचन समझ सकें।

16. संवेगों एवं मनोभावों का प्रभाव– संवेग तथा मनोभाव भी विद्यार्थियों के शुद्ध उच्चारण को प्रभावित करते हैं। कई ऐसे विद्यार्थी देखे गए हैं जो लज्जा, संकोच, भय आदि के कारण ठीक तरह से नहीं पढ़ पाते। ऐसे विद्यार्थियों के संवेगात्मक दोषों को दूर करना चाहिए और यदि आवश्यकता हो तो मनोचिकित्सक का परामर्श एवं सहयोग भी लेना चाहिए।

17. व्यक्तिगत उपचार– वाचन की कई त्रुटियाँ सामान्य होती हैं, उन्हें सामान्य रूप से, ब्लैकबोर्ड के माध्यम से या समुची कक्षा के सामने प्रदर्शन कर के, ठीक किया जा सकता है। परन्तु कई विद्यार्थी व्यक्तिगत–कठिनाईयों के कारण शुद्ध–वाचन नहीं कर पाते। अध्यापक को ऐसे विद्यार्थियों की व्यक्तिगत कठिनाईयों को समझ कर उनका

उचित सामाधान निकालना चाहिए। प्रत्येक विद्यार्थी की व्यक्तिगत कठिनाईयों के अनुरूप वाचन–शिक्षण की विधियों का प्रयोग करना चाहिए।

18. आवृत्ति– अभ्यास, अभ्यास एवं निरन्तर अभ्यास शुद्ध वाचन का मूलमंत्रा है। सस्वर वाचन कराते हुए अध्यापक विद्यार्थियों के जिन वाचन दोषों का संशोधन करता है, उन के संशोधित रूप की आवृत्ति होनी चाहिए। सीखी हुई शब्दावली की जितनी अधिक आवृत्ति होगी शुद्ध वाचन की योग्यता उतनी अधिक बढ़ेगी। अतः अध्यापक को नई शब्दावली के लेखन तथा मौखिक रूप में पथोचित आवृत्ति करवानी चाहिए।

19. परीक्षा का आयोजन– दोषपूर्ण वाचन का एक महत्वपूर्ण कारण परीक्षा का अभाव है। जिसे कौशल का मूल्यांकन नहीं होता, विद्यार्थी उस में रुचि नहीं लेते। स्कूलों द्वारा आयोजित की जाने वाली परीक्षाओं में 'वाचन' की परीक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए।

1. मौन वाचन के बारे में लिखिए।

   .....

   .....

2. सामूहिक वाचन को परिभाषित कीजिए।

   .....

   .....

1.3.7 सारांश

इस अध्याय में हमने वाचन कौशल के अर्थ के बारे में जानकारी प्राप्त की। वाचन मन्दता के क्या कारण है और इसका निवारण कैसे कर सकते हैं। इसके बारे में भी संक्षिप्त में पढ़ा। वाचन कौशल हमें अपने भावों, विचारों, अनुभवों को सरलतापूर्वक और स्पष्ट ढंग से व्यक्त करने के योग्य बनाता है।

1.3.8 स्वयं जांच अभ्यास

खाली स्थान भरो।

1. जब व्यक्ति मुखर व उच्चरित रूप से अर्थात् आवाज़ करते हुए पठन करता है जो उसे.....वाचन कहते हैं।
2. .....ने बिना अर्थ भाव ग्रहण किए हुए पढ़ने वालों की उपमा बोझ ढोने वाले गंदर्भ से दी है।

उत्तर : 1. व्यक्तिगत 2. महर्षि पतंजलि

1.3.9 अभ्यासात्मक प्रश्न

प्रश्न1. वाचन से क्या अभिप्राय है?

प्रश्न2. वाचन कितनी तरह का होता है?

प्रश्न3. वाचन मन्दता किसे कहते है?

प्रश्न4. वाचन मन्दता के कौन–कौन से लक्ष्ण है?

प्रश्न5. 'वाचन शिक्षण बालक की समूची शिक्षा का आधार स्तम्भ है।' वर्णन करें।
प्रश्न6. वाचन के विभिन्न प्रकार, उनके शिक्षण तथा शिक्षण विधि की प्रक्रिया लिखें।

1.3.7 सहायक पुस्तकें

1. हिन्दी शिक्षण– रघुनाथ सफाया, पंजाब किताबघर, जालंधर
2. हिन्दी शिक्षण– ज्योति खन्ना–धनपत राय एण्ड कं., दिल्ली
3. हिन्दी शिक्षण– भाटिया, शर्मा– टण्डन पब्लिकेशन्ज, लुधियाना
4. हिन्दी शिक्षण–सुरेश नायक, प्रतिभा ख़र्ब–टवेन्टी फस्ट सेंचुरी, पटियाला
5. मातृभाषा शिक्षण– के. क्षत्रिाया, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा
6. आधुनिक हिन्दी शिक्षण विधियां– भाटिया नारंग, प्रकाश ब्रदर्ज, लुधियाना

पाठ नं. 1.4

Converted into SLM : Dr. Sharmila

लेखन कौशल

भाषायी कौशल (घ) लेखन कौशल–अर्थ, लेखन प्रक्रिया, महत्व, सृजनात्मक लेखन की विधियां

1.4.1 उद्देश्य
1.4.2 भूमिका
1.4.3 लेखन प्रक्रिया
1.4.4 लेखन कौशल अथवा लिखित भाषा की उपयोगिता
1.4.5 सृजनात्मक लेखन की विधियां
1.4.6 सारांश
1.4.7 स्वयं जांच अभ्यास
1.4.8 अभ्यासात्मक प्रश्न
1.4.9 सहायक पुस्तकें

1.4.1 उद्देश्य

1. लेखन कौशल को परिभाषित कर सकेंगे।
2. लेखन कौशल की उपयोगिता बता पाएंगे।
3. सृजनात्मक लेखन की विधियां बता पाएंगे।

1.4.2 भूमिका

भाषा के मुख्य चार कौशल सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना में लेखन का विशेष महत्व है। लेखन अभिव्यक्ति का सशक्त साधन है। कथित भाषा में ध्वनियों का प्रयोग होता है तथा लिखित भाषा में अक्षरों अथवा वर्णों का। प्रत्येक लिखित भाषा में हर ध्वनि के लिए कोई न कोई चिन्ह निश्चित होता है। जिसे वर्ण अथवा अक्षर कहते हैं। वर्ण से शब्द तथा शब्द से वाक्य बनते हैं। मानव अपने विचार भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त करता है। जब वह किन्हीं विशिष्ट ध्वनियों का उच्चारण करके अपने विचार प्रकट करता है तो वह भाषा के मौखिक रूप का प्रयोग करता है। जिस समय वह लिपि के माध्यम से विचारों को प्रकट करता है, तो उसे लिखित भाषा कहा जाता है। वाचन से लेखन अधिक कठिन होता है। इसलिए पढ़ने की शिक्षा लिखने की शिक्षा से पहले

दी जानी चाहिए। लिखित भाषा की शिक्षा लिखने की शिक्षा से पहले दी जानी चाहिए। लिखित भाषा के माध्यम से अवश्य ही भाषा उपयोगी है किन्तु लेखन के नियमों का प्रयोग सावधानीपूर्वक करना चाहिए।

लेखन कौशल का शाब्दिक अर्थ है अपने विचारों को लेखन लिपि द्वारा लिखकर व्यक्त करना। व्यक्ति चाहे जितना भी मौखिक तथा बोलचाल की भाषा में निपुण हो परन्तु लेखन कौशल के ज्ञान के बिना वह भाषा में दक्षता प्राप्त नहीं कर सकता। लेखन कौशल को सिखाने की प्रक्रिया शिक्षण है जो भाषा शिक्षण का अनिवार्य अंग है। भाषा के लिखित रूप को प्रकट करने वाले यह चिन्ह 'लिपि' कहलाते हैं अर्थात् भाषा को लिखने के साधन को लिपि कहते हैं। इस प्रकार भाषा प्रक्रिया में तीन सोपान निहित हैं– पहला विचार, दूसरा ध्वनियां और तीसरा लिपि। प्रत्येक भाषा की अपनी विशिष्ट लिपि होती है जिसको सीख कर मनुष्य अपने विचारों को लिखित रूप में प्रकट करने की क्षमता प्राप्त करता है। लिखने की क्षमता 'लेखन कौशल' कहलाती है। हिन्दी को लिखने के लिए 'देवनागरी लिपि' का प्रयोग होता है। हिन्दी की अपनी वर्णमाला है। प्रत्येक वर्ण की विशिष्ट बनावट है। मात्राएँ लगाने का विशिष्ट विधान है– विद्यार्थियों को इन सब का ज्ञान कराने के लिए लेखन कौशल का शिक्षण प्रदान किया जाता है।

1.4.3 लेखन प्रक्रिया

प्राय देखा गया है कि अध्यापक स्कूल में प्रवेश प्राप्त करने वाले बच्चे को लिपि सिखानी आरम्भ कर देते हैं। यह उचित प्रतीत नहीं होता। पढ़ने की अपेक्षा लिखना कुछ कठिन होता है। क्योंकि पढ़ने में अक्षरों की आकृति की पहचान की आवश्यकता होती है परन्तु लिखने में अक्षरों की आकृति को वैसे का वैसा बनाने की आवश्यकता होती है। इस में बच्चे की अंगुलियों को साधने की आवश्यकता होती है; उस के मस्तिष्क तथा स्नायुओं के बीच सन्तुलन स्थापित करना होता है और उस की क्रियात्मक योग्यता को धीरे–धीरे विकसित करना होता है। स्कूल में प्रविध होते ही बच्चे को तख्ती या कापी पर 'अ, आ, इ, ई' लिखने का आदेश दे देना अमनोवैज्ञानिक है। वस्तुते बच्चे को पहले शब्दों का ध्वन्यात्मक परिचय प्राप्त होना चाहिए। फिर उसे वाचन सिखाना चाहिए और उस के पश्चात् लिखना सिखाना चाहिए। प्राये देखा गया है कि बच्चा शब्दों का उच्चारण जल्दी सीख जाता है। वर्णों की पहचान भी जल्दी करने लगता है परन्तु लिखना सीखने में उसे अपेक्षाकृत अधिक समय लग जाता है। अतः बच्चे को लिखना सिखाने में जल्दबाजी से काम नहीं लेना चाहिए। इस का मतलब यह नहीं कि बच्चे को लिखना तब सिखाना चाहिए जब वह वाचन अच्छी तरह सीख जाए। इस का मतलब यह है कि जब बच्चों को वर्णों की पहचान हो जाए और वह कुछ कुछ पढ़ने भी लगे तब उसे 'लिखना' सिखाने का कार्य आरम्भ का देना चाहिए।

लेखन सिखाने की निम्नलिखित प्रक्रिया है–

(क) लिखने की तैयारी।
(ख) अक्षरों की रचना सिखाना।
(ग) शब्दों तथा छोटे–छोटे वाक्यों की रचना सिखाना।
(घ) लिखने का अभ्यास।

(क) लिखने की तैयारी – लिपि सिखाने की पहली अवस्था बच्चे को लिखने के लिए तैयार करना है। यह अवस्था तब से आरम्भ हो जाती है जब बच्चे के अक्षरों की आकृति की पहचान हो जाती है। अक्षरों की पहचान हो जाने के तत्काल पश्चात् बच्चे के हाथ में कलम या पैंसिल पकड़ा देना मनौविज्ञान के सिद्धान्त के विपरीत है। सब से पहले उसे विभिन्न साधनों की सहायता से लिखने के लिए मानसिक और शारीरिक तौर पर तैयार करना चाहिए। तैयारी की इस अवस्था में बच्चे की निम्नलिखित शक्तियों का विकास अपेक्षित है–

1. बच्चे में लिखने की रुचि उत्पन्न होनी चाहिए।
2. उस की निरीक्षण शक्ति का विकास होना चाहिए।
3. अंगुलियों की मासपेशियों में यथोचित सन्तुलन विकसित होना चाहिए।
4. स्नायुओं तथा मस्तिष्क में सहयोग विकसित होना चाहिए।
5. गत्यात्मक–योग्यता में वृद्धि होनी चाहिए ताकि बच्चा थोद्दी देर लिखने के पश्चात् थक न जाए।

लिखने की तैयारी के साधन – लिखने की तैयारी के लिए बच्चे में उपर्युक्त शक्तियों का विकास तभी हो सकता है जब मनोविज्ञानिक दृष्टिकोण से उचित साधनों का प्रयोग किया जाए। साधन बच्चों की मानसिक रुचियों के अनुकूल तथा विविधतापूर्ण होने चाहिए। ऐसे कुछ साधनों का नीचे सुझाव दिया जाता है–

(i) अनुकूल वातावरण का निर्माण – अनुकूल वातावरण बच्चों में निरीक्षण, जिज्ञासा तथा रुचि उत्पन्न करने में सहायक सिद्ध होता है। यह वातावरण बच्चों की मानसिक प्रवृत्तियों के अनुकूल होना चाहिए। बच्चे खिलौनों और रंगों से बहुत आकृष्ट होते हैं। इसलिए उन के अनुकूल वातावरण खिलौनों, रंग–बिरंगे चित्रों, चार्टों आदि का महत्वपूर्ण स्थान है। इन खिलौनों और चित्रों को देख कर एक तो उन की निरीक्षण शक्ति का विकास होता है और दूसरे खिलौनों को उठाने–रखने में उनकी स्नायु शक्ति भी विकसित होती है। खिलौनों और रंगीन चित्रों पर उन के नाम लिख देने से बच्चों को केवल नाम ही याद नहीं हो जाते बल्कि उन नामों में प्रयुक्त अक्षरों की आकृति की छाप भी उन के मन में अंकित हो जाती है। उदाहरण स्वरूप यदि 'अनार' के सुन्दर चित्र या चार्ट के नीचे बड़े–बड़े अक्षरों में 'अनार'

लिख दिया जाए तो इन अक्षरों की आकृति की छाप बच्चों के मन में अंकित हो जाएगी। अक्षरों का मन पर अंकित होना भी लिखने की मानसिक तैयारी है।

(ii) टेढ़ी–सीधी रेखाएं खींचने के प्रेरित करना – बच्चा क्रियाशील होता है। अपनी क्रियाशीलता को सन्तुष्ट करने के लिए वह प्राये तीन वर्ष की अवस्था में चाक या पैंसिल के साथ टेढ़ी–सीधी रेखाएं खींचनी आरम्भ कर देता है। उस की इस प्रवृत्ति पर कुद्ध नहीं होना चाहिए बल्कि उसे इस के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। उसे मोटा कागज देना चाहिए और उसे उस पर लकीरें खींचने के लिए प्रेरित करना चाहिए। स्लेट और स्लेटी का भी प्रयोग किया जा सकता है। टेढ़ी–सीधी रेखाये बनाने के एक तो उस की स्नायु–शक्ति में वृद्धि होती है और दूसरे उस की सृजनात्मक–प्रवृत्ति को सन्तुष्टि मिलती है।

(iii) अक्षरों पर अंगुली फेरना – बने बनाये अक्षरों पर अंगुली फेरने से बच्चे को अंगुली की रेखायें तथा गोलाइयां बनाने का अभ्यास होता है। इस के लिए अध्यापक चाक के श्याम–पट पर बड़े–**बड़े** अक्षर लिख कर बच्चे को उस पर अंगुली फेरने को कह सकता है। किसी धातु या धरती पर खुदे हुए अक्षरों पर भी बच्चे द्वारा अंगुली फिरवाई जा सकती है।

(iv) अक्षरों के आकार बनाना – अंगुलियों को अभ्यास प्रदान करने के लिए बच्चे से मिट्टी या रेत पर अक्षरों के आकार बनाये जा सकते हैं। इस के लिए अध्यापक को स्वयं श्यामपट्ट पर अक्षरों की आकृतियां बनानी चाहिएं और फिर बद्दी चौकी पर मिट्टी या रेत बिछा कर बच्चे को ऊंगुली से वैसी आकृतियां बनाने को कहना चाहिए।

(v) हवा में अक्षरों की आकृतियां बनवाना – अंगुली के साथ अक्षरों की आकृतियां बनाने के लिए कहा जा सकता है। इस से अंगुलियों की गत्यात्मकता का अभ्यास तो मिलता ही है साथ में अक्षरों की आकृतियों की पहचान भी दृचतर होती जाती है।

(vi) मोटे बीजों से अक्षर बनवाना – इस में पहले अध्यापक श्याम–पट्ट पर मोटे–मोटे अक्षर लिखता है और बच्चे उसे देखते है उस के पश्चात् उन्हीं अक्षरों के कार्ड बच्चों के सामने रखे जाते हैं और उन्हें कोई मोटे बीज दिये जाते हैं जिन की सहायता से उन्हें वे अक्षर बनाने को कहा जाता है। इस प्रकार की क्रियात्मक खेलों में बच्चों को बहुत आनन्द मिलता है और खेल में उन का मन, स्नायु तथा मस्तिष्क लिखने की तैयारी करता रहता है।

अध्यापक अपनी काल्पनिक शक्ति से नई–नई वस्तुओं तथा नये–नये साधनों द्वारा बच्चों को लिखने के लिए तैयार कर सकते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि तैयारी से पहले बच्चे को लिखना नहीं सिखाना चाहिए। उचित मानसिक तैयारी,

अंगुलियों की मांसपेशियों के वांछित विकास तथा स्नायुओं एवं मस्तिष्क के अभाव में बच्चों को लिखने में कठिनाई हो सकती है और यह कठिनाई लिखने के प्रति अरुचि भी उत्पन्न हो सकती है। अतः लिखना सिखाने से पहले लिखना सीखने की तैयारी करना अत्यन्त आवश्यक है।

(ख) अक्षरों की रचना सिखाना – लिखने की तैयारी कराने के पश्चात् बच्चे को अक्षरों की रचना सिखानी चाहिए। यह लिपि शिक्षण की ओर दूसरा महत्वपूर्ण कदम होगा। इसे लिपि–शिक्षण की दूसरी अवस्था भी कहा जा सकता है। इस अवस्था में अध्यापक का उद्देश्य बच्चों को विभिन्न साधनों और विधियों से अक्षरों की ठीक–ठीक रचना करना सिखाना है।

(i) अक्षर रचना सिखाने के साधन– अक्षर रचना सिखाने के कोई निश्चित साधन नहीं है। इस के लिए अध्यापक को अपनी कल्पना–शक्ति से काम लेना चाहिए और ऐसे साधनों का प्रयोग करना चाहिए जो सुलभ हों और विद्यार्थियों की रुचियों के अनुकूल हों। अच्छे पब्लिक स्कूलों में प्राये निम्नलिखित साधनों का प्रयोग किया जाता है –

1. कक्षा के चारों ओर दीवारों के साथ श्याम–पट्ट लगे रहते हैं। ये श्याम–पट्ट इतने ऊंचे रखे जाते हैं जहां तक बच्चों का हाथ आसानी के साथ पहुंच सकें। बच्चे इन्हीं श्यामपट्टों पर अपनी इच्छा के अनुसार रंग–बिरंगे चाक के साथ टेढ़ी– सीधी रेखायें और गोलाइयां बनाते रहते हैं।
2. बच्चों द्वारा रंगीन और चमकदार कागजों के अक्षर कटवाये जाते हैं।
3. बच्चों से रंग और तूलिका के माध्यम से भी अक्षर रचना सिखाई जाती है। इस में पहले अध्यापक अपने हाथ से एक पंक्ति में कुछ अक्षर समानुपात से लिख देता है और फिर बच्चे उसी का अनुसरण करते हुए अक्षर–रचना करते हैं।
4. बच्चों को छपे हुए अक्षरों की कापियां भी लगवाई जाती है। इन कापियों में ऊपर की पंक्ति में अक्षर छपे रहते हैं। फिर कुछ पंक्तियों व अक्षरों की रूप–रेखा बनी रहती है जिन पर बच्चे स्याही फेरते हैं। उस के पश्चात् कुछ पंक्तियां खाली होती हैं जिन में बच्चे अंगुलियों के संचालन के पूर्वाभ्यास का अनुसरण करते हुए स्वतन्त्रातापूर्वक लिखते हैं।

सर्व साधारण साधन – उपर्युक्त साधन पब्लिक स्कूलों में प्रयुक्त होते हैं इन स्कूलों में शुल्क काफी ज्यादा होता है और बच्चों के अभिभावकों में व्यय करने की क्षमता भी होती है परन्तु भारत की साधारण जनता इतने मंहगे साधनों का व्यय नहीं उठा सकती। उन के लिए तो ऐसा साधन चाहिए जो सस्ता भी हो और सुलभ भी। वे साधन हैं तख्ती, गाचनी, (चिकनी मिट्टी), सरकण्डे की कलम और काली स्याही। ये साधन प्राचीन काल से प्रयुक्त होते चले आ रहे हैं। आज भी अधिकतर इन्हीं

साधनों का प्रयोग होता है। ये सस्ते भी है और सुलम भी। इन की उपयोगिता भी कम नहीं।

(ii) लिखना सिखाने की विधियाँ– लिखना सिखाने की दूसरी अवस्था में अर्थात् अक्षर–रचना सिखाने के लिए कई विधियाँ प्रयोग की जाती हैं जिनमें अनुकरण विधि, संश्लेषण विधि, चित्र विधि, मॉन्टेसरी विधि, तुलना विधि आदि शामिल हैं।

नोटे– इन विधियों का विस्तृत वर्णन आगे दिया गया है।

(ग) शब्दों और वाक्यों की रचना सिखाना – देवनागरी की वर्णमाला लिखना सिखाने के पश्चात् शब्दों तथा वाक्यों को लिखना सिखाने का स्वाभाविक क्रम आता है। यह लिखना सीखने की तृतीया अवस्था है। इस व्यवस्था में बच्चे पहले वर्णों को मिला कर शब्द लिखना सीखते है; फिर छोटे–छोटे वाक्य लिखना सीखते हैं और तत्पश्चात् उनमें गद्यांश लिखने की योग्यता विकसित होने लगती है। अध्यापक को इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए कि बच्चों की लिखावट स्पष्ट, सुपाठ्य, सुन्दर और सुडौल हो। इस अवस्था में बच्चों को तख्ती से साथ–साथ कापी पर लिखना भी सिखाया जाता है। इस अवस्था में विद्यार्थियों की जैसी लिखावट बन जाती है, वही जीवन पर्यन्त उन के साथ चलती है। इसलिए उनमें लिखने की सही आदतों का निर्माण होना चाहिए। शब्दों और वाक्यों को लिखना सिखाने के लिए प्राये निम्नलिखित विधियों को अपनाया जाता है

(i) अनुलिपि
(ii) प्रतिलिपि
(iii) श्रुतलिपपि

(i) अनुलिपि – अनुलिपि से तात्पर्य है– किसी आदर्श लिखाई का वैसे का वैसा अनुकरण करना। प्रारम्भिक कक्षा में इस के लिए प्राये तख्ती का ही प्रयोग किया जाता है– यद्यपि पब्लिक स्कूलों में कापियों का प्रयोग होता है। साधारण स्कुलों में क्योंकि अक्षर लिखना सिखाने के लिए तख्ती का प्रयोग किया जाता है, इसलिए अनुलिपि के लिए भी शुरू–शुरू में तख्ती का प्रयोग किया जा सकता है। कुछ समय तक तख्ती पर अभ्यास करवाने के पश्चात् अनुलिपि के लिए मुद्रित कापियां भी लगवाई जा सकती है। इन कापियों के प्रत्येक पृष्ठ की पहली पंक्ति में कुछ शब्द आदर्श लिखावट में लिखे होते है। बच्चों को उन का अनुकरण करते हुए नीचे लिखने को कहा जाता है। इस कापी के पहले कुछ पृष्ठों पर शब्द लिखे होते हैं और बाद में छोटे–छोटे वाक्य लिखे होते हैं शब्दों को लिखने का अभ्यास कर लेने के पश्चात् वाक्यों को लिखते है। इस प्रकार वे शब्द और वाक्य लिखना सीखते हैं।

(ख) **प्रतिलिपि** – प्रतिलिपि अनुलिपि का ही विकसित रूप है। दोनों में अन्तर केवल इतना है कि अनुलिपि में बच्चों को मुद्रित कापी की ऊपर की पंक्ति में लिखे शब्दों और वाक्यों का अनुकरण करना होता है परन्तु प्रतिलिपि में किसी पुस्तक, पत्रा, पत्रिका आदि के गद्यांश को देख–देख कर लिखना होता है। अनुलिपि में शब्द उतने बड़े बनाने होते हैं जितने बड़े अनुलिपि में छपे होते हैं परन्तु प्रतिलिपि में ऐसा नहीं किया जाता ।

(ग) **श्रुतलिपि** – सुन कर लिखने को 'श्रुतलिपि' या 'श्रुतलेख' कहते हैं। इस में अध्यापक बोलता जाता है और विद्यार्थी लिखते जाते हैं। लिखा चुकने के पश्चात् अध्यापक विद्यार्थियों की अशुद्धियों को दूर करता है। अनुलिपि तथा प्रतिलिपि के पश्चात् श्रुतलिपि का प्रयोग लिखना सिखाने का आवश्यक क्रम है। कई अध्यापक प्रतिलिपि पर ही ज्यादा जोर देते रहते हैं और श्रुतलिपि की ओर बहुत कम ध्यान देते है। सम्भवतये ऐसा वे इसलिए करते हैं क्योंकि इसमें अशुद्धियों को ठीक करने का काम अपेक्षाकृत अधिक श्रम साध्य है। परन्तु इस की इतनी उपयोगिता है कि थोड़े से श्रम से बचने के लिए उस का प्रयोग न करना उचित प्रतीत नहीं होता।

(घ) **लिखने का अभ्यास** – लिपि में प्रवीणता प्राप्त करने के लिए 'अभ्यास' अत्यन्त आवश्यक है। यद्यपि लिपि–शिक्षण की उपर्युक्त तीनों अवस्थाओं में अभ्यास को भी स्थान प्राप्त है, परन्तु उन तीनों अवस्थाओं के पश्चात् 'अभ्यास' की ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है। उपर्युक्त तीनों अवस्थाओं का सम्बन्ध आरम्भिक कक्षाओं के साथ है परन्तु अभ्यास का सम्बन्ध उच्च कक्षाओं के साथ है। आरम्भिक कक्षाओं में विद्यार्थी विभिन्न विधियों तथा साधनों द्वारा अक्षर, शब्द तथा वाक्य लिखना सीख चुके होते हैं। इसलिए उच्च–कक्षाओं में उन्हें यह सब सिखाने की आवश्यकता नहीं होती। परन्तु 'अभ्यास' द्वारा पूर्वा शिक्षित को स्थिर बनाने की आवश्यकता बनी रहती है। इसलिए इसे चौथी अवस्था के अन्तर्गत रखा गया है। इस अवस्था में अध्यापक को ध्यान रखना होता है कि –

1. विद्यार्थियों की लिखने की अच्छी आदतों में किसी प्रकार की शिथिलता आये बल्कि निरन्तर अभ्यास से वे उन के लेखन का अनिवार्य तथा अभिन्न अंग बन जायें।
2. उन में गति तथा प्रवाह के साथ लिखने की योग्यता में वृद्धि हो।
3. उन की लिखाई शुद्ध, सुन्दर, स्पष्ट तथा आकर्षक बनी रहे। लिखाई के इन गुणों में यथा सम्भव विकास होता रहे। इस चौथी अवस्था में भी प्रतिलिपि तथा श्रुतलिपि को अपनाया जा सकता है। अध्यापक को चाहिए कि वह विद्यार्थियों से

सप्ताह में दो–तीन बार पुस्तक या किसी पत्रिाका में गद्यांश की प्रतिलिपि कराये। इसी प्रकार सप्ताह में एक दो बार श्रुत–लिपि भी करानी चाहिए।

1.4.4 लेखन कौशल अथवा लिखित भाषा की उपयोगिता अथवा महत्व

1. **दैनिक जीवन में उपयोगी–** व्यक्ति दैनिक कार्यों का व्यौरा मौखिक रूप से नहीं रख सकता। उन्हें सुचारु रूप से करने के लिए लिखित भाषा का प्रयोग करता है। लिखित भाषा द्वारा ही घर तथा कार्यक्षेत्रा में हिसाब–किताब का लेखा–जोखा रखा जा सकता है।
2. **दूरस्थ व्यक्ति से सम्बन्ध–** लिखित भाषा द्वारा दूर बैठे व्यक्ति से पत्राचार द्वारा विचार विमर्श किया जा सकता है। निस्संदेह दूरभाष द्वारा मौखिक अभिव्यक्ति के माध्यम से हम ऐसा कर सकते हैं लेकिन लेखन द्वारा हम उसे मूर्त रूप दे सकते हैं।
3. **ज्ञानार्जन में सहायक–** लिखित भाषा के माध्यम से प्रत्येक विषय का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। भाषा के लिखित रूप ने ज्ञान का क्षेत्रा विस्तृत कर दिया है। कहीं से किसी भी प्रकार की जानकारी लिखित रूप में प्राप्त की जा सकती है। प्राचीन भाषा, साहित्य, इतिहास, विज्ञान आदि को हम तक पहुँचाने का श्रेय लिखित भाषा को जाता है।
4. **ज्ञान को स्थायी रखने में सहायक–** विद्यार्थी विद्यालय में विभिन्न विषयों का ज्ञान प्राप्त करता है। प्रत्येक विषय को स्मरण रखना असंभव है। लेखन द्वारा ज्ञान को स्थायी रूप देकर विद्यार्थी प्रत्येक विषय की विस्तृत जानकारी प्राप्त करता है।
5. **भावी पीढ़ी के लिए ज्ञान का संरक्षण–** भाषा का लिखित रूप ज्ञान प्राप्ति का सशक्त साधन है तथा ज्ञान का संरक्षण कर उसे भावी पीढ़ी तक पहुँचाता है। लेखन ने हमारी सभ्यता संस्कृति का प्रवाहमान रखा है।
6. **अन्वेषण में सहायक–** प्रत्येक क्षेत्र में अन्वेषण व खोज कार्य लिखित भाषा पर निर्भर है। विज्ञान, भाषा, कला व अन्य कोई भी क्षेत्र की नई–नई खोजें लेखन द्वारा स्पष्ट की जाती हैं।
7. **मानसिक विकास–** लेखन कार्य के अध्ययन द्वारा विद्यार्थी का चिन्तन व मनन विकसित होता है जिससे वह स्वयं भी लेखन कार्य करने की ओर आकर्षित होता है। मानसिक विकास से विद्यार्थी का दृष्टिकोण व्यापक होता है।
8. **सामाजिक विकास–** समाज तथा देश के विभिन्न वर्गों के लोगों से सम्पर्क लेखन कार्य द्वारा बढ़ता है। पत्राचार इस कार्य में अहम भूमिका निभाता है। अतः लेखन से सामाजिक विकास बढ़ता है।

9. **भावात्मक विकास–** व्यक्ति जब अपने हर्ष, शोक, कृतज्ञता जैसे भावों को कहानी, कविता, निबन्ध पत्रा आदि के रूप में लिखकर अभिव्यक्त करता है तो उसमें आत्मिक संतोष उत्पन्न होता है। उससे व्यक्ति का भावात्मक विकास होता है।
10. **मूक व्यक्तियों के लिए अभिव्यक्ति का उत्तम साधन–**जो व्यक्ति बोल नहीं सकते या फिर मौन व्रत की अवस्था में व्यक्ति लेखन द्वारा अपना कार्य व्यवहार कुशलता से चला सकता है। उन्हें अपने विचार व्यक्त करने में बद्दी मदद मिलती है।
11. **भाषा का विकास–** भाषा के लिखित रूप से न सिर्फ अन्य विषयों का ज्ञान संभव है अपितु इससे भाषा का भी बखूबी विकास होता है। लेखन द्वारा भाषा को साहित्यिक भाषा का दर्जा प्राप्त हुआ है। शब्द भण्डार की उत्तरोत्तर वृद्धि का श्रेय भी भाषा के लिखित रूप को जाता है।
12. **समय का सदुपयोग–** व्यक्ति लेखन कार्य द्वारा अपने समय का सदुपयोग कर सकता है। इससे व्यक्ति की सृजनात्मक शक्तियाँ विकसित होती हैं। साहित्य रचना लेखन कार्य पर निर्भर करती है।
13. **व्याकरण शुद्धता का ज्ञान–** हमें भाषा को सही ढंग से बोलने तथा लिखने का ज्ञान व्याकरण से प्राप्त होता है। यहाँ तक कि मौखिक भाषा का शुद्ध उच्चारण लिखित भाषा पर निर्भर करता है। सन्धि, समास, उपसर्ग, परसर्ग आदि में शब्द निर्माण लिखित रूप से स्पष्ट किया जाता है जिसका प्रभाव शुद्ध रूप से स्पष्ट किया जाता है, जिसका प्रभाव शुद्ध उच्चारण पर पद्दता है।
14. **विषय व कार्य को प्रामाणिक रूप देने में सहायक–** किसी भी विषय अथवा कार्य की प्रामाणिकता लिखित रूप से मानी जाती है। 'बीत गई सो बात गई' यानि मौखिक रूप से किसी भी चीज का प्रभाव नहीं हो सकता। कानून व्यवस्था में विशेषकर लिखित रूप को ही प्रामाणिक मानते हैं।
15. **शिक्षण प्रक्रिया में सहायक–** प्रत्येक विषय का ज्ञान मौखिक रूप से न बताया जा सकता है और न ही विद्यार्थी उन्हें स्मरण कर सकता है। कक्षा में श्यामपट लेखन द्वारा शिक्षण सहज हो जाता है। भाषा, गणित, विज्ञान आदि विषयों का ज्ञान मौखिक रूप से संभव नहीं। अतः शिक्षण प्रक्रिया लिखित भाषा पर निर्भर करती है।
16. **मूल्यांकन में सहायक–** विद्यार्थियों ने विषयों का ज्ञान कहाँ तक अर्जित किया है? यदि मौखिक रूप से इसकी जाँच करें तो कुछ ही विद्यार्थियों के कुछ ज्ञान की जाँच कर पाएँगे जबकि लिखित भाषा द्वारा कम समय में अधिक विद्यार्थियों की जाँच की जा सकती है।

17. **कार्यलियों व व्यापार क्षेत्र में सहायक–** कार्यालयों तथा व्यापार क्षेत्रा में लेखा–जोखा मौखिक रूप से नहीं रखा जा सकता। बिना लेखन के कार्य व्यापार संभव नहीं।
18. **देश की विभिन्न गतिविधियों की जानकारी–** समाचार पत्रा, पत्रिकाओं द्वारा देश की विभिन्न गतिविधियों की जानकारी प्राप्त होती है इसका श्रेय लिखित भाषा के विकास पर जाता है।
19. **चरित्र निर्माण में सहायक–** बालक जब लिखित साहित्य में अच्छी शिक्षाप्रद कहानियाँ, उपन्यास, निबन्ध आदि पढ़ता है तो इसका अच्छा प्रभाव उसके चरित्रा पर पड़ता है। लिखित भाषा द्वारा वह अच्छे विचारों को संग्रह कर सकता है। जिन भावों की अभिव्यक्ति मौखिक रूप से नहीं होती उन्हें लिखित भाषा द्वारा सहज ही प्रकट किया जा सकता है।

अतः लिखित भाषा व्यक्ति के जीवन का अभिन्न अंग है।

1.4.5 सृजनात्मक लेखन की विधियां

सृजनात्मक लेखन की विधियां निम्नलिखित हैं –

1. **चित्रा विधि–** वर्णमाला के अक्षरों संबंधी चित्र बनाकर वर्ण सिखाए जा सकते हैं। अध्यापक श्यामपट्ट पर रेखाचित्र बनाकर दिखाए। इसमें बच्चे की स्वयं चित्र बनाने में रूचि पैदा होगी। संभव हो तो अक्षरों को ही चित्रा में परिवर्तित करके समझाया जाए जैसे– न से नल न्।

   नल से पानी निकलता दिखाया जाए।

चित्रड़ विधि में इस बात का ध्यान रखा जाए कि चित्रों से बच्चे परिचित हो तभी उनसे अक्षरों का संबंध जोद्द पाएंगे।

2. **अनुकरण विधि –** इस विधि के अनुसार शिक्षक पहले श्यामपट्ट पर या बच्चे की कापी अथवा तख्ती पर अक्षर लिख देता है। बच्चा उस के हाथ के परिचालन को देखता है, चॉक अथवा पैंसिल पकद्दने के ढंग को देखता है और अक्षर की आकृति को देखता है और फिर अनुकरण द्वारा स्वयं लिखने का प्रयास करता है। पैंसिल द्वारा लिखे गये अक्षरों पर कलम चलाना भी अनुकरण विधि का रूप है। अध्यापक पहले तख्ती पर पैंसिल से अक्षर लिख देता है और बच्चा उन अक्षरों पर स्याही के साथ कलम चलाता है। कुछ दिन इस प्रकार कलम चलाने के पश्चात् वह स्वतंत्रा रूप से लिखने की स्थिति तक पहुंच जाता है। उस की उंगुलियों को रेखायें तथा गोलाइयां बनाने का अभ्यास हो जाता है। जब शिक्षक को विश्वास हो जाता है कि बच्चा अपने आप लिख सकेगा तब वह केवल एक पंक्ति में अक्षर लिख देता है। बच्चा उन पर कलम से स्याही फेरता है और शेष तख्ती उन्हें देख देख कर (अनुकरण द्वारा) लिखता है।

3. **मांटेसरी विधि –** मांटेसरी विधि में अक्षरों की रचना के लिए लड़की अथवा गत्ते के बने हुए अक्षरों का प्रयोग किया जाता है। बच्चों को इन अक्षरों पर उंगली फेरने को कहा जाता है। इस से उस की उंगलियां सध जाती हैं और वह सरलतापूर्वक अक्षरों की रचना सीख जाता है। इस विधि में अक्षरों की कटी हुई आकृतियों पर पैंसिल फेरने की क्रिया भी करवाई जा सकती है। अक्षरों को काटने के लिए एक बद्दे गत्ते का प्रयोग किया जाता है। अध्यापक उस गत्ते पर वर्णों की बद्दी–बद्दी आकृतियां बना देता है। फिर बच्चों की सहायता से उन्हें कटवाया जाता है। अब गत्ते में कटी हुई आकृतियों के नीचे कागज रख कर बच्चों को पैंसिल चलाने को कहा जाता है। इस से बच्चों को हाथ से संचालन का अभ्यास भी होगा और नीचे कागज पर वर्णों की आकृति बन जाने से उन के मन–मस्तिष्क में वर्णों की पहचान स्थिर हो जायेगी। यह शिक्षण खेल में परिणत हो जाती है। परन्तु इस विधि का प्रयोग करने के लिए मांटेसरी शिक्षण प्रणाली का विशिष्ट प्रशिक्षण प्राप्त करना अत्यन्त आवश्यक है।

4. **संश्लेषण विधि –** इस विधि में 'सरल से जटिल की ओर' के शिक्षण–सूत्र के अनुसार पहले विद्यार्थियों को सरल रेखायें सिखाई जाती हैं, फिर विभिन्न प्रकार की गोलाई सिखाई जाती है और तत्पश्चात् उन्हें मिला कर अक्षर बनाने सिखाये जाते हैं। इस में अध्यापक पहले श्यामपट्ट पर सरल रेखाओं के नमूने पेश करता है और बच्चों को तख्ती पर वैसी रेखाएं बनाने को कहता है। सरल रेखाएं बनाने का अभ्यास कर चुकने के पश्चात् बच्चों से विभिन्न प्रकार की गोलाइयां बनवाई जाती है।

इस प्रकार निरन्तर अभ्यास करवाने के पश्चात् जब बच्चे विभिन्न प्रकार की रेखायें और गोलाइयां सफलतापूर्वक बनाने लगते हैं तब उन्हें आवश्यकतानुसार रेखाओं तथा गोलाइयों को मिला कर अक्षरों की रचना सिखाई जाती है। जैसे–

यदि बच्चे को 'अ' सिखाना है तो उसे पहले दो अर्द्धगोलाइयां 'उ' फिर दोनों अर्द्ध–गोलाइयों के बीच में से निकलती हुई छोटी सी रेखा 'उ', फिर उस छोटी रेखा के साथ एक लम्बी रेखा 'अ' और उस के पश्चात् एक आद्दी रेखा 'अ' बनाने को कहा जा सकता है। इस प्रकार दो अर्द्धगोलाइयों और तीन रेखाओं को आपस में मिलाने से 'अ' की आकृति बनाना सिखाया जा सकता है।

5. **पैस्टालॉजी की रचनात्मक विधि–** प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री पैस्टालॉजी ने अक्षरों का लेखन सिखाने के लिए रचनात्मक विधि का प्रतिपादन किया है। इस प्रणाली में भी 'संश्लेषणात्मक विधि' के समान सबसे पहले अक्षरों की आकृति को भिन्न

भिन्न टुकद्दों में तोद्द दिया जाता है और फिर उन को जोड़ कर अक्षर रचना सिखाई जाती है।

6. **तुलनात्मक विधि** – उपर्युक्त विधियां उन बच्चों के लिए उपयोगी हैं जिन्हें प्रारम्भिक कक्षा से देवनागरी की वर्णमाला सिखानी है। जिन प्रान्तों में हिन्दी को द्वितीय भाषा के रूप में पढ़ाना है, वहां ये विधियां उपयोगी सिद्ध नहीं होंगी। वहां प्राये तीसरी–चौथी कक्षा से हिन्दी पढ़ाई जाती है। इस कक्षा तक पहुंचते पहुंचते बच्चों को लिखने का अभ्यास हो चुका होता है और वे अपनी मातृभाषा की वर्णमाला को लिखना सीख चुके होते हैं। ऐसे बच्चों को तुलना–विधि द्वारा देवनागरी की वर्णमाला सिखानी चाहिए। यह 'ज्ञात से अज्ञात' के शिक्षण सूत्र पर आधारित है। भारत की अधिकांश लिपियां ब्राह्मी लिपि से निकली होने के कारण देवनागरी लिपि से मिलती–जुलती हैं, इस लिए उन के माध्यम से देवनागरी की लिपि सिखाने और सीखने में विशेष कठिनाई भी नहीं होती।

1. अनुकरण विधि को परिभाषित कीजिए।
   .....
   .....
2. संश्लेषण विधि से आप क्या समझते हैं।
   .....
   .....

1.4.6 सार

उपरोक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि लेखन कौशल भाषा शिक्षण या अधिगम के लिए अत्यन्त आवश्यक है। लेखन कौशल शिक्षण का अर्थ केवल इतना नहीं है कि विद्यार्थी अक्षरों, शब्दों तथा वाक्यों को लिखने लगे और उन में उत्तरोत्तर अपने विचारों एवं भावों को अभिव्यक्त करने की योग्यता का विकास हो, अपितु यह भी आवश्यक है कि वे सुन्दर एवं सुडौल अक्षरों की रचना करे और उचित गति से लेखन कार्य करें। लेखन कौशल में प्रवीणता प्रदान करने के लिए अभ्यास अत्यन्त आवश्यक है। अभ्यास के साथ–साथ विभिन्न विधियों का प्रयोग करके भी लेखन में सुधार लाया जा सकता है।

1.4.7 स्वयं जांच अभ्यास

खाली स्थान भरो

1. किसी आदर्श लिखाई का वैसे का वैसा अनुकरण करने को.....कहते हैं।
2. सुन कर लिखने को.....कहते हैं।

उत्तर : 1. अनुलिपि 2. श्रुतलेख

1.4.8 अभ्यासात्मक प्रश्न

प्रश्न1. लेखन–कौशल का विकास करने के उपायों पर चर्चा कीजिए।
प्रश्न2. लिखित भाषा मनुष्य के लिए किस प्रकार उपयोगी है? व्याख्या कीजिए।
प्रश्न3. लिखना सिखाना शुरू करने से पहले बच्चों को लिखने के लिए तैयार करना चाहिए। तैयारी के लिए आप किन साधनों का प्रयोग करेंगे?
प्रश्न4. लेखन सिखाने की विभिन्न विधियों के बारे में चर्चा कीजिए।
प्रश्न5. लेखन कौशल के लिए श्रुत लिपि का क्या महत्व है?

1.4.9 सहायक पुस्तकें

1. हिन्दी शिक्षण विधियां – शर्मा, भाटिया – टण्डन पब्लिकेशन्ज, लुधियाना
2. हिन्दी शिक्षण – ज्योति खन्ना – धनपत राय एण्ड कं., दिल्ली
3. हिन्दी भाषा शिक्षण – सुरेश नायक – टवेन्टी फस्ट सैंचुरी, पटियाला
4. हिन्दी शिक्षण – रामशरण पाण्डेय – विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा

पाठ नं॰ 1.5
लेखिका : डॉ. सुधा सिंह
Converted into SLM : Dr. Sharmila

गद्य शिक्षण : अभिप्राय, सोपान एवं विधियाँ

1.5.1 उद्देश्य
1.5.2 भूमिका
1.5.3 गद्य का अभिप्राय
1.5.4 गद्य–शिक्षा के सोपान
1.5.5 गद्य शिक्षण के सोपान
1.5.6 गद्य शिक्षण के अंग
1.5.7 कविता की कुछ सम्पूर्ण परिभाषाएं
1.5.8 कविता का स्वरूप
1.5.9 कविता का प्रयोजन
1.5.10 कविता के प्रकार
1.5.11 कविता की शिक्षा के उद्देश्य
1.5.12 कविता शिक्षण की प्रणालियां या विधियाँ
1.5.13 कविता शिक्षण के सोपान
1.5.14 कविता पठन में रूचि उत्पन्न के साधन
1.5.15 सारांश
1.5.16 स्वयं जांच अभ्यास
1.5.17 अभ्यासात्मक प्रश्न
1.5.18 सहायक पुस्तकें

1.5.1 उद्देश्य

(i) गद्य को परिभाषित कर सकेंगे।
(ii) गद्य शिक्षण के सोपान बता पाएंगे।
(iii) गद्य शिक्षण के अंग के बारे में बता पाएंगे।
(iv) कविता के स्वरूप को परिभाषित कर सकेंगे।
(v) कविता के प्रकारों में अन्तर स्पष्ट कर सकेंगे।
(vi) कविता शिक्षण की विधियों के बारे में बता पाएंगे।
(vii) कविता पठन में रूचि उत्पन्न कर सकेंगे।

1.5.2 भूमिका

स्वतन्त्रता के पश्चात्त, साहित्य की मुख्य प्रवृति गद्य की बनी है। वर्तमान काल को गद्य–काल की संज्ञा दिया जाता है। गद्य रचना में विविधता है। विज्ञान हो या राजनीति वाणिज्य हो या अर्थशास्त्र सामाजिक ज्ञान हो या मनोविज्ञान, धर्म हो

या नीति शास्त्र सभी गद्य के माध्यम से समझे और समझाए जा सकते हैं। व्यक्गित, सामाजिक, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय कार्य व्यापार गद्य के माध्यम से सम्पन्न हो रहे हैं। भाषा की शिक्षा कविता शिक्षण के बिना अपूर्ण मानी जाती है। मानव सौन्दर्य–प्रिय प्राणी है। जब वह अपनी अनुभूति को सरल और सरस ढंग से व्यक्त करता है तो उसकी वाणी में मधुरता का संचार होता है। सुनने वाले को एक अद्‌भुत आनन्द की प्राप्ति होती है। विद्वानों ने इसे कविता की संज्ञा दी है।

कविता क्या है?

कविता शिक्षण के सम्बन्ध में विचार करने से पहले 'कविता क्या है' इस पर विचार कर लेना चाहिए। अनेक विद्वानों ने अपने ढंग से कविता की परिभाषा दी है परन्तु फिर भी इसकी कोई एक सर्वसम्मत परिभाषा नहीं मिलती। वास्तव में कविता एक सौन्दर्यानुभूति है।, इसका आस्वादन किया जा सकता है इसे परिभाषा में बांधना एक कठिन कार्य है।

1.5.3 गद्य का अभिप्राय :-

गद्य शब्द संस्कृत की 'गद्'' धातु से व्युत्पन्न हुआ है। जिसका अर्थ है स्पष्ट कहना। जहाँ कविता में भाव को स्पष्ट न कहकर व्यंजना इत्यादि से प्रकट किया जाता है वहाँ गद्य में भाव को स्पष्ट और सरल विधि से प्रकट किया जाता है। संस्कृत के विद्वानों ने छंदहीन रचना को गद्य कहा है। आचार्य विश्वनाथ के अनुसार – छन्द–बन्ध–हीन शब्दार्थ योजना को गद्य कहते हैं। जैसे :–

वृतगंधोज्झितं गद्यम् – साहित्य दर्पण

अंग्रेजी साहित्य में गद्य का पर्याय 'प्रोज' (Prose) शब्द है। इसका अर्थ स्पष्ट करते हुए कोशकार लिखते है :– Prose - 1. straight, direct, unadorned speech. 2. Language spoken or written as in ordinary, usage, without metre or rhyme. अर्थात् स्पष्ट तथा अनलंकृत भाषा में कही गई बात अथवा छन्द रहित रूप में मौखिक या लिखित रूप में सामान्य ढंग से कही गई बात गद्य है।

अरबी तथा उर्दू में गद्य को नस्र अर्थात 'इबारत' या 'नज्म का उल्टा' कहा गया है।

संक्षेप में 'गद्य' को सभी भाषाओं में – 'सामान्य भाषा में कही गयी बात माना गया है। बौद्धिक युग की पहचान हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल गद्य काल के नाम से भी जाना जाता है। यह केवल बौद्धिक सूचनात्मक, नीरस रचना मात्र नहीं है वरन् इसमें भावात्मक, रसात्मक सरस रचनाएँ उपलब्ध है। गद्य की विभिन्न विधाएं उसे रोचक बनाती है। निबन्ध, कहानी, उपन्यास, नाटक, यात्रावृतान्त, संस्मरण, आत्मकथा, जीवनी, पत्र–डायरी लेखन जैसी विधाएं साहित्य की श्री–वृद्धि के साथ–साथ व्यक्तिगत अभिरूचियों को तुष्ट करती है। मानव जीवन में गद्य के महत्त्व एवं उपयोग देखते हुए, इसके निम्न उद्देश्य है।

(1) छात्रों में गद्य के प्रति अभिरूचि उत्पन्न करना।
(2) छात्रों के शब्द–भंडार एवं सूक्ति–भंडार में वृद्‌धि करना।
(3) शुद्‌ध उच्चारण की योग्यता प्रदान करना
(4) छात्रों को वाचन एवं पठन में निपुण बनाना।
(5) छात्रों को भाषा की लिपि का ज्ञान देना।
(6) अध्ययन के प्रति रूचि उत्पन्न करना।
(7) उचित गति, आरोह–अवरोह के साथ सस्वर एवं मौखिक पठन में कुशल बनाना।
(8) लिखित सामग्री को पढ़कर अर्थ ग्रहण करने की शक्ति बढ़ाना।
(9) गद्य की विभिन्न शैलियों का ज्ञान देना।
(10) उनकी बोध–शक्ति, कल्पना–शक्ति एवं विवेचन–शक्ति का विकास करना।
(11) उनकी निरीक्षण–शक्ति का विकास करना तथा पठित अंश की समीक्षा करने की योग्यता उत्पन्न करना।
(12) व्यावहारिक ज्ञान में वृद्‌धि करना।

(13) मुहावरों, कहावतों तथा लोकोक्तियों का सही ज्ञान देना।
(14) उनकी रचनात्मक एवं सृजनात्मक शक्ति का विकास करना।
(15) मानसिक, तार्किक एवं बौद्धिक शक्तियों का विकास करना।
(16) साहित्यिक रचनाओं का सृजन करने के लिए रूचि उत्पन्न करना।
(17) छात्रों में विभिन्न प्रकार के गुणों का विकास करना।

1.5.4 गद्य-शिक्षा के सोपान :-

गद्य पाठों को कैसे पढ़ाना चाहिए? इस समस्या को हल करने का प्रयत्न बहुत से शिक्षा–शास्त्रियों ने किया और एक नई प्रणाली का निर्माण करने की चेष्टा की। हर्बार्ट और उनके शिष्य झिलर, वुल्हेम, रेन् जैसे शिक्षा शास्त्रियों ने उसकी रूपरेखा तैयार की। 'हर्बार्टै–पद्धति' का जिस अति उत्साह से प्रचार किया गया, उसकी प्रतिक्रिया में उसकी उतनी ही कटु आलोचना भी की गई फिर भी उसके मूल सिद्धान्तों को चारों ओर अपनाया गया। हर्बार्ट के सिद्धान्तों में स्पष्टता, विचारों का साहचर्य, तर्कशुद्ध संगति, उपयोजन आदि का समावेश था। इस रूपरेखा में आवश्यकतानुसार बदल करके झिलर आदि उनके शिष्यों ने नई रूपरेखा बनाई, जिसे 'हर्बार्ट की पंचपटी' नाम से पुकारा जाता है। आजकल प्रशिक्षण महाविद्यालय के छात्र इसी पद्धति से पाठ पढ़ाते हैं। हर्बाट की पंचपटी निम्नप्रकार है :–

(1) अ) प्रस्तावना
ब) हेतुकथन
(2) विषय–विवेचन
(3) संकलन या आवृत्ति
(4) उपयोजन
(5) स्वाध्याय, गृहकार्य

अ) प्रस्तावना / प्रेरणा

प्रस्तावना हर एक पाठ का आवश्यक अंग है। इसकी सफलता पर अध्यापक की आधी सफलता निर्भर रहती है। इसका मुख्य उद्देश्य छात्रों को विषय के प्रति आकृष्ट कर लेना है। पाठ के प्रति छात्रों के मन में जिज्ञासा पैदा करना है। विभिन्न स्तरों पर प्रस्तावना का विषय भिन्न होता है। प्राथमिक स्तर पर वार्तालाप की सहायता से प्रस्तावना की जाती हैः माध्यमिक स्तर पर कहानी तथा विषय से सम्बन्धित कई प्रश्नों की सहायता से प्रस्तावना की जाती है। इसमें पूर्व ज्ञान के अन्तर्गत अन्तिम प्रश्न ऐसा होना चाहिए जो पाठ के उद्देश्य कथन से सहज सम्बन्ध जोड़ सकें । प्रस्तावना के द्वारा पाठरूपी भवन में प्रवेश किया जाता है। दूसरे शब्दों में छात्रों के पूर्व ज्ञान के आधार पर विषय के साथ सहज सम्बन्ध स्थापित किया जाता है। प्रस्तावना निम्न प्रकार से की जाती हैं :–

(1) प्रश्नोत्तर प्रणाली द्वारा
(2) लेखक के परिचय द्वारा
(3) किसी घटना वर्णन द्वारा
(4) शिक्षोपकरणों द्वारा
(5) पूर्व कथन द्वारा

प्रस्तावना सरल, स्पष्ट, रूचिकर और बच्चों के पूर्वज्ञान पर आधारित होनी चाहिए। इसके लिए 5 मिनट समय काफी है।

ब) हेतु तथा उद्देश्य कथन

प्रस्तावना का अन्तिम वाक्य उद्देश्य कथन से जुड़ा हुआ रहना चाहिए। उद्देश्य कथन की भाषा सरस, मोहक, प्रवाहपूर्ण, आकर्षक एवं संक्षिप्त होनी चाहिए।

(2) विषय-विवेचन

विषय–विवेचन के अन्तर्गत प्रथमतः अध्यापक द्वारा भावपूर्ण आरोह–अवरोह के साथ पाठ का प्रकट वाचन होना चाहिए। विषय को सुस्पष्ट और सुग्राह्य तथा सुसंगत रूप से बताना ही 'विषय–विवेचन' कहलाता है। अंग्रेजी में कहा है–

'' Presentation is exposition i.e. setting out matter, generally new matter, in a clear and comprehensible form''.

अध्यापक द्वारा सस्वर वाचन होने के बाद पठित अंश पर दो या तीन केन्द्रीय सवाल प्रस्तुत करके उनका जवाब ढूँढने के लिए छात्रों को 5 मिनट तक मौन वाचन देना चाहिए और प्रश्नों के उत्तर पाने के बाद अध्यापक को पाठ की पूरी चर्चा छात्रों के समवेत निम्न प्रकार से करनी चाहिए –

पाठ में आए हुए क्लिष्ट, जटिल शब्द तथा प्रसंगों का सरस वर्णन करने के लिए योग्य चित्र, प्रतिकृति, रेखाचित्र, वस्तु, अग–प्रत्यंगों का संचालन करके दिखाना चाहिए। साथ ही साथ पर्याय शब्द, विलोम शब्द, संधि–विच्छेद, समास–विग्रह, उपसर्ग अलग करके अर्न्तकथा, व्याख्या तथा शब्द–उत्पत्ति द्वारा पाठ का सही विवेचन छात्रों के स्तरानुकूल करना चाहिए। पाठ योजना में जिस प्रकार ढाँचे बनाए हुए होते हैं उसी प्रकार एक ढाँचा स्पष्ट करने के बाद उससे सम्बन्धित एक या दो सवाल उसी वक्त पूछने चाहिए। 45 मिनट की अवधि में इसके लिए 25 से 30 मिनट का समय देना चाहिए। अध्यापक की निपुणता पर विषय–विवेचन प्रभावी बन सकता है। उसे सुयोग्य बनाना उतना सरल नहीं है। इसलिए इस सोपान को कई विद्वानों ने पाठ का 'हृदय' माना है।

(3) संकलन/पुनरावलोकन

पाठ में जो भी पढ़ाया जाये, उस पढ़ाए गए पाठयांश का संकलन किया जाता है संकलन का अर्थ है, – पाठ की पुनर्चर्चा। और वह भी विद्यार्थियों की सहायता से। यह अध्यापक कई आकर्षक सवाल पूछकर विद्यार्थियों को पाठ कहाँ तक ध्यान में आया है, इसके अन्दाज़ा लगा सकता है।

(4) उपयोजन

जिस पाठ का अध्यापन किया जाता है, उसका उपयोजन विद्यार्थी किस तरह करते हैंः बल्कि अच्छी तरह से करते हैं या नहीं उसका सबूत यहाँ मिलता हैं। विषय के अनुसार उपयोजन का स्वरूप बदलता रहता है। भाषा के पाठों में इसका स्वरूप निम्नप्रकार होता है –

(1) गद्यपाठ में विद्यार्थियों द्वारा पाठ का पठन।
(2) पद्यपाठ में विद्यार्थियों द्वारा व्यक्तिगत और सामूहिक कविता पठन या गायन।
(3) कहानी में विद्यार्थियों द्वारा कहानी कथन।
(4) निबंध में विद्यार्थियों द्वारा निबंध लेखन।
(5) व्याकरण में विद्यार्थियों द्वारा सिद्धान्तों के उदाहरण प्रस्तुत करना।
(6) प्रश्नोत्तर प्रणाली द्वारा।

(5) मूल्यांकन, स्वाध्याय या गृहकार्य -

उपयोजन के बाद विविध प्रकारों से पाठ का मूल्यंकन किया जाता है जिसमें कठिन शब्दों का अर्थ बताकर अपने अपने वाक्यों में प्रयोग करनाः समान या विरूद्ध अर्थवाले शब्द बताना, संदर्भो का स्पष्टीकरण करना, रिक्त स्थानों की पूर्ति करना आदि।

पाठ पूर्ण होने के बाद छात्रों को घर पर करने के लिए जो काम दिया जाता है, उसे स्वाध्याय कहते हैं। यहाँ छात्रों से स्वयं स्वतंत्र रूप से घर पर काम करने की अपेक्षा की जाती है। 'स्वाध्याय' को गृहकार्य (होमवक्र) भी कहते हैं।

आजकल 'स्वाध्याय' हँसी – दिल्लगी का काम बन गया है। क्योंकि स्वाध्याय देने वाले अच्छी तरह से दे भी नहीं पाते और स्वाध्याय करने वाले विद्यार्थी भी स्वयं सोचकर तथा पढ़कर नहीं करते। किसी होशियार विद्यार्थी का देखकर लिख लाते हैं। इससे छात्रों को जो ज्ञान स्थायी रहने के लिए उपयोगी है वह नहीं मिल पाता। स्वयं स्वाध्याय करने से ज्ञान प्राप्ति होती है। ज्ञान–प्राप्ति द्वारा छात्र अपना विकास कर सकते हैं। छात्र अधिकाधिक स्वावलम्बी बनते हैं। अपनी शक्तियों को आजमाने का मौका उन्हें मिलता है। उसकी कार्य शक्ति काम में लाई जा सकती है। वह आत्म–विश्वास विकसित कर सकता है और कई दिन के बाद स्वयं अपने आप अध्ययन करने में समर्थ हो जाता है।

1.5.5 गद्य शिक्षण के सोपान :-

-गद्य शिक्षण की विधियाँ :-

साहित्य की प्रत्येक विद्या को पढ़ाने के लिए सही या उपयुक्त विधि का चुनाव आवश्यक है। यह विधि छात्रों के बौद्धिक स्तर, विषय-वस्तु तथा उद्देश्य आदि को ध्यान में रखकर निश्चित किया जाना चाहिए। गद्य-शिक्षण की मुख्य विधियाँ निम्नलिखित हैं :-

(1) सूक्ष्म अध्ययन (इंटेसिव स्टडी)

(2) स्थूल अध्ययन या अतिरिक्त अध्ययन (एक्सटेंसिव स्टडी)

गद्य की इन विधियों का अध्ययन इन्हें विभिन्न अंगों में बांट कर किया जा सकता है। गद्य शिक्षण के अंग निम्नलिखित है :-

1.5.6 गद्य शिक्षण के अंग - सूक्ष्म अध्ययन के लिए गद्य शिक्षण को तीन भागों में बांटा जा सकता है -

(1) वाचन (2) व्याख्या (3) विचार विश्लेषण

(1) वाचन : प्राथमिक कक्षाओं में वाचन कौशल ही बड़ी कक्षाओं में स्वाध्याय का रूप धारण करता है। वाचन शिक्षण को निम्नलिखित सोपानों में विभाजित किया जा सकता हैं :–

क – अध्यापक द्वारा आदर्श पाठ
ख – विद्यार्थियों द्वारा अनुकरण
ग – विद्यार्थियों द्वारा व्यक्तिगत पाठ
घ – विद्यार्थियों द्वारा मौन पाठ

'मौन पाठ पढ़ाने से पूर्व अथवा बाद में' इस को विद्यार्थी द्वारा पढ़े जाने वाले विषय को मानना चाहिए। यदि पठन सामग्री द्रुतपाठ के लिए है, भाव सरल है, या पाठ को पहले पढ़ा दिया गया है तो मौन पाठ पहले भी करवाया जा सकता है। किन्तु गहन विषय पर पहले ही मौन पाठ करना विद्यार्थी के लिए विषय को अरूचिकर बना सकता है। बहुत सम्भव है कि विद्यार्थी अध्ययन से पूर्व ही किसी बिन्दु पर गलत धारणा बना ले और बाद में उसका सुधार भी नहीं करे। इसलिए गहन विषय को अध्यापक द्वारा स्पष्ट करने के पश्चात मौन पाठ आवश्यक है। साथ ही मौन पाठ पुस्तकालय के अध्ययन की पृष्ठभूमि तैयार करता है।

(2) व्याख्या : गद्य वाचन के बाद विषय की व्याख्या की जाती है। वाचन को यदि पाठ का वाह्य पक्ष मान ले तो व्याख्या पाठ का भाव पक्ष या आन्तरिक पक्ष है। गद्यांश की व्याख्या करते समय मुख्यतः निम्न बातों को स्पष्ट करना होता है :–

क – शब्दों की व्याख्या।
ख – मुहावरों, लोकोक्तियों, वाक्यांशों तथा सूक्तियों की व्याख्या।
ग – वाक्यों की व्याख्या।

(क) शब्दों की व्याख्या -

गद्य शिक्षण में प्रयुक्त शब्दों का अर्थ स्पष्ट करते समय उन्हें उनकी मूल प्रकृति के अनुसार ग्रहण करना चाहिए। जैसे भाषा कौशल के आधार पर, भाषा के विकास के आधार पर, व्याकरणिक स्परूप के आधार पर, शब्द की प्रकृति के आधार पर।

(ख) मुहावरों, लोकोक्तियों, वाक्यांशों तथा सूक्तियों की व्याख्या :-

इनका अर्थ स्पष्ट करने के लिए इन्हे वाक्य में प्रयोग कर, अर्न्तकथा सुना कर लिया जा सकता है। छात्रों की रूचि जाग्रत करने के लिए मुहावरा कोश, लोकोक्ति कोश आदि पढ़ने की सलाह दी जा सकती है।

(ग) वाक्यांशों की व्याख्या :-

गद्यांशों में अनेक ऐसे वाक्यांश होते हैं जिनका भाषा में आलंकारिक प्रयोग की दृष्टि से महत्व होता है। न तो ये मुहावरे होते हैं और न सामान्य वाक्य। ऐसे वाक्यों के व्यंजना भाव को समझाना चाहिए।

(3) वाक्यों की व्याख्या तथा विचार विश्लेषण :-

वाक्य भाषा की सबसे छोटी सार्थक इकाई मानी गई है। वाक्य जिस समय मिश्रित या संयुक्त होता है इसे समझने में कठिनाई होती है। ऐसी अवस्था में वाक्य खण्ड करके अर्थ स्पष्ट करना चाहिए। पढ़ाते समय वाक्य का अर्थ स्पष्ट करने के लिए निम्नलिखित उपाय किए जा सकते है :–

(क) वाक्य को भाव के अनुकूल पढ़ना

(ख) विराम चिह्न प्रश्नवाचक चिह्न, विस्मयादि बोधन चिह्न को ध्यान में रख कर पढ़ना चाहिए। ऐसा नहीं पढ़ने पर लेखक का सन्देश श्रोता के पास विकृत होकर पहुंचता है।

(ग) वाक्य विच्छेद करना।

(घ) अर्न्तकथा स्पष्ट करना।

(ङ) रचना की पृष्ठभूमि स्पष्ट करना।

गद्य हमारे जीवन के सबसे नजदीक है। उपर लिखो विधि से गद्य की शिक्षा देने से विद्यार्थी को गद्य ग्रहण करने में सहायता होगी। अध्यापक का प्रयास विद्यार्थी की रूचि गद्य पाठन में बढ़ाने की होनी चाहिए। इसके लिए अध्यापक अपने बुद्धि कौशल से बेहतर परिणाम प्राप्त कर सकता है।

1.5.7 कविता की कुछ महत्त्वपूर्ण परिभाषाएं

(क) भारतीय दृष्टिकोण :

भारतीय विद्वानों ने समय समय पर कविता की अनेक परिभाषाएं दी हैं। उनमें से कुछ एक का वर्णन नीचे दिया जाता है :–

1. आचार्य मम्मट के अनुसार –
   'शब्दार्थो सहितौ काव्यम्' अर्थात् शब्द और अर्थ के संयोग को काव्य कहते है।
2. आचार्य कुन्तल ने बक्रोवित को काव्य की आत्मा माना है। यथा – बक्रोवित : काव्य जीवितम्
3. वामन ने रीति को ही काव्य की आत्मा माना है।
   जैसे – 'रीतिरात्मा काव्यस्य'
4. पण्डित जगन्नाथ के अनुसार, रमणीय अर्थ के प्रतिपादन करने वाले शब्द को काव्य कहते है। रमणीयार्थ प्रति पादकः शब्दः काव्यम्।
5. कविराज विश्वनाथ ने अपने प्रख्यात ग्रंथ ''साहित्य दर्पण'' में कविता की परिभाषा इन शब्दों में दी हैः–
   ''वाक्यम् रसात्मकम् काव्यम्''
   अर्थात रस से युक्त वाक्य ही 'काव्य' है।

6. आचार्य राम चन्द्र शुक्ल के शब्दों में, ''जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञानदशा कहाती है उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था रसदशा कहाती है। ''हृदय की इसी मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द विध ाान करती आई है उसे कविता कहते हैं।''

7. जयशंकर प्रसाद के अनुसार – 'काव्य आत्मा की संकल्पनात्मक अनुभूति है, जिसका सम्बन्ध विश्लेषण, विकल्प और विज्ञान से नहीं है।

8. डा. श्याम सुन्दर दास के अनुसार, ''कलात्मक रीति से सजी हुई भाषा जिसमें भावों का व्यंजन होता है'' कविता कहलाती है।

9. बाबू गुलाब राय ने कविता की व्याख्या इस प्रकार की है–
''काव्य संसार के प्रति कवि की भाव प्रधान मानसिक प्रतिक्रियाओं की कल्पना के ढांचे में ढली हुई श्रेय की प्रेम रूपा प्रभावोत्पादक अभिव्यक्ति है।''

(ख) पाश्चात्य दृष्टिकोण

जानसन (Johnson) के अनुसार ''कविता छन्दोमय रचना (Metrical Composition) है।''

1. **मिल्टन** (Milton) ने कविता को ''साल ऐन्द्रिय एवं उत्तेजनापूर्ण माना है – (Poetry is simple sensuous and possionate)
2. **कार्लाइल** (**Carlyle**) ने संगीतमय विचार को ही कविता माना है – (Poetry is a musical thought)
3. **मैथ्यू आर्नोल्ड** (Mathew Arnold) के मतानुसार ''कविता मूल में जीवन की आलोचना है।'' (Poetry at bottom is the criticism of life)
4. **वर्ड्सवर्थ** (Words Worth) ने कविता को ''शांति के समय स्मरण किए गये प्रबल मनोवेगों का स्वछन्द प्रवाह माना है। (Poetry is the spontaneous overflow of powerful Feelings)
5. **कालरिज** (Coleridge) के अनुसार, ''कविता उत्तमोत्तम शब्दों का उत्तमोत्तम क्रम विधान है। (Poetry is the last Words in the best order)

भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टिकोणों के आधार पर कविता के अन्तर्गत निम्नलिखित बातें निहित हैं :–

1. कविता में विचारों की अपेक्षा भावों की अधिक प्रधानता होती है।
2. यह जीवन की आलोचना है। जीवन के सुन्दर चित्रण मे ही कविता का आकर्षण है।
3. कविता कल्पना प्रसूता होती है यह कवि की कविता का साधारण गुण है।
4. कविता कल्पना से युक्त भावों का छन्दोबद्ध वर्णन है।
5. इसकी भाषा संगीतमय होती है।
6. कविता के पाठ से आनन्द की अनुभूति होती है। इसका अलौकिक आनन्द ही काव्य की आत्मा है।
7. कविता में कल्पना तत्त्व, भाव तत्त्व, शैली तत्त्व एवं बुद्धि तत्त्व मुख्य होते है।

1.5.8 कविता का स्वरूप

(i) कविता में अनुभूति की प्रधानता होती है।
(ii) कविता में रस प्रधान होते है। इसीलिए रसयुक्त वाक्य को कविता कहा गया है।
(iii) कविता की भाषा भावानुकूल होती है। उसमें भावों को अभिव्यक्त करने की क्षमता होनी चाहिए।
(iv) कविता में सत्य की अनुभूति होती है, सुन्दर की अभिव्यक्ति होती है और शिव की भावना होती है। इसीलिए काव्य में सत्य–शिवं– सुन्दरम् का विशेष महत्व है।
(v) कविता की हृदय गति संगीत है।
(vi) सच्ची कविता में समन्वय की प्रवृति होती हैं। उससे मानव जाति का कल्याण होता है।
(vii) कविता में स्थायित्व होता है कविता कवि को अमरत्व प्रदान करती है।

(viii) कविता समाज का दर्पण होती है।

(ix) कविता समाज को सही दिशा प्रदान करती है।

(x) कविता गहन तथा प्रतीकात्मक भी होती है।

1.5.9 कविता का प्रयोजन

कविता की विभिन्न परिभाषाएं कविता के प्रयोजन को स्पष्ट करती है। कविता के मर्म को पहचानने और उसके प्रयोजन को समझ कर ही कविता की शिक्षा देने में सफलता मिल सकती है।

कवि के दृष्टिकोण से कविता का प्रयोजन

(i) कविता का मुख्य प्रयोजन है – रसोत्पत्ति। कवि भावमय जगत में लीन होकर कविता सृजन करता है।

(ii) कविता कवि के मन में सृजन की आवश्यकता की पूर्ति करती है।

(iii) कविता कभी स्वातः सुखाय तथा मनोविनोद के लिए रची जाती है।

(iv) कविता का सृजन अर्थ प्राप्ति तथा समाज सेवा से प्रेरित होकर भी किया जाता है।

पाठक के दृष्टिकोण से कविता का प्रयोजन

(i) पाठक काव्यनन्द से आत्म विभोर रसमग्न हो जाता है सत्यं शिवं, सुन्दरम् का अवलोकन भी कविता के ही भावमय जगत में होता है।

(ii) कविता जीवन के सौन्दर्य और मधुमय पक्ष का अनुभव कराती है।

(iii) कविता मधुरतम शब्दों में उपदेश देती है।

(iv) कविता वासनाओं का संस्कार, चरित्र का निर्माण तथा सात्विक भावनाओं का विकास करती है।

(v) कविता राष्ट्रीय एकता तथा शुद्ध भावनाओं को उच्च स्तर पर ले जाने के लिए एक सशक्त साधन है।

(vi) कविता का आरम्भ आनन्द से होता है और अन्त बुद्धिमता में।

'पद्य' और 'कविता' में अन्तर

'पद्य' और 'कविता' में पर्याप्त अन्तर है। कविता की अपेक्षा 'पद्य' शब्द अधिक व्यापक है। सभी कविताएं पद्य हो सकती है, परन्तु सभी पद्य कविताएं नहीं हो सकते। कविता छन्द रहित भी हो सकती है, परन्तु पद्य के लिए छन्द का होना आवश्यक है। पद्य और कविता में अन्तर होते हुए भी प्रायः दोनों को एक ही समझा जाता है।

'गद्य और पद्य' की तुलना

'पद्य छन्दोबद्ध रचना है। उसमें यति, गति तथा लय आदि का पूरा पूरा ध्यान रखा जाता है। उसमें रोचकता होती है। गद्य में इन सबका अभाव रहता है। गद्य की नीरसता के कारण उसकी शिक्षा में एक नियमित यंत्रबद्धता होती है।

1.5.10 कविता के प्रकार

पद्य एक छन्दोबद्ध रचना है। छन्दोबद्ध रचनाओं में हमें तीन रूप मिलते हैं :–

1. बालगीत या बालोचित तुकबन्दिया,
2. वर्णनात्मक या घटना प्रधान पद्य,
3. साहित्यिक रचनाएं अथवा भावपूर्ण रचनायें।

प्रारम्भिक अवस्था में बालकों को बालगीत का रसास्वादन कराना चाहिए। मध्य स्तर पर वर्णनात्मक तथा घटना प्रधान कवितायें पढ़ानी चाहिए। उच्च स्तर पर साहित्यिक रचनाओं का अध्ययन कराना चाहिए।

1.5.11 कविता की शिक्षा के उद्देश्य

कविता शिक्षण के उद्देश्य

कविता शिक्षण के उद्देश्यों को हम निम्नलिखित क्रम में अभिव्यक्त कर सकते है :–

(क) सामान्य उद्देश्य

भाषा शास्त्रियों ने कविता–शिक्षण के सामान्य उद्देश्य इस प्रकार बताए हैं :–

(1) छात्रों को स्वर प्रवाह तथा भावों के अनुसार कविता पाठ करने के योग्य बनाना।

(2) काव्य सौन्दर्य से प्रभावित करके छात्रों को कविता के प्रति आकर्षित करना तथा कविता के प्रति रूचि व प्रेम उत्पन्न करना।

(3) छात्रों में सौन्दर्यानुभूति की भावना को जागृत करना और उस भावना की निरन्तर वृद्धि करना।

(4) छात्रों की सात्विक भावनाओं का उद्‌बोधन करना।

(5) उनकी रागात्मक प्रवृतियों का संशोधन करना।

(6) उनके उदात्त भावों का संवर्धन करना तथा उनके दूषित मनोभावों का परिष्कार करना।

(7) छात्रों में कवि की अनुभूतियों तथा कल्पनाओं को समझने और ग्रहण करने की शक्ति उत्पन्न करना।

(8) छात्रों की कल्पना शक्ति का विकास करना।

(9) छात्रों को भिन्न–भिन्न काव्य शैलियों से परिचित करना।

(10) उनकों काव्य सौन्दर्य को परखने के योग्य बनाना।

(11) छात्रों को काव्यनन्द का रसास्वादन करने के योग्य बनाना।

(12) छात्रों को शब्द–योजना, शब्द–शक्तियें, अलंकारों, छन्दों, विधानों और विभिन्न रसों की अनुभूति एवं शास्त्रीय ज्ञान कराना।

(13) कवि के भावों तथा अनुभूतियों के साथ छात्रों का तादात्म्य स्थापित करना।

(14) उनकी सृजनात्मक शक्तियों का विकास करना।

(15) छात्रों को काव्य रचना की प्रेरणा प्रदान करना।

विशिष्ट उद्देश्य

(1) छात्रों में कविता विशेष के भावों को समझने की क्षमता प्रदान करना।

(2) कवि विशेष के विचार या शैली का आनन्द प्रदान करना।

(3) छात्रों में किसी कवि की काव्यगत विशेषता को समझने की योग्यता उत्पन्न करना।

(4) काव्यगत विषय से परिचित करा कर उनमें सौन्दर्यानुभूति की भावना का विकास करना।

(5) कवि के किसी सन्देश को छात्रों तक पहुंचाना। कवि का काम है सन्देश देना, और अध्यापक का काम है सन्देश वाहक बनना।

(6) छात्रों को किसी कवि विशेष के साहित्य को पढ़ने के लिए प्रेरित करना।

(7) कविता की किसी विशेष शैली अथवा वर्णित शैली से छात्रों को परिचित कराना जैसे – गीता काव्य की शैली, वर्णनात्मक शैली आदि।

संक्षेप में कविता का प्रमुख उद्देश्य छात्रों के मन में सौन्दर्य ग्रहण की शक्ति को पूरा करना है। कविता के अभ्यास से वे जगत में कई प्रकार के सुप्त अथवा असुप्त सौन्दर्य की पहचान कर सकें। मूर्त और अमूर्त सौन्दर्य के सही अन्तर को समझ सकते हैं।

छात्रों में सौन्दर्य शोधक दृष्टि उत्पन्न की जाए जिससे कि वे आस पास के वातावरण में तथा संसार रूपी उद्यान में विहार करते समय अनेक प्रकार के रमणीक स्थलों का आनन्द ले सके। सारांश यह है कि छात्र कविता शिक्षण के माध्यम से इस जगत और जीवन मे जो सुन्दर है उसका आस्वादन कर सकें।

1.5.12 कविता शिक्षण की प्रणालियां या विधियाँ

काव्य शिक्षण का मुख्य उद्देश्य कविता के सौन्दर्य से बालक की भावनाओं का परिष्करण करना है तथा कविता

के माध्यम से बालक शाश्वत आनन्द प्राप्त कर सके। परन्तु यह तभी संभव है जब बालकों को उनके शैक्षिक, मानसिक, शारीरिक और सामाजिक स्तर के अनुसार ही कविता शिक्षण की विधियां अपनाई जाएं।

1. गीत प्रणाली

आज की शिक्षा पूर्ण रूप से मनोवैज्ञानिक है। अर्थात् बालक की रुचियों तथ इन्द्रियों को इसमें महत्व दिया जाता है। बच्चे जन्म से ही संगीत पसंद करते हैं। प्रारम्भिक कक्षाओं के बच्चो की कवितायें गाकर याद करानी चाहिए तथा उनका भाव समझाना चाहिए। पूर्व प्राथमिक कक्षाओं की कुछ कवितायें केवल याद कराई जाती है। उनके भाव, सौन्दर्य आदि से बालक ज्यादा संबंधित नहीं होते। इस तरह लय, ताल तथा गति को ध्यान में रखते हुए ही इन कविताओं का गायन किया जाना चाहिए। इस प्रणाली में सर्वप्रथम अध्यापक कविता का स्वर वाचन करते हैं तत्पश्चात् छात्र उनका अनुकरण करके गाते हैं। अध्यापक तथा छात्र दोनों ही लय मे गाते हुए हाथ से ताल भी देते जाते हैं।

बहुत छोटे बच्चों के काव्य शिक्षण की यह सबसे महत्वपूर्ण प्रणाली है। इस प्रणाली का सबसे अच्छा गुण यह है कि छात्र गाते समय बिल्कुल भावविभोर हो जाता है। उसका हृदय झंकृत होता है और उसे कविता लंबे समय तक याद रहती है।

2. अभिनय प्रणाली

अभिनय द्वारा भी बालकों को बड़ी–बड़ी कविताओं की भावानुभूति कराई जा सकती है। कुछ गीत संगीत प्रधान होते हुए भी भाव प्रधान होते है। उन्हें गीत तथा अभिनय दोनों प्रणालियों के माध्यम से पढ़ाया जाना चाहिए। कुछ गीतों अथवा कविताओं में अधिक पात्र होते हैं । इस स्थिति में विभिन्न पात्रों के अभिनय छात्रों से कराकर उनका शिक्षण किया जाना चाहिए।।

यह प्रणाली बच्चों मे प्रतिभा का चयन करने मे सहायक होती है। जो बच्चे अभिनय में रुचि रखते हैं वे स्वतः ही इनमें भाग लेना चाहते है इससे उनकी कला को विकसित होने के अवसर मिलते है। इसके अतिरिक्त इस प्रणाली से कक्षा मे जीवन बना रहता है। पूरा वातावरण काव्यमय हो जाता है और बच्चे रुचि पूर्वक पठन करते है।

परन्तु साथ ही साथ अध्यापक को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि इतना अधिक अभिनय न हो कि कक्षा का वातावरण ही हास्यपद बन जाये। एक निश्चित सीमा तक ही अभिनय सफलता प्रदान कर सकता है।

3. अर्थ बोध प्रणाली

इस प्रणाली में अध्यापक कविता को पढ़ने के साथ–साथ उसका अर्थ भी बताते चलते हैं। आज अधिकांश शिक्षक प्रत्येक शैक्षिक स्तर पर इसी प्रणाली का सहारा लेते हैं जो कि सर्वथा अनुपयुक्त है। इस प्रणाली में केवल शिक्षक ही सक्रिय रहते हैं। छात्र पूर्ण रूप से निष्क्रिय रहते हैं। कविता का वास्तविक अर्थ सौन्दर्यानुभूति तथा कविता के अन्य तत्वों की बालकों को जानकारी नहीं हो पाती। इस कारण शिक्षा के किसी भी स्तर पर यह विधि उपयोगी नहीं है।

4. व्याख्या प्रणाली

इस प्रणाली में शिक्षक कविता का अर्थ बताने के साथ–साथ उससे संबंधित प्रासंगिक कथायें, अर्न्तकथाएं, लोककथाएं, रस, छन्द, अलंकार, शैली, इत्यादि की व्याख्या भी करते है। यह प्रणाली माध्यमिक कक्षाओं में प्रयोग की जानी चाहिए।

5. व्यास प्रणाली

यह प्रणाली व्याख्या प्रणाली से भी अधिक व्यापक है। इसमें शिक्षक का कर्त्तव्य बालकों को भावानुभूति कराना भी होता है। इस प्रणाली का नामकरण कथावाचक व्यासों को दृष्टि में रखकर किया गया है। ये व्यास लोग कथा का अर्थ स्पष्ट करने के लिए भाषा और शैली का व्यापक विश्लेषण करते हैं। प्रसंगानुसार अनेक अंर्तकथाओं की व्याख्या प्रस्तुत करते हैं। इस प्रणाली में भी शिक्षक कवि के दार्शणिक सिद्धांतों का स्पष्टीकरण करते हैं। तथा उनका मुख्य उद्देश्य छात्रों को भावानुभूति कराना होता है।

यह प्रणाली उच्चमाध्यमिक स्तर के लिए अधिक उपयोगी है। यद्यपि माध्यमिक स्तर पर भी केवल कुछ ही कविताओं के पठन में इसका प्रयोग किया जा सकता है परंतु अध्यापक को इस कार्य में विशेष रूप में सतर्क रहना पड़ेगा। शिक्षण नीरस और दुखद न होने पाए।

6. तुलनात्मक प्रणाली

यह प्रणाली भी व्याख्या प्रणाली के ही समान है। इसमें अध्यापक पढ़ाई जाने वाली कविता की तुलना अन्य कविताओं से करते हुए शिक्षण करता है। तुलना करते हुए अन्य कविताओं से समानता तथा असमानता दोनों को ही देखा ही जाता है। यह मानव स्वभाव है कि वह किसी भी वस्तु की समानता अथवा असमानता जानने के लिए उत्सुक रहता है। इसका उपयोग कविता शिक्षण में करने से पर्याप्त सफलता प्राप्त होती है। परंतु ऐसा करने के लिए आवश्यक है कि शिक्षक ने पढ़ाई जाने वाली तथा तुलना करने वाली दोनों ही कविताओं का गहन अध्ययन किया हो क्योंकि इसमें भाषा, शैली अलंकार, रस, छंद आदि का गहन ज्ञान है। तुलना कई प्रकार से की जा सकती है। पर चार विधियां विशेष हैं । यथा –

(i) **समान भाषा कवि तुलना :-** पढ़ाई जाने वाली कविता की भाषा के समान ही भाषा में लिखी गई कोई दूसरी कविता से तुलना करना। इसमें कविता के भावों में समानता हो अथवा न हो परंतु भाषा समान होनी चाहिए।

(ii) **भिन्न भाषा कवि तुलना :-** पढ़ाई जाने वाली कविता की भाषा के अतिरिक्त अन्य भाषाओं की कवितायें प्रस्तुत की जाती है। जैसे हिन्दी भाषा की कविता पढ़ाने के लिए अंग्रेजी भाषा की कविता से तुलना की जा सकती है।

(iii) **समान भाव तुलना :-** जिस भाव की कविता पढ़ाई जा रही है उसकी तुलना उसी भाव की अन्य कविताओं से की जाती है।

(iv) एक ही कवि की एक भाव की अनेक कविताओं से भी तुलना की जा सकती है।

7. समीक्षा प्रणाली :-

इस प्रणाली में कविता के गुण तथा दोषों का अध्ययन करके कविता का मूल्यांकन किया जाता है। यह मूल्यांकन प्रश्न–उत्तर विधि के माध्यम से किया जाता है। भाषा, शैली, अलंकार, छंद, शब्द, योजना आदि से संबंधित प्रश्न किये जाते हैं। अध्यापक का कार्य केवल एक निर्देशक सहायक के रूप में होता है। इसमें छात्र शिक्षक की अपेक्षा अधिक सक्रिय रहते है। यह प्रणाली उच्च कक्षाओं में ही ग्राहय है, जब छात्र भाषा शैली आदि से भली भांति परिचित होते है। छात्रों को आलोचनात्मक ग्रंथ बता दिये जाते है। वे इनका गहन अध्ययन करके काव्य की समीक्षा करते हैं।

8. प्रश्नोत्तर या खण्डान्वय प्रणालीः-

इसे प्रश्नोत्तर अथवा विश्लेषण प्रणाली के नाम से भी जाना जाता है। इसका प्रयोग अधिकतर ऐतिहासिक या वर्णनात्मक कविताओं के शिक्षण के लिए ही किया जाता है। इसमें पहले प्रश्नों के द्वारा कविता का विश्लेषण किया जाता है। फिर खण्ड–खण्ड को जोड़कर संपूर्ण कविता का भाव स्पष्ट किया जाता है।

कुछ विद्वानों का कहना है कि कविता को पूर्ण रूप में पढ़ाया जाना चाहिए न कि उसकों टुकड़ों में बांट कर। खण्डों में बांटने से कविता के वास्तविक आनन्द की अनुभूति नहीं हो पाती। परन्तु फिर भी किसी गूढ़ कविता का भाव प्रश्नोत्तर प्रणाली से अपेक्षाकृत अच्छी प्रकार समझाया जा सकता है। इस प्रणाली को प्रयोग माध्यमिक स्तर तक ही किया जाना चाहिए। परन्तु तभी जब छात्र अन्य किसी प्रणाली से कविता समझ सकने के योग्य न हों।

कविता शिक्षण कब आरंभ किया जायें :-

शिक्षा प्रारंभ होते ही बालक भाषा का अध्ययन करना शुरू कर देता है पहली कक्षा तक बालक को भाषा ज्ञान हो जाता है। उसके बाद दूसरी कक्षा से बालगीत तथा अभिनय प्रधान गीतों की शिक्षा प्रारंभ की जा सकती है। कक्षा तीन, चार, पांच में ऐतिहासिक तथा घटना प्रधान कविताओं की शिक्षा दी जा सकती है। माध्यमिक स्तर पर ऐतिहासिक,

वर्णनात्मक, साहित्यक, भाव–प्रधान आदि कविताओं की शिक्षा दी जा सकती है।

बाल गीत तथा अभिनय प्रधान गीतों की शिक्षा देते समय कुछ बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए। गीत बालकों के मानसिक स्तर के अनुसार होने चाहिए तथा आनन्द प्रदान करने वाले ही गीतों की लम्बाई सामान्य होनी चाहिए, ताकि निश्चित समय के अन्दर ही समाप्त हो जायें। गीतों की लय रूचिकर होनी चाहिए ताकि बच्चे उन्हें याद कर सकें। गीतों के माध्यम से बालकों समक्ष कुछ आदर्श प्रस्तुत किये जायें ताकि छात्रों में देश प्रेम, त्याग, बलिदान, सर्म्पण आदि की भावनाओं का विकास किया जा सके।

माध्यमिक स्तर की कवितायें इस प्रकर की हो जो छात्र के वास्तविक जीवन से संबंधित हो। कविताओं का स्तर बालक की शैक्षिक तथा मानसिक योग्यता के अनुकूल ही होना चाहिए। भाषा–शैली इस प्रकार की हो कि बालकों को समझ में आ सके। कविताओं के माध्यम से बालकों को कुछ संदेश दिया जाना चाहिए। बालक की कल्पना तथा विचार शक्ति को जागृत करने वाली कविताओं के शिक्षण पर विशेष बल दिया जाना चाहिए।

1.5.13 कविता शिक्षण के सोपान

यूं तो कविता शिक्षण को किसी एक विधि में बांधकर नहीं पढ़ाया जा सकता परन्तु फिर भी पाठन क्रिया की भिन्न–भिन्न अवस्थाओं का समावेश तो होता ही है। यह अध्यापक पर निर्भर करता है कि कक्षानुसार किस विधि का प्रयोग किया जायें तथा किस क्रम से कविता को पढ़ाया जाये कि कविता शिक्षण के उद्देश्यों में बाधा ना आने पाये। वस्तुतः कविता के सफलतापूर्वक पढ़ाने के लिए निम्नलिखित सोपानों को अपनाया जा सकता है।

काव्य शिक्षण में प्रस्तावना की जाये अथवा नहीं, यदि की जाये तो किस प्रकार की जाये। आदर्श पठन का क्या स्थान होना चाहिए। शब्दार्थ, भावार्थ आदि को किस प्रकार प्रस्तुत किया जाये। उच्चारण संशोधन, प्रश्नोत्तर, केंद्रीय भाव ग्रहण आदि को स्थान मिलना चाहिए अथवा नहीं। यदि हो तो किस प्रकार उन्हें प्रस्तुत किया जाये। आदि ऐसे प्रश्न है जो अध्यापक को उलझन में डाल देते है।

उपर्युक्त सभी सोपानों पर हिन्दी शिक्षण के सभी विद्वान एकमत नहीं है परन्तु फिर भी अधिकांश विद्वान जिन सोपानों पर एक मत है उनका उल्लेख नीचे किया जा रहा है। :–

प्रस्तावना

गद्य शिक्षण के समान कविता शिक्षण में भी प्रस्तावना का महत्त्वपूर्ण स्थान है। प्रस्तावना अनेक प्रकार से प्रस्तुत की जा सकती है जैसे :–

पूर्व सूचना देकर :- इस विधि के अंतर्गत शिक्षण कक्षा में आते ही छात्रों को बताते है कि आज अमूक कविता का अध्ययन किया जायेगा। इसमें अमुक रस, छन्द, अलंकार आदि है तथा भाषा शैली आदि के बारे में पहले से ही शिक्षण बता देते है।

इस विधि से कविता पढ़ाने में कक्षा का वातावरण का व्यमय नहीं हो पाता जो कि कविता शिक्षण की एक आवश्यक परिस्थिति है छात्र कवितायें रूचि नहीं लेते इस कारण किसी भी स्तर पर इस विधि की अपनाना लाभकारी नहीं है।

2. कवि-परिचय द्वारा :- जिस कवि की कविता पढ़ाई जानी है उसका जीवन परिचय दे दिया जाता है कवि ने अमुक कविता किससे प्रेरित हो कर लिखी, आदि के माध्यम से प्रस्तावना प्रस्तुत करके कक्षा का वातावरण कवितामय बनाने का प्रयत्न किया जाता है।

इस विधि के द्वारा कविता शिक्षण प्रारंभ करने से छात्र कविता में रूचि लेते है। परन्तु यह विधि उच्च शिक्षा स्तर के लिए बहुत उपयोगी है। जबकि छात्रों को कवि की भाषा, शैली, प्रेरणा का स्रोत, अलंकार इत्यादि का ज्ञान होना आवश्यक होता है। माध्यमिक स्तर पर भी इस विधि का प्रयोग कभी–कभी किया जा सकता है।

3. कक्षा का वातावरण काव्यमय बनाकर :-

इस कार्य के लिए विभिन्न चित्र, पोस्टर आदि की सहायता ली जा सकती है। प्राकृतिक चित्रण की कविता

पढ़ाने के लिए प्रकृति से संबंधित चित्रों को कक्षा में टांग कर प्रश्न पूछे जा सकते हैं। वीर रस कि कविता पढ़ाने के लिए वीरता पूर्ण कृत्यों से संबंधित पोस्टर कक्षा में दिखाये जा सकते हैं।

यह प्रणाली पूर्व माध्यमिक स्तर पर कविता शिक्षण के लिए उपर्युक्त है। छात्र कविता में रूचि लेते है। परन्तु प्रारम्भ में ही भूमिका बांध देने से बच्चे कभी–कभी समझ जाते है कि आज अमुक कविता पढ़ाई जायेगी। यह विचार काव्यमय वातावरण को कम करने में सहायक होता है।

4. प्रश्नोत्तर द्वारा :-

कुछ कथाओं,, अंर्तथाओं, ऐतिहासिक गाथाओं आदि छात्रों को सुनाकर कविता की प्रस्तावना दी जा सकती है। इसमें शिक्षक द्वारा सुनाई गई कथाओं आदि से संबंधित प्रश्न पूछे जाते हैं। छात्रों द्वारा प्रश्नों के उत्तरों के आधार पर पढ़ाई जाने वाली कविता का परिचय दे दिया जाता है। यह विधि माध्यमिक स्तर पर कविता शिक्षण के लिए ठीक रहती है। परन्तु दोषमुक्त नहीं है। क्योंकि विभिन्न अंर्तकथाओं आदि से कक्षा का वातावरण कवितामय नहीं बन पाता इससे छात्र कविता को अधिक रूचि के साथ नहीं पढ़ते है।

5. सारांश कथन द्वारा :-

इस विधि के द्वारा कविता पढ़ाने से पहले संक्षेप में उसके बारे मे बता दिया जाता है। उसके बाद कविता पढ़ाई जाती है। बहुत गूढ़ कविताओं के शिक्षण में यह विधि लाभकारी होती है। क्योंकि यदि उन कविताओं के बारे में पहले से कुछ न बताया गया तो उसका भाव छात्रों की समझ में नही आता। यह प्रणाली माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक दोनों ही स्तरों पर उपयोगी हो सकती है।

6. उसी कविता का पठन करके :-

इस विधि में जो कविता पढ़ाई जानी है उसी का सस्वर पठन शिक्षक द्वारा किया जाता है। इस विधि को अपनाने का आधार यह है कि बालकों की कविता में रूचि होती है। अतः प्रस्तावना किसी और ढंग प्रस्तुत न करके की जानी चाहिए। सस्वर पठन के बाद कुछ प्रश्न कविता के केंद्रीय भाव पर किये जाने चाहिए। यह विधि प्रस्तावना के लिए बहुत अधिक उपयोगी नहीं हैं।

7. समान कविता के पठन द्वारा :-

जिस भी भाव अथवा रस की कविता कक्षा में पढ़ाई जानी है उसी भाव अथवा रस की कविता का पठन करके प्रस्तावना दी जा सकती है। माध्यमिक स्तर पर यह विधि ग्राहय है।

उसी कवि का अन्य कविता पठन द्वारा :-

पढ़ाई जाने वाली कविता के कवि की अन्य रचनाओं का पठन करके प्रस्तावना प्रस्तुत की जा सकती है यह विधि भी माध्यमिक कक्षाओं के लिए अधिक उपयोगी है।

उद्देश्य कथन :-

प्रस्तावना के बाद उद्देश्य कथन किया जाता है। अर्थात इस सोपान में बताया जाता है कि आज अमुक कविता का पठन किया जाएगा। उद्देश्य कथन बहुत उत्साहपूर्वक तथा जोश के साथ किया जाना चाहिए ताकि छात्रों में कविता को पढ़ने की रूचि बनी रहे।

प्रस्तुतीकरण :-

इसके अंतर्गत यह आता है कि पाठ को कितनी इकाईयों में बांट कर पढ़ाया जाएगा। कविता के संबंध में अधिकांश विद्वानों का मत है कि कविता को खंडों में विभाजित करके नहीं पढ़ाया जा सकता। वह एक सम्पूर्ण इकाई है। अतः कविता शिक्षण एक ही इकाई में किया जाना चाहिए। सवैते, दोहे, कवित्त आदि अपने में पूर्ण होते हैं अतः इन्हें अलग–अलग ही पढ़ाना चाहिए। इसके अतिरिक्त अध्यापक द्वारा आदर्श पढ़ने पर इसमें विशेष बल दिया जाता है। मौन पठन का इसमें कोई स्थान नहीं होता है।

क. आदर्श पठन :- अध्यापक छन्द, गीतों तथा लय का ध्यान रखकर कविता कि सस्वर पठन करते

है। यह पूर्ण रूप से आदर्श होना चाहिए क्योंकि इसी के अनुसार छात्र अनुकरण पठन करते हैं। आदर्श पठन में हावभाव, रस इत्यादि का ध्यान रखा जाता है। सस्वर पठन को प्रभावशाली बनाने के लिये अध्यापक कक्षा में जाने से पहले यदि कविता का कई बार सस्वर पठन कर लें। तो कक्षा में उसका पठन अपेक्षाकृत अच्छा होगा।

ख. अनुकरण पठन :- अध्यापक के भावानुसार उनकी गति, यतिलय आदि का अनुकरण करते हुए कुछ छात्रों से पठन कराया जाता है। यदि कोई छात्र गलत उच्चारण करता है तो उसे उसी समय नहीं टोकना चाहिए वरन् दुबारा आदर्श पठन के माध्यम से उसे सुधारा जाना चाहिए। वाणी से संबंधित दोषों वाले छात्रों के कक्षा में अनुकरण पठन नहीं करना चाहिए। उन छात्रों से बाद में समय देकर पठन करवाया जा सकता है, जिससे कविता का पठन करना वे भी सीख लें।

ग. शब्दार्थ तथा कठिन्य निवारण :- कविता शिक्षण के समय अधिक समय शब्द व्याख्या करने में नहीं दिया जाना चाहिए श्यामपट पर शब्द तथा उनके अर्थ लिख कर ही समझा देना चाहिए। अन्य कठिनाईयों को भी दूर करने में अधिक समय नहीं नष्ट करना चाहिए।

घ. भाव व्याख्या :- कविता शिक्षण मूल उद्देश्य उसके केंद्रीय भाव से छात्रों को परिचित कराके सौन्दर्यानुभूति करना है। उन्हीं शब्दों के अर्थ बताने पर बल दिया जाना चाहिए जो भाव विश्लेषण तथा सौन्दर्यानुभूति में सहायक हो। भाव व्याख्या करते समय कविता के सभी तत्व उभर कर सामने आने चाहिए अर्थात रस अलंकार, छन्द, शब्द, योजना, व्याख्या, शब्द शक्ति, अंर्तकथाएं आदि की विस्तृत व्याख्या की जानी चाहिए।

ङ. आदर्श पठन :- भाव व्याख्या करने से छात्रों की कविता का अर्थ भी स्पष्ट हो जाता है। अतः शिक्षक को पुनः सस्वर पठन करना चाहिए। ताकि जितना कुछ समझ में नहीं आ पाया हो यह दुबारा आदर्श पठन से समझ में आ जाए।

अर्थ ग्रहण एवं सौन्दर्य बोध परीक्षण :-

इस सोपान के अन्तर्गत कुछ प्रश्न अध्यापक द्वारा किये जाते है, यह जानने के लिए कि भाव व्याख्या के माध यम से छात्र कविता का अर्थ कितना समझ सके है।

च. रचनात्मक कार्य :– इसके अंतर्गत यदि समय बचता है तो अध्यापक अथवा छात्रों द्वारा पठन तथा कल्पना को जागृत करने वाले प्रश्न किए जाने चाहिए।

गृह कार्य :-

पढ़ाई गई कविता के समान, भाव, रस, अलंकार आदि वाली कविता का अध्ययन करने को कहा जा सकता है उसी कवि की अन्य कवितायें पढ़ने को अथवा पढ़ाई गई कविता को कंठस्थ करने के लिए भी कहा जा सकता है।

1.5.14 कविता पठन में रूचि उत्पन्न के साधन

प्राय : छात्रों की रूचि कविता पठन में अपेक्षाकृत कम होती है। परन्तु हिन्दी साहिन्य का अध्ययन करने के लिए आवश्यक है कि उसकी विधाओं का अध्ययन किया जाये। अतः अध्यापक का कर्त्तव्य है कि काव्य पठन में छात्रों की रूचि उत्पन्न अथवा जागृत करें इसके लिए वे निम्नलिखित उपाए कर सकते हैं :–

1. अत्याक्षरी प्रतियोगिता :- अत्याक्षरी का प्रचलन बहुत प्राचीनकाल से ही चला आ रहा है। इस प्रतियोगिता में छात्रों को दो दलों में बांट दिया जाता है। पहले एक दल का छात्र कोई कविता कहता है। फिर दूसरे दल का कोई छात्र पहले दल द्वारा पठित कविता के अंतिम अक्षर से अपनी कविता का प्रारम्भ करता है। इस तरह दोनों दलों में प्रतियोगिता चलती रहती है। यदि एक दल कविता को शुरू करने में असमर्थ होता है तो दूसरा दल उसे शुरू करके अधिक अंक प्राप्त करता है। इस प्रकार यह प्रतियोगिता काफी रोचक है। इसमें छात्र कविताओं को याद करने की ओर प्रेरित होते हैं। परन्तु कुछ दोष ही है जैसे – छात्र कविता को प्रारम्भ तो कर देते हैं परन्तु वे पूरी नहीं सुनाते। इसके अतिरिक्त एक दल के सभी छात्रों को बोलना चाहिए, जब कि वास्तविकता यह है कि 2–3 छात्र ही कविता पठन करते रहते हैं। सभी छात्रों को बोलने के समान अवसर प्रदान किये जाने चाहिए।

2. प्रभावशाली पठन :- अध्यापक को सदैव ही प्रभाव पूर्ण ढंग से पठन करना चाहिए ताकि छात्रों को कविता रोचक लगे। आवयकता अनुसार कविता को लय देकर भी गाया जा सकता है। छात्रों को भी पठन करना चाहिए प्रभावशाली पठन वातावरण को काव्यमय बनाने में सहायक होता है।

3. सुभाषित प्रतियोगिता :- इसमें छात्र प्रसिद्ध कवियों की रचनाएं सुनाते हैं इसमें छात्र किसी भी कवि की कविता को सुनाने के लिए स्वतंत्र होते हैं। इनका आयोजन विद्यालय की विभिन्न कक्षाओं के मध्य कराया जा सकता है। इन्हें सब में 4–5 बार भी आयोजित किया जा सकता है।

4. कवितायें याद कराना :- अध्यापकों का दायित्व है कि वे छात्रों को विभिन्न कविताओं को याद करने के लिए प्रेरित करें। बात करते समय बच्चे स्वतः ही कुछ बातें कविता के माध्यम से कह जाते हैं ऐसे में उन्हें बहुत ही आनन्द की अनुभूति होती है। तथा वे और अधिक कविता पढ़ने तथा याद करने को अग्रसर होते हैं।

5. समस्या पूर्ति :- यह बहुत प्राचीन तरीका है, तथा संस्कृत भाषा में इसका प्रचलन था। इसमें छात्रों को कोई समस्या पर कविता रचना करने को कहा जाता है। जिस छात्र मे काव्य रचना की क्षमता होती है वे सफल होते हैं। इस प्रकार कवि मन छात्रों को छांट लिया जाता है। आगे भी उनकों रचनाएं करने के अवसर दिए जाते हैं। वैसे देखा जाए तो समय समय पर हिन्दी के कवियों ने भी इसी प्रकार कविता लिखी हैं। उदाहरणतय स्वतंत्रता प्राप्ति के आंदोलन के समय बहुत जोशीली तथा देश प्रेम की कविताएं लिखी गई। जब जब समाज की सामाजिक राजनैतिक सिथति बिगड़ी है जनता तथा सत्ता को कवियों ने ही ललकारा है।

6. काव्य संग्रह :- बालकों को उनके शैक्षिक तथा मानसिक स्तरानुसार कविताएं एकत्र करने के लिए उत्साहित करना चाहिए। संग्रह प्रवृति काव्य में रूचि उत्पन्न करने में सहायक होती है।

7. कवि जयन्ती :- प्रमुख कवियों के जन्म दिवस पर विद्यालयों में कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए।

8. कवि समादर :- समय समय पर प्रसिद्ध कवियों को सम्मानित किया जाना चाहिए।

9. कवि दरबार :- इसमें छात्र विभिन्न कवियों की वेशभूषा धारण करके उन्हीं की भाव भांगिमा के साथ उनकी रचनाएं पढ़कर सुनाते हैं। इससे वातावरण सजीव हो उठता है। अतीत वातावरण में चला आता है। इस तरह धीरे-धीरे छात्र कविताओं में या किसी कवि विशेष की कविताओं में रूचि लेने लगते हैं।

10. कवि सम्मेलन :- समय समय पर प्रसिद्ध कवियों को विद्यालयों में आमंत्रित करके कवि सम्मेलनों का आयोजन किया जाना चाहिए। इनके द्वारा भी बच्चों में काव्य–प्रेम उत्पन्न किया जा सकता है।

पाठय कविता

विनय और भक्ति

(1)

चरन–कमल बंदों हरि राई।
जाकि कृपा पंगु गिरि लंघे अंधे को सब कुछ दरसाई।
बहिरौ सुनै, मूक पुनि बौलै, रंक चले सिर छत्र धराई
सूरदास स्वामी करूनामय, बार–बार बंदौ तिहि पाई

(2)

आजु हौं एक–एक करि टरिहौ।
कै तुमही के हमहीं, अपुन भरोसे लरिहौं।
हौं तो हतित सात पीढ़ित कौ, पतित छवै, निस्तरिहौं।
अब हौं उधरि नाच्यों चाहत हौं, तुम्हें बिरद बिन करिहौं।
कत अपनी परतीति नसावत, मैं पायौ हरि हीरा।

सूर पतित तबंही उठिहै, प्रभु, जब हंसी दैहौं बीरा। (सूरदास)

पाठ योजना

हरबार्ट उपागम के अनुसार

विषय : **हिन्दी (कविता)** **कालांश-तृतीय**

शीर्षक : **विनय और भक्ति** **अवधि : 40 मिनट**

कक्षा : **9 (अ)**

सामान्य उद्देश्य :– कविता शिक्षण के सभी उद्देश्य संक्षेप में लिखे जाएंगे।

शिक्षण लक्ष्य :-

1. छात्रों को सूरदास जी की कृष्ण भक्ति का ज्ञान कराना।
2. कृष्ण जी की महिमा से परिचित कराना।
3. कविता का श्रवण, अर्थग्रहण, भावानुभूति तथा रसानुभूति कराना।
4. कविता पाठ करना, उसका अर्थग्रहण, भावानुभूति तथा रसानुभूति कराना।
5. छात्रों की कल्पना शक्ति का विकास कराना।
6. मौखिक अभिव्यक्ति का विकास।
7. भक्त कवि सूरदास द्वारा रचित साहित्य के अध्ययन में रूचि।
8. ईश्वर भक्ति तथा महिमा के प्रति सकारात्मक अभिवृति निर्माण।

शिक्षण साधन :-

मीराबाई की समान भाव की कविता।

हरि तुम हरो जन की पीर।
द्रोपदी की लाज राखो, तुरत बाढ़यो चीर।
भक्त कारण रूप नरहरि, धरयो आप सरीर।
हिरणाकुश मारि लीन्ह, धरयो जाहि न धीर।
बड़तो गजराज राख्यो, कियौ बाहर नीर।
दास मीरा लाल गिरधर चरण कमल में सीर।

उपर्युक्त पंक्तियां श्यामपछट्ट, पर पहले से ही लिखकर कक्षा में टांग दी जाएगी।

पूर्वाज्ञान :-

छात्र पहले कृष्ण से संबंधित सूरदास जी द्वारा लिखित पद पढ़ चुके है।

प्रस्तावना :-

प्रश्न

1. प्रस्तुत कविता में ''हरि'' किसको कहा गया हैं?
2. द्रोपदी की लाज भगवान ने किस प्रकार बचाई?
3. प्रस्तुत कविता में भगवान के कौन से रूप का वर्णन किया गया है?

उद्देश्य कथन :-

भगवान कृष्ण की महिमा का गान जिन कवियों ने सबसे अधिक किया है, वे हैं मीरा बाई तथा भक्त सूरदास। सूरदास जी का जन्म सन् 1478 में तथा मृत्यु सन् 1583 में हुई उनकी जन्म भूमि आगरा के निकट रूनकता नामक ग्राम है। सूरदास ने ''श्रीमद्भागवत्'' का आधार लेकर ''सूरसागर'' की रचना की। यूं तो उन्होनें ''सूरसारावाली'' तथा

'' साहित्य लहरी'' नामक ग्रंथों की भी रचना की परन्तु सबसे अधिक प्रसिद्ध ''सूरसागर'' ही है। उनके काव्य में वात्सल्य श्रृंगार की प्रधानता है। उन्होंने ''विरह पद'' भी लिखे हैं। सूरदास के काव्य की भाषा सरल तथा मधुर है।

प्रस्तुत पदों में सूरदास जी द्वारा कृष्ण की महिमा तथा स्वयं को निकृष्ट प्राणी दिखाया गया है। आज हम उसी का रसास्वादन करेंगे।

प्रस्तुतीकरण :- एक पद को इकाई में पढ़ाया जाएगा अर्थात् दोनों को दो इकाई में पढ़ाया जाएगा।

आदर्श पठन :– अध्यापक द्वारा उचित गति, यति लय आदि को ध्यान में रखकर किया जाएगा।

अनुकरण पठन :- कक्षा के कुछ छात्रों द्वारा अध्यापक का अनुकरण करते हुए किया जाऐगा।

शब्द व्याख्या : तथा श्यामपट कार्य :-

शब्द	**अर्थ**
बंदौं	**वंदना करता हूँ**
दरसाई	**दिखाई**
तिहि	**उसके**
गिरि	**पर्वत**

भाव व्याख्या तथा सौन्दर्यानुभूति :–

प्रथम अन्विति

चरण कमल, ... तिहि पाइ।

(अध्यापक द्वारा उपर्युक्त अंश का पठन)

पठन

1. सूरदास जी ने कृष्ण जी के चरणों की उपमा किससे की है?
2. अपने स्वामी को करूणामय कहने से कवि का क्या तात्पर्य है?
3. स्वामी के चरणों की वन्दना कवि बार–बार क्यों करना चाहता है?

सूरदास जी प्रभु की महानता का वर्णन करते हुए कहते है कि मैं हरि के कमल जैसे चरणों की बार–बार प्रार्थना करता हूं। जिस प्रभु की कृपा से संसार के समस्त कार्य पल भर में हो जाते है। लंगड़ा व्यक्ति अपने पैरों मे शक्ति पाकर चलने फिरने लायक ही नहीं वरन् ऊंचे –ऊंचे पर्वत पार करने लायक हो जाता है। दृष्टिहीन व्यक्ति को संसार की प्रत्येक वस्तु दिखाई देने लगती है। बहरा व्यक्ति प्रत्येक प्रकार की आवाज सुनने में सक्षम हो जाता है और भिखारी तथा कंगाल व्यक्ति राजा के समान सिर पर मुकुट धारण करके चलने लगता है। सभी प्राणियों पर दया करने वाले, सबकी सहायता करने वाले ऐसे अपने जीवन स्वामी के चरणों की मैं बार–बार वन्दना करता हूं तथा अपना सब कुछ समर्पित करता हूं।

प्रस्तुत पद मे ''चरण–कमल'' में रूपक अलंकार है।

द्वितीय आदर्श पठन-रस तथा भव का ध्यान रखते हुए अध्यापक द्वारा पूरे पद का पुनः आदर्श पठन किया जाएगा।

अर्थग्रहण तथा सौन्दर्यबोध परीक्षण :

1. **भक्त सूरदास ने कृष्ण जी को अपना स्वामी क्यों माना है?**
2. **प्रभु की वंदना सूरदास जी क्यों करना चाहते हैं इसका वर्णन लगभग आठ वाक्यों में कीजिए द्वितीय अन्विर्ति : आजु हौं .....ढैहौ वीरा।**

आदर्श पठन :- उचित भाव के अनुसार अध्यापक द्वारा किया जाएगा। अनुकरण पाठनः- कक्षा के कत्तिपय छात्रों द्वारा अध्यापक द्वारा पढ़े गये अंश का पठन किया जाएगा।

शब्द व्याख्या तथा श्यामपट कार्य :–

शब्द	अर्थ
हौं	मैं
टरिहौं	टलूंगा
के	या
लरिहौं	लडूंगा
छवै	होकर
निस्तरिहौं	तर जाऊंगा
उधरि	खुलकर
विरद	यश
कत	क्यों
परतीति	प्रतीत
नसावत	नष्ट करते हो

प्रश्न :

1. प्रस्तुत पद में कविवर सूरदास भगवान से क्या मांग रहे हैं?
2. सूरदास जी भगवान से झगड़ा क्यों करना चाहते हैं?
3. अपना गुस्सा कवि किस प्रकार प्रकट करने का कह रहे हैं?
4. अपने को सात पीढ़ियों के पापी कहने से कवि का क्या तात्पर्य है?

प्रस्तुत पद में भक्त कवि ने भगवान से अपना उद्धार करने का निर्णय मांगा है।।

भक्त सूरदास भगवान को सम्बोधित करते हुए कहते है कि आज तो भगवान से एक टूक फैसला करके ही रहेंगे। या तो इसमें भक्त की जीत होगी अथवा भगवान की। भक्त सूरदास आज अपने भरोसे पर प्रभु से निर्णय की लड़ाई लड़ेंगे।

सूरदास जी कहते हैं कि वह तो सात जन्मों के पुराने पापी है। और इसी प्रकार पापी रहते हुए ही इस संसार से मुक्त हो जाएंगे क्योंकि उन्हें अपनी भक्ति पर भरोसा है। यदि प्रभु उनका उद्धार नहीं करेंगे तो वह खुलकर नोचेंगे अर्थात् मनमानी करेंगे, जिससे प्रभु की ही महिमा घटेगी। हे प्रभु आप मेरा उद्धार न करके अपना विश्वास क्यों नष्ट कर रहे हैं मैंने तो हरि–नाम रूपी हीरा प्राप्त कर लिया है। अब तो मैं प्रभु के चरणों से तभी हटूंगा जब वे स्वयं अपने हाथ से मुझे अपना बनाएंगे।

द्वितीय आदर्श पठन : अध्यापक द्वारा पद के भाव आदि अनुसार दिया जाएगा।

अर्थग्रहण तथा सौन्दर्यबोध परीक्षण

प्रश्नावली

1. ''अब हौं उधरि नच्यों चाहते हैं'' से कवि का क्या तात्पर्य है?
2. हरि नाम रूपी हीरा पाने से कवि का क्या अर्थ है?
3. यदि भगवान ने कवि का उद्धार नहीं किया तो भगवान की महिमा किस प्रकार घटेगी?
4. भक्त ने भगवान की महिमा का गान किस प्रकार किया है?

गृहकार्य :- और अधिक आनन्द प्राप्त करने के लिए सूर के अन्य पदों का भी अध्ययन कीजिये।

1. विचार विश्लेषण अंग को परिभाषित कीजिए।

.....

.....

2. वाचन की व्याख्या करें।

.....

.....

1.5.15 सारांश

क

1.5.16 स्वयं जांच अभ्यास

खाली स्थान भरो

1. गद्य शब्द संस्कृत की.....धातु से व्युत्पन्न हुआ है।
2. गद्य शिक्षण के तीन भाग – वचन, व्याख्या और.....हैं।
3. पद्य एक.....रचना है।
4. .....प्रणाली में अध्यापक पढ़ाई जाने वाली कविता की तुलना अन्य कविताओं से करते हुए करता है।

उत्तर : 1. गद् 2. विचार विश्लेषण 3. छन्दोबद्ध 4. तुलनात्मक

1.5.17 अभ्यासात्मक प्रश्न

(1) गद्य से क्या अभिप्राय है?

(2) गद्य शिक्षण के उद्देश्य लिखे।

(3) गद्य शिक्षण के प्रमुख अंग बताएं।

(4) गद्य शिक्षण के सोपान पर प्रकाश डाले।

(5) गद्य शिक्षण के विधियों पर एक लेख लिखें।

(6) कविता से आपका क्या अभिप्राय है? कविता शिक्षण के उद्देश्यों का वर्णन करिये।

(7) कविता शिक्षण की कौन–कौन सी प्रणालियां हैं? माध्यमिक स्तर पर कौन सी प्रणाली उपयोगी होगी तथा क्यों?

(8) कविता शिक्षण गद्यशिक्षण से किस प्रकार भिन्न है? पूर्ण रूप से स्पष्ट करिये।

(9) वर्तमान समय में छात्र कविता में रुचि क्यों नही लेते? काव्य में उसकी रुचि उत्पन्न करने के लिए कौन से साधन अपनाए जाने चाहिए?

(10) निम्नलिखित लघु प्रश्न के संक्षिप्त उत्तर लिखिये :–

- (अ) कविता शिक्षण में आदर्श पठन का महत्त्व।
- (ब) हिन्दी शिक्षण में काव्य शिक्षण का महत्त्व।
- (स) कविता शिक्षण में कठिन शब्दों की व्याख्या किस प्रकार की जानी चाहिए?
- (द) कविता पठन करते समय सावधानियां।

(11) कविता को पढ़ाने का क्या कर्म होना चाहिए? अपना विचार प्रस्तुत कीजिये।

(12) कक्षा सात तथ आठ में किसी भी कविता को पढ़ाने के लिए पाठ योजना अलग–अलग तैयार कीजिये।

(13) कविता की शिक्षा के कौन–कौन से अंग हैं? सस्वर वाचन और भाव विश्लेषण करने में आप किस प्रकार सहायता देंगे?

(14) कविता पढ़ाने की गीत और अभिनय प्रणाली की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।

(15) कविता की समीक्षा से क्या तात्पर्य है? उच्च कक्षाओं में समीक्षा सिखाने की विधि समझाइए।

1.5.18 सहायक पुस्तकें

(1) हिन्दी शिक्षण पद्धति, डॉ. वैद्यनाथ प्रसाद वर्मा (1973)

(2) वेसिक हिन्दी वोकेबुलरी, डॉ. जय नारायण कौशिक (1981)

(3) टीचर एज्यूकेशन केरिकुलम (ए फ्रेम वर्क) (एन.सी.ई.आर.टी.) 1978
(4) केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा – भाषा शिक्षण तथा भाषा विज्ञान।
(5) के. क्षत्रिया – मातृ–भाषा शिक्षण, विनोद पुस्तक–मन्दिर आगरा।
(6) पण्डित सीताराम चतुर्वेदी – भाषा की शिक्षा।
(7) देवेन्द्र कुमार कौशिक – हिन्दी भाषा का शिक्षण, शारदा ब्रदर्ज, लुधियाना।
(8) राम शरण पाण्डेय – हिन्दी शिक्षण, विनोद पुस्तक भण्डार, आगरा।
(9) रघुनाथ सफाया – हिन्दी शिक्षण विधि, पंजाब किताबघर, जालंधर।
(10) रमन बिहारी लाल – हिन्दी शिक्षण, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ।

कहानी शिक्षण और रचना शिक्षण : अर्थ, उद्देश्य एवं विधियाँ

1.6.1 उद्देश्य
1.6.2 भूमिका
1.6.3 कहानी शिक्षण : परिभाषाएं
1.6.3.1 कहानी शिक्षण : उद्देश्य
1.6.3.2 कहानी शिक्षण विधियां
1.6.4 नाटक शिक्षण
1.6.4.1 नाटक शिक्षण : परिभाषाएं
1.6.4.2 नाटक शिक्षण : उद्देश्य
1.6.4.3 नाटक शिक्षण : विधियां
1.6.5 रचना शिक्षण
1.6.5.1 रचना शिक्षण : परिभाषाएं
1.6.5.2 रचना शिक्षण : उद्देश्य
1.6.5.3 रचना शिक्षण : विधियां
1.6.6 सारांश
1.6.7 स्वयं जांच अभ्यास
1.6.8 अभ्यासात्मक प्रश्न
1.6.9 सहायक पुस्तकें

1.6.1 उद्देश्य

क

1.6.2 भूमिका

मानव स्वभाव से कहानी में रूचि प्रदर्शित करता है। जब से मानव ने इस धरा पर कदम रखा है तब से उसे कहानी कहने–सुनने में रूचि लेते देखा गया है। प्राचीन भारतीय कला एवं साहित्य इस तथ्य का अनेक रूपों से प्रमाणित करते हैं कि कहानी–कला का विकास इस देश में बहुत पहले हो चुका था। भारतीय उत्सवप्रिय है। उनके प्रत्येक पर्व, रीति–रिवाज, परम्परा तथा जीवनास्था के साथ कोई न कोई कहानी सम्बद्ध है। यह मनोरंजन एवं जनकल्याण का सहज साधन है।

कहानी एक ऐसी लघु रचना है जिसमें मानव के जीवन एवं चरित्र को कलात्मक एवं मर्मस्पर्शी ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। बालकों के लिए कहानी का विशेष महत्व है। प्राथमिक स्तर पर कहानी–शिक्षण विधि से बालकों में सीखने के प्रति रूचि सहज की जागृत की जा सकती है।

गद्य साहित्य की विभिन्न विधाओं में कहानी का महत्वपूर्ण स्थान है। कहानी ज्ञान का एक ऐसा साधन है जो व्यक्ति की उत्सुकता को शान्त करके जिज्ञासा को जागृत करता है एवं आनन्द प्रदान करता है। ''कहानी उतनी ही पुरानी है जितना मानव पुराना है।'' पंचतन्त्र एवं हितोपदेश की कहानियाँ, रामायण, महाभारत की कहानियाँ इत्यादि। इनमें

मानव जीवन के दार्शनिक विचारों की झाँकी प्रस्तुत की गई है।

जिस प्रकार यह ब्रह्ममांड विधाता की एक अनुपम रचना है, उसी प्रकार भाषा मनुष्य की एक अनुपम रचना है। वह समाज में रहने के लिए विभिन्न प्रकार की चेष्टाएँ करता है। कृषि, व्यापार, परिवार, शिक्षा, धर्म, संस्कृति एवं सभ्यता आदि के माध्यम से मनुष्य–मनुष्य से जुड़ा हुआ है। वह भाषा का लिखित एवं मौखिक रूप से प्रयोग करता है। कोई भी मनुष्य जितना भाषा के प्रयोग में कुशल है, उतना ही वह आत्मभिव्यक्ति में सक्षम होता है। जिस प्रकार एक मूर्तिकार अपनी छेनी–हथौड़ी के द्वारा पत्थरों को भी विभिन्न आकारों में काटकर विभिन्न कलाकृतियों की रचना करता है, जिस प्रकार वास्तुकार विभिन्न साधनों का उपयोग करके मनोरम भवनों का निर्माण करता है तथा जिस प्रकार चित्रकार रंगों एवं रेखाओं के द्वारा आकर्षक चित्र प्रस्तुत करता है, उसी प्रकार एक लेखक भाषा के कुशल प्रयोग से अपने भाव एवं विचार प्रकट करता है।

1.6.3 कहानी शिक्षण : परिभाषाएं

संस्कृत साहित्य में कहानी के लिए अनेक शब्द जैसे–आख्यायिका, कथा, गल्प, कथानक और वृतांत आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है। कहानी की भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों ने कई परिभाषाएं दी हैः–

एडगर ऐलन पो के अनुसार, ''कहानी एक आख्यान है जो इतना छोटा है कि एक ही बैठक में पढ़ा जा सके। यह पाठक पर कोई प्रभाव डालने के लिए लिखी जाती है। यह प्रभाव अपने आप में पूर्ण होता है और कहानी में कुछ ऐसा सम्मिलित नहीं किया जाता जो उस प्रभाव में बाधक हो।''

एच.जी.वेल्स – ''कहानी एक छोटी रचना है।''

टी.एस. मेमन के अनुसार, ''कहानी में द्वन्द्व अथवा संघर्ष की प्रबलता होती है।''

प्लेटो के अनुसार, ''शरीर के लिए भोजन तथा व्यायाम और मस्तिष्क के लिए कहानी एवं संगीत आवश्यक है।''

1.6.3.1 कहानी-शिक्षण : उद्देश्य

1. विद्यार्थियों को कहानी की विभिन्न शैलियों का ज्ञान कराना।
2. विद्यार्थियों को नए शब्दों, मुहावरों तथा नई सूक्तियों एवं लोकोक्तियों का ज्ञान कराना।
3. उन्हें विभिन्न कहानियों–पौराणिक, इतिहासिक, सामाजिक, नैतिक आदि के माध्यम से मनुष्य की विभिन्न मनोवृत्तियों, जीवन की विभिन्न परिस्थितियों तथा विभिन्न समस्याओं से अवगत कराना।
4. विद्यार्थियों के श्रवण–कौशल को विकसित करना।
5. उन्हें उचित गति, प्रवाह तथा स्वर के आरोह–अवरोह के साथ भावानुकूल अभिव्यक्ति दिखा कर उन के मौखिक–कौशल को विकसित करना।
6. उन्हें कहानी के सस्वर वाचन तथा मौन वाचन की विधि बता कर उन के वाचन–कौशल को विकसित करना।
7. विद्यार्थियों का लेखन–कौशल विकसित करना।
8. विद्यार्थियों में बोध, कल्पना, विश्लेषण तथा विवेचन की शक्तियों को विकसित करना।
9. मानव स्वभाव तथा मानव चरित्र का अध्ययन करने की योग्यता विकसित करना।
10. विद्यार्थियों का मनोरंजन करना और साहित्य अध्ययन के प्रति उनकी रूचि विकसित करना।

1.6.3.2 कहानी-शिक्षण : विधियाँ

1. **अर्थ-कथन प्रणाली :** इस प्रणाली में अध्यापक कहानी का स्वयं पाठ करता है और साथ साथ कठिन शब्दों का अर्थ भी बताता जाता है और आवश्यकतानुसार व्याख्या–स्थलों का भाव भी स्पष्ट कर देता है। इस में केवल अध्यापक, सक्रिय रहता है और विद्यार्थी निष्क्रिय श्रोता बन कर रह जाते हैं।
2. **व्याख्या प्रणाली :** इस में अध्यापक केवल कठिन शब्दों के अर्थ ही नहीं बताता बल्कि उन की व्युत्पत्ति, उनके पर्यायवाची एवं विलोम शब्द भी बताता है। उनका वाक्यों में प्रयोग करना भी सिखाता है। वह भावों तथा विचारों की खोल कर व्याख्या करता है और यदि विद्यार्थी कोई प्रश्न करते हैं तो उन का उत्तर भी देता है। इस में

भी अर्थ कथन प्रणाली के समान विद्यार्थी बहुधा निष्क्रिय ही बने रहते हैं।

3. **विश्लेषण प्रणाली :** इस में अध्यापक कहानी के कई स्थलों तथा उन में निहित भावों तथा विचारों की विस्तृत व्याख्या करता है। इस के लिए वह विद्यार्थियों से विभिन्न प्रकार के प्रश्न भी पूछता रहता है जिस के परिणाम स्वरूप विद्यार्थी शिक्षण के दौरान सक्रिय बने रहते है।

4. **समीक्षा प्रणाली :** इस प्रणाली द्वारा कहानी के गुण, दोषों को परखा जाता है। अध्यापक कहानी के विभिन्न तत्वों–कथावस्तु, पात्र एवं चरित्र–चित्रण, कथोपकथन अथवा संवाद, देशकाल, भाषा–शैली, उद्देश्य के आधार पर पाठ्य कहानी की आलोचनात्मक समीक्षा करता है।

1.6.4 नाटक शिक्षण

प्राचीन भारतीय साहित्यकारों ने साहित्य को दो श्रेणियों में रखा है–श्रव्यकाव्य व दृश्यकाव्य। सभी प्रकार की पद व गद रचनाएं श्रव्य काव्य की श्रेणी में आती है। इन्हें पाठ्य काव्य भी कहा गया है। इन रचनाओं को सुनकर व पढ़कर आनन्द लिया जाता है। नाटक दृश्य काव्य की श्रेणी में आता है। रंगमंच पर अभिनेताओं का हाव–भाव वेष और कथोपकथन द्वारा घटनाओं का प्रदर्शन नाटक है। यह घटनाएं पौराणिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, काल्पनिक आदि हो सकती हैं। नाटक के आदि आचार्य, भरतमुनि माने जाते हैं। नाटक का अभिनय होना आवश्यक है और अभिनेयता के लिए पन्नानुसार संवाद या कथोपकथन। इस अभिनेयता एवं कथोपकथन की विशेषता के कारण नाटक अन्य कथा काव्यों, उपन्यास, कहानी आदि से भिन्न है। सभी प्रकार के जन समुदाय के मनोरंजन का जितना प्रिय साधन नाटक है उतना और कोई कला नहीं।

1.6.4.1 नाटक शिक्षण : परिभाषाएं

नाटक शब्द की व्युत्पति 'नट्' धातु से हुई है जिसका अर्थ है – 'नाचना', 'अभिनय करना' अथवा अनुकरण करना। भारत में नाट्यकला का सम्बन्ध प्राचीन काल से जोड़ा जाता है। इसे 'पंचम वेद' के नाम से विभूषित किया जाता है। देवताओं की प्रार्थना पर ब्रह्म जी ने इसकी रचना मनोरंजन के उद्देश्य से की थी। इस सम्बन्ध में भरत मुनि ने अपने 'नाट्यशास्त्र' में नाटक की उत्पति को लेकर निम्नलिखित विचार प्रकट किए हैं–

ऋग्वेद से पाठ्य, सामवेद से गान, यजुर्वेद से अभिनय और अथर्ववेद से रस लेकर ब्रह्म ने पाँचवें वेद–नाट्य वेद की रचना की।

भरतमुनि के अनुसार, ''भरतमुनि ने नाटक को पंचम वेद कहते हुए नाटक को तीनों लोकों के भावों का अनुकरण कहा है।''

धनंजय के अनुसार, ''शरीर और मन की विभिन्न वृतियों और दशाओं की अनुकृति नाटक है।''

अभिनव भरत के अनुसार, ''नाटक वह प्रयोग है जिसमें किसी प्रसिद्ध ऐतिहासिक अथवा कल्पित कथा के आधार पर नाट्यकार द्वारा रूपरचित के अनुसार नाट्य प्रयोक्त द्वारा प्रशिक्षित नट रंगमंच पर अभिनय तथा संगीत की सहायता से दर्शकों के हृदयों में रस उत्पन्न करके उनका मनोविनोद करते हैं और परोक्ष रूप में उन्हें उपदेश देते हैं और मन को शान्ति प्रदान करते हैं।''

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि नाटक एक संगीत प्रधान–अभिनय युक्त कला है जिसमें पौराणिक, ऐतिहासिक और काल्पनिक कथा होती है जिसका उद्देश्य जनता को मनोरंजनात्मक ढंग से सभ्यता संस्कृति की जानकारी प्रदान करना है।

1.6.4.2 नाटक शिक्षण : उद्देश्य

नाटक शिक्षण के उद्देश्यों को निम्नलिखित रूप से स्पष्ट किया जा सकता है–

1. नाटक द्वारा छात्रों को समाज की विभिन्न परिस्थितियों का ज्ञान कराना।
2. उनमें परिस्थितियों के अनुरूप आचरण करने की कुशलता पैदा करना।
3. विद्यार्थियों को भाषा की मौखिक अभिव्यक्ति में निपुण करना।

4. छात्रों का उच्चारण संशोधन करना।
5. उनमें निसंकोच बोलचाल की योग्यता का विकास करना।
6. विद्यार्थियों में भावानुसार उचित प्रवाह के साथ वाचन की योग्यता विकसित करना।
7. उन्हें अवसरानुसार भाषा का प्रयोग करना सिखाना।
8. विद्यार्थियों के शब्द भण्डार में वृद्धि करना तथा उन्हें मुहावरे, लोकोक्तियाँ, सूक्तियाँ आदि का ज्ञान प्रदान करना।
9. नाटक शिक्षा द्वारा छात्रों में साहित्य के प्रति रुचि उत्पन्न करना।
10. छात्रों को अभिनय कला की शिक्षा देकर उनमें अभिनय की प्रतिभा का विकास करना।
11. विद्यार्थियों को नाटक की विभिन्न शैलियों का ज्ञान प्रदान करना।
12. भाषा ज्ञान के साथ–साथ छात्रों को विभिन्न ललित कलाओं का ज्ञान देना जैसे संगीत, काव्य, चित्रकला आदि।
13. छात्रों को जीवन की वास्तविकता से परिचय कराना तथा विभिन्न परिस्थितियों में मानव मनोवेगों द्वारा हुए व्यावहारिक परिवर्तनों का ज्ञान कराना।
14. नाटक शिक्षा द्वारा विद्यार्थियों में नैतिक मूल्य विकसित करना।
15. विद्यार्थियों में रंगमंच पर प्रदर्शन करने की योग्यता विकसित करना।
16. विद्यार्थियों में आत्मविश्वास पैदा करना।

1.6.4.3 नाटक-शिक्षण : विधियां

नाटक शिक्षण की विभिन्न विधियां प्रचलित हैं, उनमें से कुछ का उल्लेख निम्नलिखित है :–

1. पठन विधि : पठन विधि से तात्पर्य है, अध्यापक स्वयं नाटक का आदर्श वाचन छात्रों के सम्मुख प्रस्तुत करता है। इसमें अध्यापक का उद्देश्य विद्यार्थियों को नाटक को कथावस्तु का परिचय देना है। वह नाटक का आदर्श वाचन करता है और तत्पश्चात विद्यार्थियों से अनुकरण वाचन कराया जाता है। इसमें पूरा प्रदर्शन अध्यापक बोल कर करता है तथा विद्यार्थी निष्क्रिय हो कर सुनते रहते हैं जो इस विधि की मुख्य सीमा है।

2. व्याख्या विधि : इस विधि द्वारा नाटक की कथावस्तु का स्पष्टीकरण उसमें भाग लेने वाले पात्रों का चरित्र–चित्रण एवं उनके भावों व विचारों की विवेचना की जाती है। इस विधि द्वारा छात्रों को नाटकों के विभिन्न पहलुओं का विस्तृत ज्ञान होता है। उच्च स्तरीय कक्षाओं के लिए यह विधि उपयुक्त है।

3. प्रश्नोत्तर विधि : अध्यापक प्रश्नोत्तर विधि के द्वारा नाटक के विभिन्न तत्वों की व्याख्या करता है। इसमें नाटक का स्पष्टीकरण प्रश्न पूछ कर किया जाता है जिससे विद्यार्थी सक्रिय रहते हैं। यह मनोवैज्ञानिक विधि है। उच्च कक्षाओं में यह विधि उपयोगी है।

4. विश्लेषण विधि : नाटक के विभिन्न तत्वों का विश्लेषण कर इस विधि के द्वारा नाटक के गुण व दोषों की विवेचना की जाती है। इसके लिए नाटक की विस्तृत जानकारी आवश्यक है। यह विधि व्याख्या तथा प्रश्नोतर विधि का सम्मिलित रूप है।

5. अभिनय विधि : इस मनोवैज्ञानिक विधि में अध्यापक विभिन्न विद्यार्थियों को नाटक के पात्रों की भूमिका बांट देता है तथा वह अभिनय करते हुए हाव–भाव के साथ संवाद प्रस्तुत करते हैं। आवश्यकतानुसार अध्यापक स्वयं उस भूमिका को करके दिखाता है। यह विधि कक्षा के सभी स्तरों के लिए उपयोगी है।

6. प्रयोग व रंगमंच विधि : प्रयोग विधि अभिनय विधि का ही विस्तृत रूप है। इस विधि में नाटक रंगमंच पर प्रस्तुत किया जाता है। विद्यार्थी पात्रों के अनुकूल वेशभूषा धारण करके नाटक को रंगमंच पर प्रस्तुत करते हैं। इस विधि द्वारा उनको रंगमंच की साज–सज्जा व प्रयोग की जानकारी भी प्रदान की जाती है। यह प्रणाली समय, व्यय व धन साध्य है।

1.6.5 रचना शिक्षण

रचना के व्यापक अर्थ है। रचना का शाब्दिक अर्थ है–'बनाना' या 'बनी हुई वस्तु'। 'चित्र' चित्रकार की रचना है। 'मूर्ति' मूर्तिकार की रचना है। भाषा–शिक्षण के संदर्भ में इसका अर्थ है–बोलकर या लिखकर अपने विचारों तथा भावों को

स्पष्ट करना। प्रत्येक व्यक्ति के अपने कुछ विचार होते हैं, भावनाएं होती हैं जिन्हें वह मौखिक या लिखित रूप से अभिव्यक्त करना चाहता है। मनुष्य की इस चाह में 'रचना' का अर्थ निहित है।

रचना को अंग्रेजी में 'Composition' कहते हैं। प्रायः 'Composition' को निबंध का पर्यायवाची समझा जाता है। परन्तु 'रचना' निबंध का पर्यायवाची नहीं है। रचना के व्यापक अर्थ में निबंध भी सम्मिलित है अर्थात निबंध रचना के अनेक प्रकारों में एक है। भाषा के संदर्भ में निबंध तथा 'Composition' का व्यापक अर्थ है–शब्दों को वाक्यों में गठित करना और उन के द्वारा विचारों को स्पष्ट करना। रचना का एक अर्थ 'सजाना और संवारना' भी है।

संक्षेप में रचना की परिभाषा इस प्रकार की जा सकती है–रचना वह सार्थक तथा कलात्मक अभिव्यक्ति है, जिस के द्वारा हम अपने भावों को सुन्दर, सुव्यवस्थित तथा प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करते हैं।

1.6.5.1 रचना शिक्षण : परिभाषाएं

चैम्पियन के अनुसार, ''रचना का परम लक्ष्य शिष्य को इतना योग्य बनाना है कि वह अपनी बातों को स्वतंत्रतापूर्वक, अपने शब्दों में, अपने ढंग से तथा स्वतन्त्र शैली में व्यक्त कर सके।''

रायबर्न के अनुसार, ''लिखित रचना–शिक्षण का मूल उद्देश्य विद्यार्थियों को इस योग्य बनाना है कि वह अपने विचारों को अपने ढंग से व्यवस्थित कर सके तथा स्वतंत्रतापूर्वक प्रभावशाली ढंग से व्यक्त कर सके।''

1.6.5.2 रचना शिक्षण : उद्देश्य

1. विद्यार्थी संभाषण, वाद–विवाद कविता–पाठ, पत्र व निबन्ध लेखन आदि विविध कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग ले सकें।
2. उनमें मौखिक रचना में उचित गति, यति, हाव–भाव, स्वराघात आदि के द्वारा शुद्ध उच्चारण की योग्यता विकसित करना।
3. उनमें समृद्ध व व्याकरण सम्मत भाषा द्वारा अपने भावों व विचारों को प्रकट करने की योग्यता पैदा करना।
4. छात्रों में अवसरानुकूल व भावानुरूप अभिव्यक्ति की कुशलता पैदा करना।
5. रचना शिक्षण विद्यार्थियों में सूक्तियों लोकोक्तियों एवं मुहावरेदार भाषा के प्रयोग की योग्यता विकसित करना।
6. विद्यार्थियों में रचनात्मक प्रवृत्तियों को जागृत कर उन्हें साहित्य रचना की ओर आकृष्ट करना।
7. रचना शिक्षण द्वारा विद्यार्थियों में मौलिक चिन्तन का विकास करना।
8. उनकी कल्पना शक्ति विकसित कर रचना को समृत करना।
9. रचना शिक्षण के माध्यम से बालक को साहित्य की विभिन्न विधाओं–कहानी, कविता, नाटक, उपन्यास, पत्र, निबन्ध आदि में भली–भांति परिचित कराना तथा उनका शब्द भण्डार विकसित करना।
10. रचना शिक्षण द्वारा रचना के दोनों रूपों मौखिक व लिखित रचना का समुचित ज्ञान प्रदान करना।?
11. विद्यार्थियों में रचना की योग्यता विकसित कर उनमें सामाजिक कुशलता लाना।
12. छात्रों में रचना–शिक्षण के माध्यम से यह योग्यता विकसित करना कि मौखिक रचना व लिखित रचना करने के योग्य हो सकें।

1.6.5.3 रचना शिक्षण : विधियां

1. पाठ्य पुस्तक प्रणाली : मौखिक व लिखित रचना–शिक्षण में पाठ्य–पुस्तक का विशेष महत्व है। पाठ्य पुस्तक के माध्यम से कठिन शब्दों के अर्थ, उनका वाक्यों में प्रयोग, विषय की व्याख्या, सारांश कथन आदि रचना शिक्षण के विभिन्न पहलू हैं जिन पर मौखिक व लिखित रचना कार्य का प्रशिक्षण दिया जा सकता है।

2. प्रश्नोतरी प्रणाली : रचना के दोनों रूपों के लिए यह विधि प्रयुक्त की जा सकती है। विषय का चयन करके विद्यार्थियों से उससे सम्बन्धित प्रश्न पूछे जा सकते हैं। विद्यार्थी अपने अनुभव व ज्ञान के अनुरूप उसका उत्तर देंगे। प्रश्न पूर्वज्ञान परीक्षण, विषय के प्रस्तुतीकरण व पुनरावृति हेतु पूछे जा सकते हैं। प्रश्नोतर प्रणाली अपनाते हुए शिक्षक को विषय

की क्रमबद्धता की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। इसके लिए आवश्यक है, प्रश्न सरल व स्पष्ट हों तथा एक समय में एक ही प्रश्न पूछा जाए। विद्यार्थियों को सही व पूर्ण रूप से उत्तर देने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।

3. वर्णन प्रणाली : वर्णन प्रणाली द्वारा रचना शिक्षण व्यावहारिक रूप से कराया जा सकता है। वर्णन कई प्रकार से हो सकता है। जैसे अध्यापक द्वारा विषय का आदर्श प्रस्तुत कर छात्रों को उसका वर्णन करने को कहा जा सकता है, घटनाओं, उदाहरणों आदि का वर्णन कराया जा सकता है। रचना के विषय सम्बन्धी चित्र, मॉडल, दिखाकर उनका वर्णन करने को कहा जा सकता है। इससे विद्यार्थियों में मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति की योग्यता आती है।

4. रूपरेखा प्रणाली : कहानी, निबन्ध, अनुच्छेद व किसी भी विषय की रूपरेखा देकर विद्यार्थियों से उनका रचना कवि कराया जा सकता है। वे अपनी सूझ–बूझ के अनुसार अपनी भाषा में उसको विकसित करें। लिखित रचना कार्य के लिए यह विधि अधिक उपयुक्त है।

5. समवाय प्रणाली : साहित्य की विभिन्न विधाओं पद, कहानी निबन्ध, नाटक, आत्मकथा, व्याकरण आदि का शिक्षण प्रदान करते हुए छात्रों को ऐसे प्रश्नों का उत्तर देने को प्रेरित किया जाए जिनका उत्तर वह मौखिक व लिखित रूप से अपने शब्दों में दे सकें। इसके लिए आवश्यक है कि इन विषयों का आपस में तथा विद्यार्थी के दैनिक जीवन से सम्बन्ध जोड़ते हुए पढ़ाया जाए।

6. भाषा यन्त्र प्रणाली : विद्यार्थियों की रचना में रुचि उत्पन्न करने के लिए भाषा यन्त्र प्रणाली का भी प्रयोग किया जा सकता है। भाषा प्रयोगशाला में यह कार्य सहज हो जाता है। विद्यार्थियों को कक्षा में टेपरिर्काडर द्वारा कोई कहानी, नाटक, उपन्यास आदि की कैसेट सुनाई जाए। उससे सम्बन्धित चित्र भी दर्शाए जा सकते हैं। कैसेट सुनने व चित्र देखने के बाद विद्यार्थियों से छोटे–छोटे रचनात्मक प्रश्न पूछे जाएं, जिनका उत्तर मौखिक व लिखित दोनों रूपों से दिया जा सकता है।

7. अनुकरण प्रणाली : इस प्रणाली के अन्तर्गत विद्यार्थियों के समक्ष रचना का विषय तथा भाषा को दृष्टि से आदर्श रूप रखा जाता है। तत्पश्चात् उन्हें इसी प्रकार की कोई अन्य रचना करने को प्रेरित किया जाता है। प्रारम्भिक कक्षाओं में काव्य रचना की प्रवृत्ति जागृत करने के लिए विद्यार्थियों को छोटी–छोटी तुकबन्दियाँ कराई जा सकती है, 'मछली जल की रानी है', 'जीवन उसका पानी है', 'चिड़िया चीं चीं करती है', 'दाना चुग–चुग खाती है'।

8. शब्द प्रधान विधि : अध्यापक रचना से सम्बन्धित शब्द, मुहावरे, लोकोक्तियों आदि का स्पष्टीकरण करे। विद्यार्थियों को ऐसा अनुच्छेद लिखने के लिए प्रेरित किया जाए जिसमें इन शब्दों मुहावरों आदि का प्रयोग हो। इससे भी विद्यार्थियों में रचना करने की योग्यता उत्पन्न होगी।

9. परामर्श प्रणाली : इस विधि द्वारा अध्यापक पाठ्य–सामग्री के प्रति अपने विचार प्रकट करे। उनसे मिलती– जुलती रचनाओं का उल्लेख करते हुए उन्हें पढ़ने का परामर्श दे। जैसे 'नारी' के सम्बन्ध में कविता व निबन्ध करवाते हुए अन्य लेखकों के नारी के प्रति विचारों का उल्लेख करे तथा छात्रों को उन्हें पढ़कर अपने विचार अभिव्यक्त करने के लिए प्रेरित करे।

10. वाद-विवाद प्रणाली : अध्यापक किसी भी विषय के बारे में जानकारी प्रदान कर विद्यार्थियों को उसके पक्ष तथा विपक्ष में अपने विचार व्यक्त करने को कहे, जैसे ट्यूशन विद्यार्थियों के लिए उपयोगी या अनुपयोगी है। इस पर मौखिक व लिखित, दोनों प्रकार का रचना कार्य हो सकता है।

11. उद्‌बोधन प्रणाली : उद्‌बोधन अर्थात् ज्ञान कराना, याद दिलाना व जगाना। विद्यार्थियों को विषय के सम्बन्ध में जितनी, जानकारी है उन्हें क्रमबद्ध रूप से व्यक्त करने के लिए प्रेरित करना। किन्हीं दृश्यों, घटनाओं, आत्मकथाओं व सामाजिक विषयों आदि के वर्णन में यह विधि अधिक उपयोगी है।

12. उपकरण प्रणाली : शैक्षणिक उपकरण विद्यार्थियों में रचनात्मक प्रवृत्ति उत्पन्न करने में सहायक हैं। श्यामपट, चार्ट, माडल व अन्य दृश्य–श्रव्य उपकरणों द्वारा साहित्य की विभिन्न विधाओं का रचना शिक्षण कराया जा सकता है। जैसे कहानी, नाटक आदि की कैसेट सुनकर विद्यार्थी उनका अनुकरण करते हैं जिससे उनकी मौखिक अभिव्यक्ति सुदृढ़ होती है।

1. कहानी शिक्षण और रचना शिक्षण में अन्तर स्पष्ट करो।

.....

.....

2. रचना शिक्षण के दो उद्देश्य बताइए।

.....

.....

1.6.6 सार :

कहानी शिक्षण के उचित विधि का चुनाव छात्रों के मानसिक स्त्र के अनुसार होना चाहिए। तभी निश्चित उद्देश्यों की प्राप्ति हो सकती है। सफल कहानी शिक्षण का अभिप्राय छात्र एवं अध्यापक दोनों के ही कहानी के साथ घुल मिल जाने से संभव है। कहानी कहते, सुनते और लिखते समय उन्हें कहानी के पात्रों की झलक अपने अन्दर दिखाई पड़नी चाहिए। कहानी के साथ तादात्मय होने के पश्चात् ही कहानी का आनंद प्राप्त होता है।

रचना शिक्षण का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों की लेखन क्षमता का विकास करना है। उपर्युक्त विधियों में से अध्यापक रचना शिक्षण में विद्यार्थी की रूचि एवं स्तर के अनुसार कोई भी विधि अपना सकता है। प्राइमरी स्तर पर मेला, पर्व, घर, परिवार आदि माध्यमिक स्तर पर जीवन से संबंधित सामाजिक, धार्मिक और उच्च माध्यमिक स्तर पर उच्चकोटि के वर्णनात्मक निबंध या लेख, पाठों का संक्षेपीकरण आदि भी रचना के विषय बनाए जा सकते हैं।

इन उपर्युक्त विधियों में से कोई भी विधि अपने में पूर्ण नहीं है। किसी एक विधि के माध्यम से शिक्षण न तो रुचिकर हो पाता है और न ही उपयोगी। नाटक गद विधा है लेकिन यह भावात्मक रचना है जिसमें अभिनेयता एवं संवादात्मक विशेषताओं का भी ध्यान रखा जाता है। अतः उपर्युक्त विधियों को मिश्रित रूप से ही अपनाना अधिक उपयोगी है।

1.6.7 स्वयं जांच अभ्यास

खाली स्थान भरो।

1. पद्य व गद्य रचनाएं.....की श्रेणी में आती है।
2. नाटक शब्द की व्युत्पत्ति.....धातु से हुई है।
3. रचना का शाब्दिक अर्थ.....है।
4. मौखिक व लिखित रचना में.....का विशेष महत्व है।

उत्तर : 1. श्रव्य काव्य 2. नट् 3. बनाना 4. पाठ्य–पुस्तक

1.6.8 अभ्यासात्मक प्रश्न

1. नाटक किसे कहते हैं? अर्थ स्पष्ट कीजिए।
2. नाटक शिक्षण की प्रचलित विधियों का उल्लेख कीजिए।
3. नाटक शिक्षण के उद्देश्यों का वर्णन कीजिए।
4. नाटक की परिभाषा देते हुए इसके उद्देश्य स्पष्ट करें।
5. हिन्दी शिक्षण में नाटक की शिक्षा के लिए कौन सी विधियां प्रयुक्त की जाती हैं?
6. रचना से आप क्या समझते हैं? इसके उद्देश्यों पर प्रकाश डालिए।
7. रचना की परिभाषा दीजिए। रचना शिक्षण की विधियों पर प्रकाश डालिए।
8. रचना शिक्षण के उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।
9. रचना शिक्षण की उपयुक्त विधियों का वर्णन कीजिए।

1.6.9 सहायक पुस्तकें :

1. हिन्दी शिक्षण : ज्योति खन्ना–धनपत राय एण्ड क. (प्रा.) लि., दिल्ली
2. हिन्दी भाषा शिक्षण : सुरेश नायक–टवेन्टी फस्ट सैंचुरी, पटियाला

3.	हिन्दी शिक्षण	:	रामशरण पाण्डेय–विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
4.	हिन्दी शिक्षण विधियाँ	:	शर्मा एण्ड भाटिया–टण्डन पब्लिकेशन, लुधियाना
5.	आधुनिक हिन्दी शिक्षण	:	डॉ. योगेश कुमार सिंह–ए.पी.एच. पब्लिशिंग कॉरपोरेशन, नई दिल्ली
6.	हिन्दी शिक्षण	:	सुरिन्द्र सिंह कादियान–विनोद पब्लिकेशनज, लुधियाना
7.	हिन्दी अध्यापन	:	डॉ. सर्वजीत कौर बराड़, कल्याणी पब्लिशर्ज, लुधियाना

Mandatory Student Feedback Form

https://forms.gle/KS5CLhvpwrpgjwN98

Note: Students, kindly click this google form link, and fill this feedback form once.